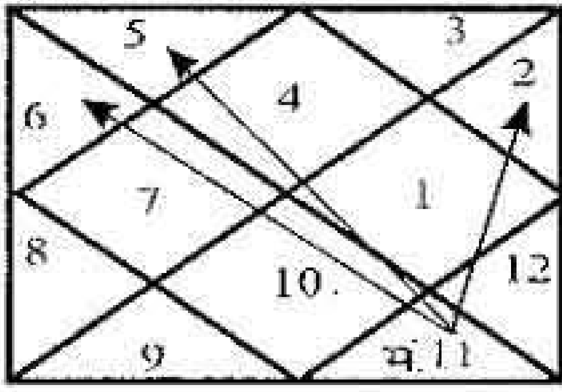
कर्क लग्न में मंगल अष्टम भाव में



कर्क लग्न में अष्टम भाव में स्थित कुम्भ का मंगल शत्रुक्षेत्री है। यह मंगल लाभ स्थान, धन स्थान एवं पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। यह मंगल अकस्मात मृत्युयोग, भगन्दर, मस्सा एवं मूत्राशय के रोग को देगा। जातक की वाणी अप्रिय होगी, दांत व मुख के रोग सम्भव। कुटुम्ब में तकरार होगी।

निशानी–बड़े भाई व भागीदारों से नहीं निभेगी। जातक स्त्रैण व डरपोक होगा। 'फांसी का फन्दा' 4, 8, 12 वर्ष आयु अपितु 15 वर्ष की आयु के बाद दूसरा भाई होगा।

मांगलिक कुण्डली–मंगल यहां अष्टम स्थान में होने से कुण्डली मांगलिक हो गई है। ऐसे जातक के जीवनसाथी की कुण्डली भी मांगलिक होनी चाहिए, तभी वैवाहिक जीवन सुखमय होगा।

विद्याभंग योग–पंचमेश आठवें स्थान में जाने से यह योग बना। ऐसे जातक की विद्या में बाधा जरूर आती है।

पुत्रहीन योग–पंचमेश अष्टम में हो तथा पंचम स्थान पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो यह योग बनता है। ऐसे जातक के पुत्र सन्तति नहीं होती।

दशमेश मंगल दशम भाव से ग्यारहवें एवं लग्न से आठवें होने के कारण नौकरी-धंधे-व्यापार में मिश्रित फल देगा।

दशाफल–मंगल की दशा अच्छी नहीं जाएगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द**–मंगल के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' कराएगा। जातक को प्रथम प्रयास में सफलता नहीं मिलेगी। जातक नकारात्मक विचारों से प्रभावित होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य '**धनहीन योग**' की सृष्टि करेगा। जातक को आर्थिक संघर्ष का सामना करना पड़ेगा। जातक की सरकारी नौकरी छूट जाएगी।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जहां '**पराक्रम भंग योग**' बनाता है। वहीं व्ययेश अष्टम में जाने से '**विपरीत राजयोग**' भी बनाता है। जातक धनी होगा। वाहन सुख तथा ऐश्वर्य से परिपूर्ण जीवन होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु जहां '**भाग्यहीन योग**' बनाता है, वहीं षष्टेश के अष्टम में जाने से '**विपरीत राजयोग**' भी बनेगा। जातक धनवान, ऐश्वर्यवान होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक की कुण्डली में '**लाभभंग योग**', '**सुखहीन योग**' भी बनाता है। ऐसा जातक अय्याश होता है। उसे वाहन दुर्घटना का भय रहता है।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि '**विवाहभंग योग**' बनाता है। परन्तु अष्टमेश के अष्टम

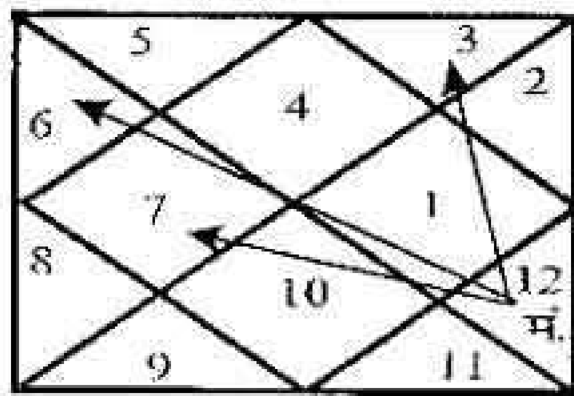
भाव में स्वगृही होने से विपरीत राजयोग बनेगा। जातक महाधनी होगा। वाहन सुख पूर्ण होगा।

7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु जीवनसाथी से वियोग कराता है। अचानक दुर्घटना का भय भी देता हैं।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु शल्य चिकित्सा कराता है। जातक के दाएं पांव में चोट भी पहुंचाता है।

अष्टम भाव के मंगल का उपचार–

1. मीठी रोटी या लड्डू कुत्तों को खिलाएं।
2. भौम ग्रह शान्ति का विधान करें।
3. स्त्री जातक मंगलागौरी का व्रत करें।
4. अविवाह, विलम्ब विवाह एवं जीवनसाथी से बिछोह की स्थिति में 'घट विवाह' का प्रयोग करें।

कर्क लग्न में मंगल नवम भाव में



कर्क लग्न में नवम भाव में स्थित मीन राशि का मंगल मित्रक्षेत्री होकर स्वगृहाभिलाषी होगा।

यह मंगल जातक को महत्वाकांक्षी बनाएगा। जातक का पिता प्रतिष्ठित व धार्मिक होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति वारिस में मिलेगी। जातक के भाई-बहनों से सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

उत्तम सन्तति योग–पंचमेश मंगल पंचम भाव में कोण (पांचवें स्थान) में होने से सन्तान उत्तम एवं जातक की मान-प्रतिष्ठा बढ़ाने वाली होगी।

दशमेश मंगल कोण में होने से धंधा-नौकरी व व्यापार में आवक उत्तम होगी।

मंगल की द्वादश भाव पर दृष्टि शयन सुख में बाधक है। जातक को मानसिक चिन्ता अधिक रहेगी। नींद कम आएगी।

मंगल की दृष्टि चौथे भाव पर होने से जातक की माता बीमार रहेगी, अथवा मां का सुख, मकान सुख उत्तम, वाहन सुख उत्तम होगा।

निशानी–'तख्तशाही का खजाना' जितने बाबे भाई, उतने ही भाई।

दशाफल–मंगल की दशा उत्तम फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

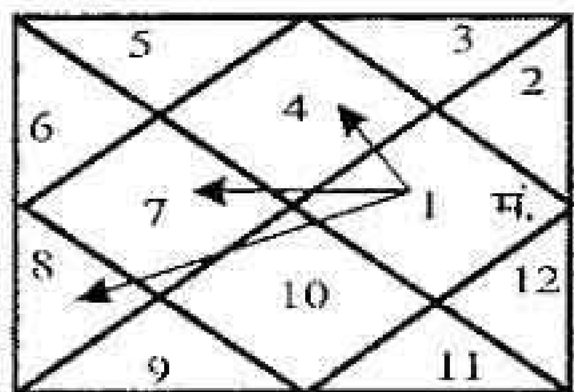
1. **मंगल+चन्द्र**–मंगल के साथ चन्द्रमा **'लक्ष्मीयोग'** बनाएगा। जातक को माता-पिता का सुख सम्पत्ति मिलेगी।

2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को धनवान बनाएगा। उसे सरकार से, भूमि से लाभ होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को महापराक्रमी बनाएगा पर रिश्तेदारों से जातक की कम पटेगी।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु स्वगृही जातक को महान भाग्यशाली बनाएगा। जातक को संतति से लाभ, विद्या से विशेष लाभ मिलेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र उच्च का जातक को सम्पूर्ण भौतिक ऐश्वर्य, उत्तम वाहन सुख एवं व्यापार में लाभ देगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि ससुराल से लाभ दिलाएगा पर जीवनसाथी से कम पटेगी।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु अचानक भाग्य में वृद्धि कराएगा। जातक युद्ध प्रिय होगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक को तेजस्वी बनाएगा। जातक अपने शत्रुओं को हराने में पूर्ण सक्षम होगा।

नवम भाव के मंगल का उपचार–

1. त्रिरत्न, त्रिगुणात्मक लॉकेट पहनें।
2. सर्वत्र सफलता के लिए नारंगी रंग का सुगन्धित रुमाल जेब में रखें।

कर्क लग्न में मंगल दशम भाव में



कर्क लग्न में मंगल परम राजयोग कारक होकर दशम भाव में स्वगृही होने से क्रमशः '**कुलदीपक योग**' एवं '**रुचक योग**' की सृष्टि करता है।

ऐसा जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रौशन करने वाला सबका चहेता व प्यारा होता है। **रुचक योग** के कारण जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होता है। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगने वाला, राज-दरबार में ऊंचा पद पाने वाला माता व अपनी सन्तान से सुखी, समाज का सेवक होता है।

निशानी–ऐसे जातक के जन्म से ही घर-परिवार में सब ओर से तरक्की होनी शुरू हो जाती है।

विशेष–दसवें घर का स्वामी होकर मंगल दशमस्थ होने से '**पंद्म सिंहासन योग**' भी बनाता है। ऐसा जातक मध्यम (निम्न) परिवार में जन्म लेकर भी कीचड़ में कमल की तरह खिलता हुआ धीरे-धीरे उच्च-पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। मंगल पंचम भाव से छठे होने से सन्तान से विचार नहीं मिलेंगे। तृतीय भाव में मंगल आठवें होने के कारण भाइयों में विचार कम मिलेंगे।

मंगल की दृष्टि प्रथम (लग्न) स्थान पर होने के कारण जातक उग्र स्वभाव का एवं दम्भी होगा। जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा। सिर व मुंह पर चोट के निशान होंगे। 'फलदीपिका' अ. 19/ पृ.374 के अनुसार ऐसा जातक धनी होगा। मंगल की दशा भाग्योदय कराएगी।

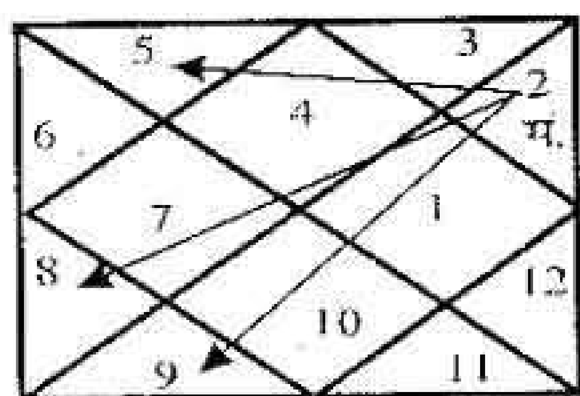
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–मंगल के साथ चन्द्रमा माता-पिता की सम्पत्ति का लाभ देगा। **'महालक्ष्मी योग'** की भी सृष्टि करेगा।
2. **मंगल+सूर्य**–यदि यहां सूर्य हो तो **'किम्बहुना योग'** बनेगा अर्थात् सूर्य उच्च का एवं स्वगृही हो तो इससे अधिक और क्या? ऐसा जातक राजा के समान उच्च पद को भोगता है।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को महान् पराक्रमी बनाएगा। जातक को व्यापार से लाभ होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु होने से जातक परम भाग्यशाली होगा तथा कुल का नाम रोशन करेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक को उत्तम वाहन का सुख, माता का सुख एवं पत्नी का भरपूर सुख देगा। व्यापार में भी भरपूर लाभ देगा।
6. **मंगल+शनि**–यदि यहां मंगल के साथ शनि हो तो **'नीचभंग राजयोग'** की सृष्टि होगी। शनि का नीचत्व समाप्त होकर वह शुभ फल दाई हो जाएगा। शनि पत्नी पक्ष एवं आयु पक्ष में सकारात्मक भूमिका निभाएगा। विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु जातक को क्रोधी एवं युद्ध प्रिय व्यक्ति बनाएगा पर जातक सदैव विजयी रहेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक को अदम्य साहसी बनाएगा। जातक शत्रुओं के लिए आतंक का पर्याय होगा।

दशम भाव के मंगल का उपचार–

1. त्रिरत्न, त्रिगुणात्मक लॉकेट पहनें।
2. नारंगी रंग का सुगन्धित रुमाल जेब में रखें।

कर्क लग्न में मंगल एकादश भाव में



कर्क लग्न में मंगल एकादश भाव में वृष राशि का शत्रुक्षेत्री होकर, द्वितीय स्थान, पंचम स्थान एवं षष्टम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। यह मंगल धंधे-व्यापार व नौकरी में उत्तम लाभ देगा। जातक को अच्छे मित्र मिलेंगे।

निशानी—जातक की प्रथम सन्तति पुत्र होना चाहिए। 'फकीरी भेष' धन-दौलत का घमण्ड नहीं।

मंगल पंचमेश होकर पंचम भाव से सातवें होकर अपने घर (पंचम भाव पर पूर्ण दृष्टि डालने से सन्तान सुख उत्तम देगा। सन्तान के प्रति जातक का व्यवहार कड़क (अनुशासन प्रिय) होगा।

दशमेश मंगल दशम भाव में दूसरे स्थान पर स्थित होने से जीवन में जातक की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। जातक का मातृपक्ष सबल होगा।

मंगल की दृष्टि द्वितीय भाव पर होने के कारण दाईं आंख की दृष्टि कमजोर होगी। जातक की वाणी अप्रिय होगी जिससे उसके कुटुम्बीजन भी उसके अन्तर्विरोधी रहेंगे। भाइयों के साथ जातक के सम्बन्ध ठीक रहेंगे।

छठे भाव पर मंगल की दृष्टि शत्रुओं पर विजय दिलाएगी।

दशाफल—मंगल की दशा उत्तम फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

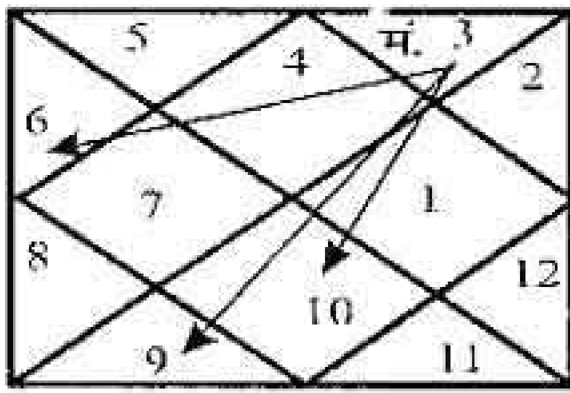
1. **मंगल+चन्द्र**—मंगल के साथ चन्द्रमा '**महालक्ष्मी योग**' बनाएगा। जातक महाधनी होगा।
2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य जातक को धनी बनाएगा। विद्या योग से, स्वपराक्रम से जातक खूब धन कमाएगा।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध जातक का पराक्रम बढ़ाएगा। जातक बुद्धिबल से आगे बढ़ेगा।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ गुरु जातक को परम भाग्यशाली बनाएगा। जातक का भाग्योदय प्रथम पुत्र के बाद होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र स्वगृही जातक को सुन्दर पत्नी का सुख, उत्तम वाहन, उत्तम व्यापार का सुख दिलाएगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि जीवन साथी के साथ मनोमालिन्यता परन्तु जीवनसाथी का पूर्ण सुख देगा।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु व्यापार में अचानक हानि दिला सकता है।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु व्यापार को उन्नति के शिखर पर पहुंचा सकता है।

एकादश भाव के मंगल का उपचार—

1. त्रिरत्न, त्रिगुणात्मक लॉकेट पहनें।
2. नारंगी रंग का सुगन्धित रुमाल जेब में रखें।

कर्क लग्न में मंगल द्वादश भाव में

कर्क लग्न में मंगल द्वादश भाव में मिथुन राशि का शत्रुक्षेत्री होकर तृतीय स्थान, छठे स्थान व सातवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक दुर्व्यसनों में रुपया खर्च करेगा। रुपया



हाथ में आएगा खर्च होता चला जाएगा। पैसा पास में नहीं टिकेगा। जातक का चरित्र सन्देहास्पद रहेगा।

निशानी—प्राण जाएं पर वचन न जाए। जन्म से पहले उसका बड़ा भाई जरूर होगा। पर बड़ा भाई जीवित नहीं रहेगा।

मांगलिक कुण्डली—मंगल बारहवें स्थान में होने से कुण्डली मांगलिक हो गई है। ऐसे जातक के जीवन साथी की कुण्डली भी मांगलिक होने से दाम्पत्य जीवन सुखी रहता है। अन्यथा जीवन साथी से विवाद रहेगा। जीवन साथी की मृत्यु पहले होगी।

विद्याभंग योग—पंचमेश मंगल बारहवें होने से यह योग बना। ऐसे जातक के विद्याध्यायन में रुकावट अवश्य आती है।

पुत्रहीन योग—यदि पंचम भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो, तो यह योग बनता है। जातक के पुत्र सन्तति नहीं होती। पंचम भाव से आठवें एवं पंचमेश बनकर बारहवें होने से सन्तान यहां सुख में कुछ न कुछ न्यूनता रहेगी।

दशमेश मंगल बारहवें एवं दशम भाव से तृतीय स्थान पर मंगल होने से जातक को नौकरी-धंधे में आशातीत सफलता नहीं मिलेगी। छोटे भाइयों से सम्बन्ध अच्छे (मधुर) न रहेंगे।

मंगल की दृष्टि छठे भाव पर होने के कारण जातक के गुप्त एवं प्रकट शत्रु बहुत होंगे पर जातक शत्रुओं को सबक सिखाने में पूर्ण सक्षम होगा। जातक को मूत्राशय के रोग अकस्मात् हो सकते हैं।

दशाफल—मंगल की दशा खराब जाएगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+चन्द्र**—मंगल के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' बनाएगा। जातक को किसी भी कार्य में प्रथम प्रयास में सफलता नहीं मिलेगी।
2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य '**धनहीन योग**' बनाएगा। जातक की सरकारी नौकरी छूट जाएगी। नेत्रपीड़ा भी होगी।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध जहां '**पराक्रम भंग योग**' बनाएगा। वहीं जातक को '**विपरीत राजयोग**' के कारण परम धनी भी बनाएगा।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ गुरु जहां '**भाग्यभंग योग**' बनाता है वहीं '**विपरीत राजयोग**' के कारण जातक के पास सम्पूर्ण ऐश्वर्य होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र '**लाभभंग योग**', '**सुखहीन योग**' की सृष्टि करता है। जातक विलासी होगा एवं व्यर्थ में रुपया खर्च करता रहेगा।

6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि '**विवाहभंग योग**' बनाता है, साथ में विपरीत राजयोग के कारण जातक को महाधनी भी बनाएगा।
7. **मंगल**+राहु–मंगल के साथ राहु व्यर्थ की यात्रा कराएगा। बुरे सपने आयेंगे। दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु धार्मिक यात्राएं (Pleasure trip) कराएगा। ऐसा जातक अदम्य साहसी होगा। सपने प्राय: सच होंगे।

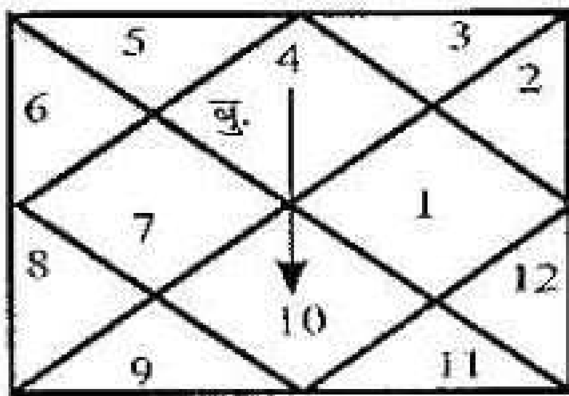
द्वादश भाव के मंगल का उपचार–

1. दाम्पत्य सुख कारक मंगल मंत्र का पूजन करें।
2. मंगल चण्डिका स्तोत्र का पाठ करें।
3. स्त्री जातक मंगलागौरी का व्रत करें।
4. अविवाह एवं विलम्ब विवाह की स्थिति में घट विवाह करें।

❑❑❑

कर्क लग्न में बुध की स्थिति

कर्क लग्न में बुध प्रथम भाव में



तीसरे व बारहवें घर का स्वामी होने से कर्क लग्न के लिए बुध परम पापी हो गया है। लग्न में यह शत्रुक्षेत्री होते हुए भी '**कुलदीपक योग**' बना रहा है। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला बुद्धिमान, विद्वान, उच्चपदाधिकारी, ज्योतिष एवं अध्यात्म विद्या का ज्ञाता होता है।

विद्यावान विवाहादि बहुश्रुतवान्

इसके स्वभाव में उत्साह के साथ कुछ झगड़ालू मनोवृत्ति होती है। इनका जन्म प्राय: दिन के समय सुबह जल्दी का होता है। आयु के 27वें वर्ष में यह जातक तीर्थाटन (देशाटन) करता है।

कर्कस्थ बुध लग्न में होने से जातक शरारती दिमाग का होता है। इनका शरीर प्राय: कृश, ऊंचा तथा आंखें छोटी एवं रंग गोरा होता है। प्राय: इनका पेट खराब होता है। ससुराल व संतान पक्ष से ये प्राय: दु:खी व चिन्तित रहते हैं। इनकी प्रवृत्ति कुछ जल्दबाजी की रहती है। लेखनी व कल्पना शक्ति से इनका गहरा सम्बन्ध होता है। दृढ़ निश्चय की कमी एवं विचारों को बदलते रहना, इनकी मानसिक कमजोरी कही जा सकती है। जातक कुछ खर्चीले स्वभाव का होता है।

बुध लग्न में विदेश यात्रा द्वारा धन प्राप्ति का अवसर देता है।

दशाफल–बुध की दशा उत्तम फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

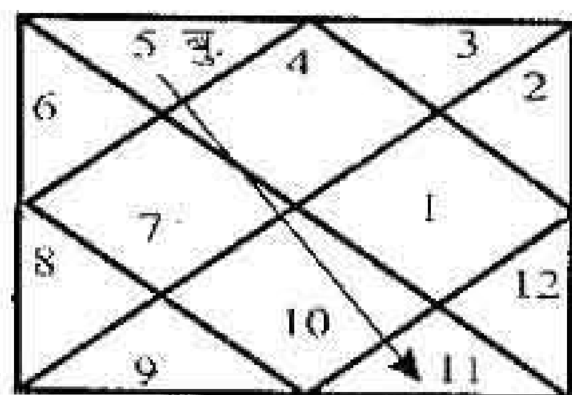
1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ धनेश सूर्य उत्तम श्रेणी के '**बुधादित्य योग**' की सृष्टि करता है। ऐसा जाताक धनवान एवं परम प्रतापी व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ चन्द्रमा स्वगृही होने से '**यामिनीनाथ योग**' बनाएगा। ऐसे जातक धनी, सुखी एवं वैभवशाली जीवन जीयेगा। उसे माता की सम्पत्ति मिलेगी।

3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल नीच का होते हुए भी परम योगकारक होने से जातक का सरकार में दबदबा रहेगा। जातक उत्तम भूमि एवं वाहन का स्वामी होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ उच्च का गुरु '**हंस योग**' बनाएगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी, वैभवशाली एवं साधन सम्पन्न होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र होने से जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे। जातक व्यापार के द्वारा प्रचुर धन कमाएगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ सप्तमेश शनि होने से जातक का गृहस्थ जीवन थोड़ा अशान्त रहेगा। जातक के गुप्त शत्रु बहुत रहेंगे। जिससे मानसिक तनाव रहेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक को अस्थिर एवं चिड़चिड़े स्वभाव का बनाएगा। जातक अपनी बात से मुकरने में द्वेष नहीं करेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को थोड़ा झगड़ालू स्वभाव का बनाएगा।

प्रथम भाव के बुध का उपचार–

1. शुभ काम (धर्म-कर्म) करें, मांसाहार न करें।
2. गणपति की उपासना करें।

कर्क लग्न में बुध द्वितीय भाव में



कर्क लग्न में बुध द्वितीयस्थ सिंह राशि में होगा। यह तृतीय भाव से बारहवें स्थान पर बैठकर अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। ऐसा व्यक्ति सबको तारने वाला, हाजिर जबाब होता है। तृतीय भाव से बारहवें होने के कारण एवं तृतीय भाव के कारक ग्रह मंगल का शत्रु होने के कारण बुध तृतीय भाव का शुभ फल नहीं देगा। जातक के छोटे भाई-बहनों से सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे।

बुध यहां खर्चेश भी है। खर्चेश धन स्थान में होने से जातक को धन सम्बन्धी आर्थिक नुकसान भी होंगे।

निशानी–जातक की वक्तृत्व शक्ति उत्तम होगी। जातक सद्गुणी, वाचाल, विद्वान एवं धनी भी होगा।

दशाफल–बुध की दशा शुभ फल देगी पर आर्थिक नुकसान भी देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

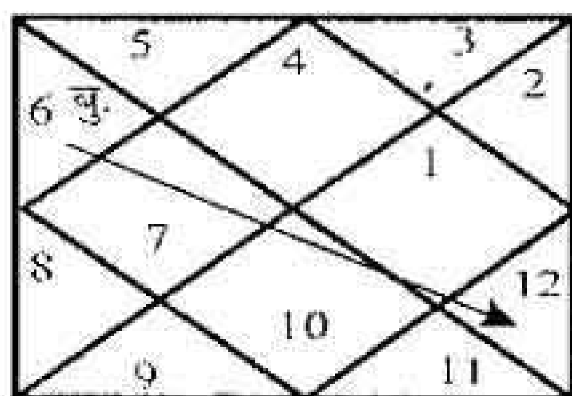
1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ यदि सूर्य हो तो '**बुधादित्य योग**' बनेगा परन्तु बलवान धनेश की तृतीयेश से युति होने के कारण '**मित्रमूलधन योग**' बनेगा। जातक मित्रों के माध्यम से खूब रुपया धन कमाएगा। भाइयों से कुटुम्बीजनों से भी उसे लाभ होगा।

2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ चन्द्रमा होने से जातक स्वपराक्रम में खूब धन कमाएगा पर धन की बरकत नहीं होगी।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ पंचमेश मंगल धन स्थान में होने से जातक का पुत्र महान पराक्रमी होगा। पुत्र जन्म के बाद जातक धनी होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ भाग्येश गुरु होने से जातक भाग्यशाली होगा। जातक की वाणी गम्भीर एवं उपदेशात्मक होगी। जिसका प्रभाव पड़ेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र होने से जातक महाधनी होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि धन स्थान में शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसे जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। जातक का जीवनसाथी लड़ाकू स्वभाव का होगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु धन के घड़े में छेद का होना बताता है। ऐसे जातक के पास धन का संग्रह बड़ी कठिनता से होगा।

द्वितीय भाव के बुध का उपचार–

1. तोता, भेड़, बकरी न पालना।
2. दूध या चावल मंदिर में दान देना।
3. हरा रंग, तुलसी, माला, ताबीज, भभूति, साधुओं की तस्वीरें आदि घर में न रखना।
4. गणपति का नित्य उपासना करना।

कर्क लग्न में बुध तृतीय भाव में



कर्क लग्न में तृतीयस्थ बुध उच्च का होगा। जहां बैठकर भाग्यभवन को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। ऐसा बुध तृतीय भाव के शुभ फल देगा। जातक की उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा होगी। समाज में एवं राजदरबार में जातक को उच्च मान मिलेगा। कीर्ति अखण्ड होगी। उच्च के बुध की दृष्टि नवम भाव पर होने से जातक का पिता बहुप्रतिष्ठित एवं धनवान होगा। जातक के पिता के साथ अच्छे सम्बन्ध होंगे। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

भावाधिपे बलयुते दीर्घायु: धैर्यवान्!

बुद्धि एवं विद्या का कारक होने से जातक तीव्र बुद्धिशाली होगा। उसे उच्च स्तर की शैक्षणिक उपाधि मिलेगी परन्तु व्ययेश होने से विद्या में विघ्न एवं रुकावट अवश्य आएगी। जातक लम्बी आयु वाला होगा।

व्ययेश उच्च का होने से जातक धर्म मार्ग, परोपकार एवं सामाजिक कार्यों में रुपया खर्च करेगा। लेखक एवं व्यंग्यकार होगा। मध्यायु के बाद जातक संन्यासी भी हो सकता है। उसे संसार से वैराग्य हो जाएगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ सूर्य होने से **'बुधादित्य योग'** बनेगा एवं जातक जनसम्पर्क, मित्र, भागीदार एवं राजपुरुषों द्वारा धन अर्जित करेगा।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ यहां चन्द्रमा शत्रुक्षेत्री होगी। जातक पराक्रमी होगा पर मित्रों एवं परिजनों में विवाद रहेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ पंचमेश+दशमेश मंगल तृतीय स्थान में होने से जातक महान पराक्रमी होगा। उसे भाई–बहनों का सुख प्राप्त होगा व समाज में उसकी कीर्ति–प्रतिष्ठा रहेगी।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ भाग्येश गुरु होने से जातक भाग्यशाली होगा। उसे बड़े भाई का सुख मिलेगा। जातक धार्मिक एवं समाजसेवी लोगों के सम्पर्क में ज्यादा रहेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र हो तो **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। जातक का दो–तीन मंजिला उत्तम मकान होगा। जातक के पास एक से अधिक मकान होंगे। जातक के पास चार पहियों वाली गाड़ी होगी तथा वाहन सुख उत्तम होगा। वाहन एक से अधिक होंगे।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि की युति तृतीय स्थान में होने से जातक के पराक्रम को विवादास्पद बनाती है। जातक के बारे शत्रु अफवाह उड़ाते रहेंगे।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक की कीर्ति को मलिन करेगा। मित्र व परिजनों के मध्य मनोमालिन्यता रहेगी।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु कीर्तिदायक है। जातक का अपने समाज व जाति में बड़ा भारी नाम होगा।

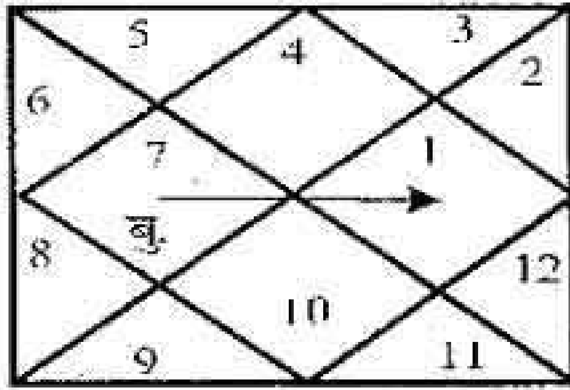
तृतीय भाव के बुध का उपचार–

1. दुर्गा पूजन कर कन्याओं का आशीर्वाद लेना।
2. तोते को चूरी देना या मिर्ची खिलाना।
3. रात को मूंग साबित भिगोकर सुबह पक्षियों को डालना।
4. दम की दवाई मुफ्त बांटना।
5. गणपति की आराधना करना।
6. द्वार पर हरे रंग के वास्तुदोष नाशक गणपति लगाना।

कर्क लग्न में बुध चतुर्थ भाव में

कर्क लग्न में चतुर्थस्थ बुध तुला राशि का होकर दशम भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेगा। बुध की यह स्थिति **'कुलदीपक योग'** बनाती है। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला सबका चहेता व प्यारा होता है।

विशालाक्षः पितृभ्रातृसौख्ययुतः।



तृतीयेश बुध तीसरे भाव से दूसरे स्थान पर होने से भाई-बन्धु मित्र उत्तम होंगे पर उनके लिए जातक को खर्च करना पड़ेगा। जातक बड़ी-बड़ी आंखों वाला एवं माता-पिता के सुख से युक्त होता है।

व्ययेश चौथे भाव में होने से चौथे भाव के फल बिगाड़ेगा। विद्याध्ययन में रुकावट आएगी। जातक को अपनी पसन्द का धन्धा नहीं मिलेगा। मकान पर खूब रुपया खर्च होगा। वाहन पर रुपया खर्च होगा। माता से सम्बन्ध ठीक नहीं होंगे।

दशाफल–बुध की दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

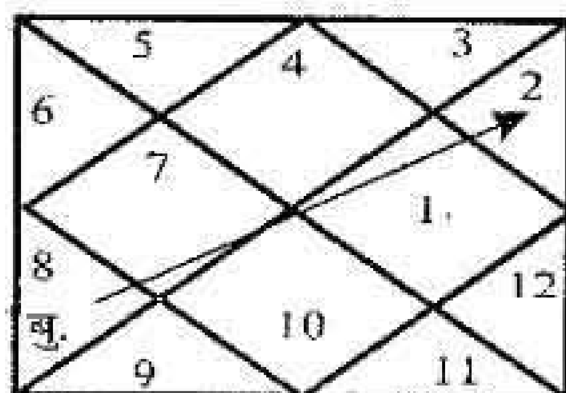
1. **बुध+सूर्य**–सूर्य यहां नीच का होगा पर धनेश पराक्रमेश ही युति '**बुधादित्य योग**' के साथ यहां शुभ फलदाई है। जातक धनवान एवं पराक्रमी होगा।
2. **बुध+चन्द्र**–लग्नेश चन्द्र की पराक्रमेश बुध के साथ युति होने से भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु जातक को संघर्ष करना पड़ेगा। जातक की माता बीमार रहेगी।
3. **बुध+मंगल**–पंचमेश+दशमेश मंगल यहां पर कुण्डली को मांगलिक बनाएगा। जातक विद्यावान् एवं भाग्यशाली होगा।
4. **बुध+गुरु**–तृतीयेश बुध की भाग्येश गुरु के साथ युति शुभ फलदायक है। जातक के पास उत्तम वाहन एवं भवन का सुख होगा।
5. **बुध+शुक्र**–शुक्र यहां स्वगृही होने से '**मालव्य योग**' बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा। उसके पास अनेक वाहन होंगे एवं मकान भी एक से अधिक होंगे।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि उच्च का होने से '**शशयोग**' बनेगा। ऐसा जाताक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा। जातक के पास पुराने एवं आधुनिक दोनों प्रकार के मकान होंगे। वाहन भी एक से अधिक होंगे।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु होने से जातक को माता, मामा व ननिहाल का सुख कमजोर होगा। जातक को वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु होने से जातक को ननिहाल का सुख नहीं मिलेगा। उच्च वाहन जातक के लिए शुभ नहीं होगा।
9. यदि चन्द्रमा दूषित हो तो जातक को माता सुख नहीं मिलेगा। क्योंकि बुध मातृकारक चन्द्रमा का शत्रु है।
10. **राहु-केतु-शनि युते बाह्यारिष्टवान्,**
    क्षेत्र सुख वर्जित: बन्धु कुलद्वेषी कपटी

यदि बुध के साथ राहु, केतु या शनि हो तो जातक कुलद्वेषी एवं कपट आचरण वाला होता है।

चतुर्थ भाव के बुध का उपचार–

1. तोता, बकरी की पालना न करना।
2. 101 पलाश (ढाक) के पत्ते दूध से धोकर जल में प्रवाहित करें।
3. गणपति को नित्य अथवा प्रति बुधवार दूर्वा चढ़ाएं।
4. प्रवेश द्वार पर वास्तुदोषनाक गणपति लगाएं।

कर्क लग्न में बुध पंचम भाव में



कर्क लग्न में बुध पंचम भाव में वृश्चिक राशि का होकर शत्रुक्षेत्री होगा एवं एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। ऐसा जातक शिक्षित, बुद्धिमान, मुकाबले की परीक्षा में सफलता पाने वाला, उत्तम सलाहकार (मंत्री), ज्योतिष, कर्मकाण्ड, चिकित्सा विज्ञान व कम्प्यूटर विज्ञान का जानकार होता है।

तृतीयेश बुध पंचम भाव में होने से छोटे भाई बहनों का उत्तम सुख देगा।

व्ययेश बुध पंचमस्थ होने से संतान देरी से होगी। सन्तान के रख रखाव हेतु जातक को खूब रुपया खर्च करना होगा।

लाभ स्थान पर दृष्टि होने से जातक को मित्रों से लाभ होता है। व्यापार से लाभ है।

निशानी–जातक की प्रथम संतान कन्या होगी। सम्भवत: दो कन्या होंगी पर मंगल की स्थिति पर विचार करके ही सन्तान सम्बन्धी फलादेश होंगे।

दशाफल–बुध की दशा मिश्रित फल देगी। 'फलदीपिका' अ. 19/पृ. 374 के अनुसार कर्क लग्न में पंचमस्थ बुध की दशा योगकारक होकर शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

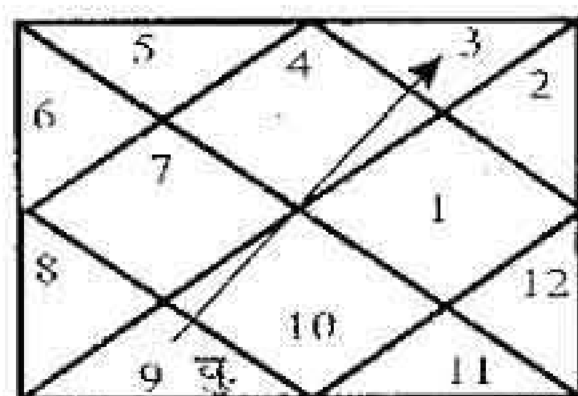
1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ सूर्य होने से '**बुधादित्य योग**' बनेगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। विद्या के बल पर जातक आगे बढ़ेगा। प्रथम पुत्र संतति उत्पन्न होने के बाद जातक के भाग्य का दरवाजा खुलेगा।
2. **बुध+चन्द्र**–पराक्रमेश बुध के साथ लग्नेश चन्द्रमा यहा नीच का होगा। जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी। उसे प्रथम संतति ऑपरेशन के द्वारा प्राप्त होगी।
3. **बुध+मंगल**–पराक्रमेश बुध के साथ दशमेश मंगल स्वगृही होगी। जातक को प्रथम कन्या के बाद पुत्र की प्राप्ति होगी। यदि मंगल की दशा चल रही हो तो प्रथम पुत्र होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ भाग्येश गुरु होने से पुत्र संतति की बाहुल्यता रहेगी। जातक उच्च विद्या प्राप्त करेगा एवं प्रथम पुत्र (संतति) के बाद विशेष भाग्योदय होगा।

5. **बुध+शुक्र**–पराक्रमेश बुध के साथ धनेश+लाभेश शुक्र पंचम भाव में होने से प्रथम संतति कन्या होगी एवं ज्ञातक के जीवन में कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी। जातक कला में रुचि रखेगा एवं विद्यावान होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि का पंचम स्थान में होना ज्यादा शुभ नहीं है। विद्या में रुकावट आएगी। जातक आंग्लप्रेमी होगा। संतान से अनबन रहेगी। पुत्र संतति कष्ट से हाथ लगेगी।
7. **बुध+राहु**–पुत्र संतति में रुकावट, विद्या प्राप्ति में रुकावट संभव है।
8. **बुध+केतु**–विद्या प्राप्ति में संघर्ष की स्थिति रहेगी। प्रथम संतति ऑपरेशन द्वारा होगी या गर्भपात संभव है।
9. यहां यदि गुरु दूषित हो तो जातक को सन्तान सम्बन्धी सुख नहीं मिलेगा।

पंचम भाव के बुध का उपचार–

1. चांदी का छल्ला बाएं हाथ में पहनना चाहिए।
2. गाय की सेवा करे या नित्य चारा खिलाएं।
3. गणपति की उपासना करें।
4. पन्ना रत्न अभिमंत्रित कर धारण करें।

कर्क लग्न में बुध षष्टम भाव में



कर्क लग्न में बुध छठे भाव में धनु राशि का तृतीय भाव से चौथे एवं बारहवें भाव से सातवें होकर अपने ही घर (द्वादश भाव) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

तृतीय भाव से छठें होने से तृतीय भाव का शुभ फल मिलेगा। जातक का भाई बहनों के साथ सम्बन्ध ठीक होगा। मामा से सम्बन्ध ठीक होंगे।

व्ययेश छठे भाव में जाने से जातक को चर्मरोग मूत्राशय के रोग होंगें व पाचन शक्ति कमजोर होगी।

तृतीयेश एवं व्ययेश होकर बारहवें स्थान पर दृष्टि होने के कारण जातक परोपकार एवं धर्म ध्यान पर रुपया खर्च करेगा।

दशाफल–बुध की दशा शुभ फल देगी।

कीर्तिभंग योग–तृतीयेश छठे होने से यह योग बना। जातक का पराक्रम भंग होगा तथा समाज में उसकी बदनामी होगी। किसी भी काम में यश नहीं मिलेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–धनेश छठे जाने से '**धनहीन योग**' बनता है। यहां '**बुधादित्य योग**' ज्यादा सार्थक नहीं है। फिर भी जातक मध्यमवर्गीय होगा। धन की कमी से कोई काम रुका हुआ नहीं रहेगा।

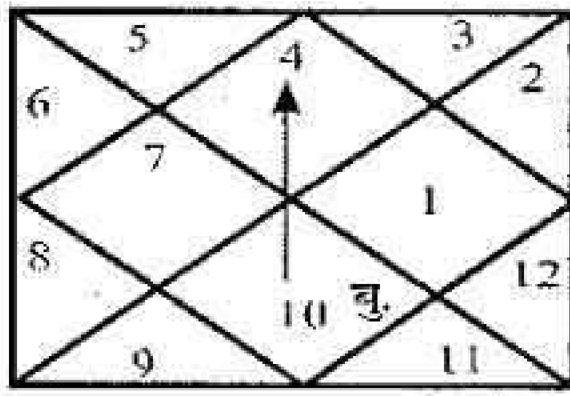
2. **बुध+चन्द्र**–चन्द्रमा के छठे जाने से **'लग्नभंग योग'** बनेगा। बुध+चन्द्र की युति यहां पर जातक के अंतर्विरोध को दर्शाती है। जातक के शत्रु बहुत होंगे। उसे परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ दशमेश मंगल होने से **'राजभंग योग'** एवं **'विद्याभंग योग'** बनेगा। ऐसे जातक को विद्या में रुकावट एवं सरकारी नौकरी में रुकावट महसूस होगी।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु होने से **'भाग्यभंग योग'** एवं **'विपरीत राजयोग'** दोनों की सृष्टि होगी। ऐसा जातक धनी होगा। उसके पास वाहन एवं आधुनिक सुख-सुविधा भरपूर होगी।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र होने से **'धनहीन योग'** एवं **'सुखहीन योग'** की सृष्टि होगी। ऐसे जातक को धन एवं भौतिक सुख-संसाधनों की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
6. **बुध+शनि**–यहां बुध के साथ शनि **'विलम्ब विवाह योग'** कराता है। परन्तु अष्टमेश के षष्टम में जाने से **'विपरीत राजयोग'** भी बनता है। ऐसा जातक धनी होगा। उसके पास वाहन एवं भौतिक सुख-सुविधाएं रहेंगी।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु होने से जातक गुप्त शक्ति से युक्त विशिष्ट पराक्रमी होगा तथा अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
8. **बुध+केतु**–जातक गुप्त षड्यंत्र का शिकार होगा पर बच निकलेगा।
9. **कुजर्क्षे नील कुष्टादि रोगी,**
   शनि राहुयुते केतुयुते वातशूलादि रोगी ज्ञाति शत्रुकलहः

षष्ठम भाव के बुध का उपचार–

1. चांदी की अंगूठी बांये हाथ में पहनें।
2. गंगा जल हरी बोतल में रखकर (शीशे की ढक्कन वाली) खेती की जमीन में बुधवार के दिन गाढ़ें।
3. दोहिती, भानजी व कुंवारी कन्याओं को खुश रखें।
4. साबुत मूंग एवं बुध की वस्तुओं को दान करें।
5. बुध कवच का पाठ करें।
6. हरे रंग का सुगन्धित रुमाल जेब में रखें।

कर्क लग्न में बुध सप्तम भाव में

कर्क लग्न में सातवें स्थान पर स्थित बुध मकर राशि का मित्रक्षेत्री होकर लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। बुध की यह स्थिति **'कुलदीपक योग'** बनाती है। ऐसा जातक अपने परिवार कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला, सबका चहेता व प्यारा होता है।



बुध सप्तम भाव में होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी परन्तु शारीरिक शक्ति कमजोर होने से पत्नी असंतुष्ट रहेगी।

धंधा, भागीदारी के लिए बुध की यह स्थिति ठीक है। भागीदार एवं भाई-बहनों के साथ जातक के सम्बन्ध मधुर रहेंगे। विदेश व्यापार से लाभ होगा।

निशानी–जातक का चेहरा कोमल एवं स्त्री जैसा होगा। व्ययेश बुध केन्द्र में होने से जातक फालतू के कामों में रुपया खर्च करेगा एवं उसका वैवाहिक जीवन दु:खी होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

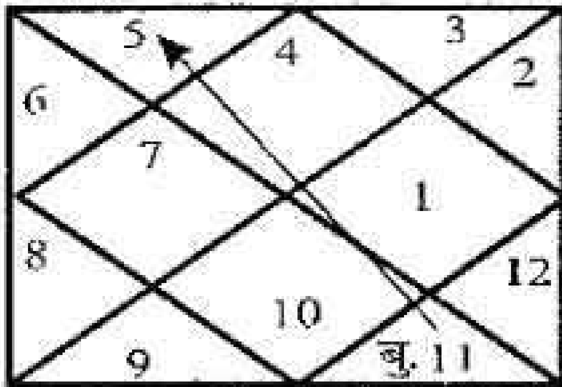
1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ सूर्य होने से **'बुधादित्य योग'** बनेगा। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक पराक्रमी होगा एवं दानशील मनोवृत्ति वाला होगा।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ यहां चन्द्रमा हो तो **'लग्नाधिपाति योग'** बनेगा बुध+चन्द्र परस्पर शत्रु ग्रह होते हुए भी उनकी यह स्थिति शुभ है। जातक जिस कार्य में हाथ डालेगा। उसे उसमें सफलता मिलती चली जाएगी।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ दसमेश मंगल उच्च का होने से **'रुचक योग'** बनेगा। जातक राजा के समान महान वैभवशाली एवं ऐश्वर्यशाली होगा। जातक की किस्मत विवाह के बाद चमकेगी। घर का उत्तम वाहन, भवन एवं नौकर-चाकर होंगे।
4. **बुध+गुरु**–यहां गुरु नीच का होगा। फिर भी पराक्रमेश के साथ भाग्येश की युति जातक का भाग्योदय मित्रों की मदद से होना बताती है।
5. **बुध+शुक्र**–पराक्रमेश बुध के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र की युति जातक का पराक्रम विवाह के बाद होना बताती है। जातक को तथा बढ़िया ससुराल मिलेगा। पत्नी सुन्दर होगी।
6. **बुध+शनि**–पराक्रमेश बुध के साथ शनि स्वगृही होने से **'शशयोग'** बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा। जातक उत्तम भवन, उत्तम वाहन का स्वामी होगा।
7. **बुध+राहु**–यहां राहु की युति व्ययेश बुध के साथ होने से जीवनसाथी की मृत्यु जातक से पहले होगी। जातक एकांकी जीवन जीना पसन्द करेगा।
8. **बुध+केतु**–गृहस्थ सुख में न्यूनता का संकेत देता है।

सप्तम भाव के बुध का उपचार–

1. माता-लड़की के साथ एक जैसा व्यवहार करना।
2. पन्ने की अंगूठी पहनें। (पन्ने के अभाव में पन्नी पहन सकते हैं।)

3. अधिक थूकना या बार-बार थूकना बंद करें। गुटका न खाएं।
4. पन्ना जड़ा हुआ बुध यंत्र धारण करें।
5. गणपति की उपासना करें।

कर्क लग्न में बुध अष्टम भाव में



कर्क लग्न में अष्टमस्थ बुध कुम्भ राशि का होकर मित्रक्षेत्री होगा। तीसरे भाव से छठे एवं बारहवें भाव से नवें स्थान पर होकर बुध धन भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। बुध की यह दृष्टि जातक की भाषा विनम्र एवं कुटुम्ब का सुख ठीक देगा।

तृतीयेश का आठवें जाना भाइयों के लिए शुभ नहीं। व्ययेश आठवें जाने से खर्च कम होगा तथा जातक को राजयोग ऐसा अच्छा फल मिलेगा।

निशानी–जातक दुर्बल शरीर का स्वामी होगा एवं उसे कोई न कोई बीमारी लगी रहेगी। 35 वर्ष बाद धन व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

दशाफल–बुध की दशा अशुभ रहेगी।

कीर्तिभंग योग–तृतीयेश आठवें जाने से यह योग बना। जातक का पराक्रम भंग होगा। उसे किसी काम में यश नहीं मिलेगा। समाज व मित्रों में बदनामी का योग है।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

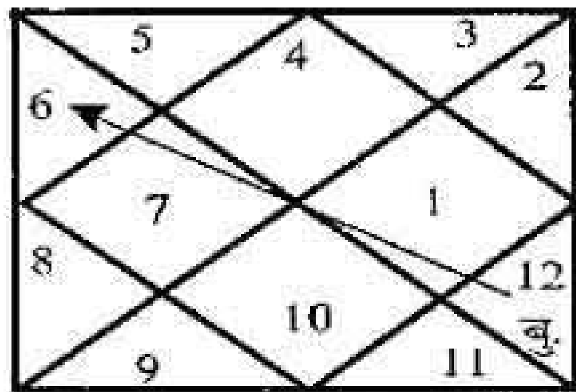
1. **बुध+सूर्य**–यहां पर '**बुधादित्य योग**' ज्यादा सार्थक नहीं है, क्योंकि धनेश होकर सूर्य का आठवें जाने से '**धनहीन योग**' बनता है। जातक का जीवन संघर्षपूर्ण रहेगा। जातक मध्यम आयु के बाद धनी होगा।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ चन्द्रमा यहां '**लग्नभंग योग**' कराएगा। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता। जातक मानसिक रुप से उद्विग्न रहता है।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल कुण्डली को '**मांगलिक**' बनाएगा। साथ ही '**राजभंग योग**' एवं '**विद्याभंग योग**' बनाता है। ऐसे जातक को शैक्षणिक उपाधि प्राप्त करने में बाधा आती है तथा उसका जीवन संघर्षमय रहता है।
4. **बुध+गुरु**–यहां गुरु होने पर '**भाग्यभंग योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' दोनों बनेंगे। जातक नि:संदेह धनवान होगा।
5. **बुध+शुक्र**–यहां पर शुक्र होने से '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनेगा। ऐसे जातक को व्यापार में नुकसान होगा। पत्नी से थोड़ी कम बनेगी।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि '**विलम्ब विवाह योग**' कराता है। साथ ही '**विपरीत राजयोग**' भी कराता है। फलत: ऐसा जातक धनी एवं उच्च वर्गीय व्यापारी होगा।

7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु गुप्त रोग एवं गुप्त शत्रु से परेशान कराएगा।
8. **बुध+केतु**–जातक के जीवन में शल्य चिकित्सा योग बनता है।

अष्टम भाव के बुध का उपचार–

1. लड़का का नाम में चांदी का छल्ला डालना।
2. हरा अण्डरवियर पहनें।
3. जन्म दिवस के दिन मिट्टी के बर्तन में शहद या चीनी भरकर वीरान जगह में दबाना।
4. सीढ़ियों की मरम्मत का ध्यान रखना।
5. गणपति की उपासना करे, प्रत्येक बुधवार को दूर्वा एवं लड्डू चढ़ाएं।

कर्क लग्न में बुध नवम भाव में



कर्क लग्न में नवम भाव से स्थित बुध नीच (मीन) राशि का होगा। तृतीय भाव से सातवें स्थान पर एवं बारहवें भाव से दसवें स्थान पर होने से बुध की यह स्थिति तृतीय भाव का शुभ फल देगी।

जातक अपने भाई-बहनों के साथ अच्छा सम्बन्ध रखेगा।

व्ययेश बुध नवम में होने से भाग्य में रुकावट होगी एवं जातक को अपने भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

निशानी–संगीतपाठकः वेदशास्त्र-विशारदो बहुप्रजासिद्धिः। भृगुसूत्र 65

ऐसा जातक संगीत, वेदविद्या का विद्वान एवं बड़े कुटुम्ब-परिवार का स्वामी होता है।

दशाफल–बुध की दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

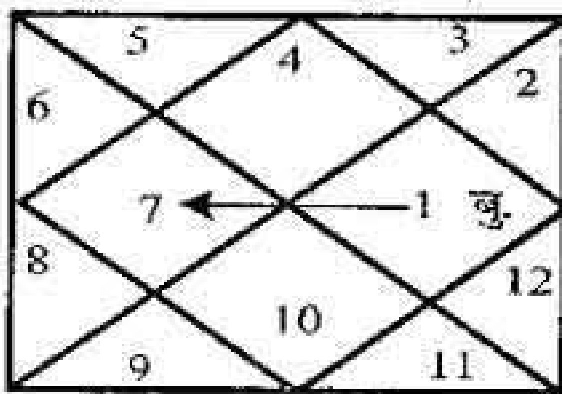
1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ सूर्य '**बुधादित्य योग**' बनाता है। धनेश सूर्य की पराक्रमेश के साथ यह युति शुभ है। जातक धनवान एवं भाग्यशाली होगा। सरकारी क्षेत्र में जातक का वर्चस्व रहेगा।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ चन्द्रमा जातक को परम भाग्यशाली बनाता है। जातक पराक्रमी होगा तथा उसका जनसम्पर्क बहुत तेज रहेगा।
3. **बुध+मंगल**–पंचमेश+राज्येश मंगल भाग्य स्थान में पराक्रमेश बुध के साथ होने से जातक बड़ा पराक्रमी होगा। सरकार में उसका वर्चस्व रहेगा। जातक भूमि के क्रय-विक्रय से लाभान्वित होगा।
4. **बुध+गुरु**–यदि यहां बुध के साथ गुरु हो तो '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। बुध की नकारात्मक शक्ति कमजोर हो जाएगी। ऐसे जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
5. **बुध+शुक्र**–यदि बुध के साथ शुक्र हो भी '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। बुध की नकारात्मक शक्ति नष्ट हो जाएगी। जातक को व्यापार में जमकर लाभ होगा तथा उत्तम वाहन, मकान व नौकर का सुख मिलेगा।

6. **बुध+शनि**–बुध के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि भाग्य स्थान में होने से जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। पत्नी से वैचारिक साम्यता नहीं रह पाएगी।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक को भाग्यशाली बनाता है। ऐसा जातक चतुर व्यापारी होता है तथा बुद्धिबल से खूब धन कमाता है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को कीर्तिवान होगा। जातक शत्रुंजयी होगा।

नवम भाव के बुध का उपचार–

1. शरीर पर चांदी पहनें।
2. कौवे को भोजन का हिस्सा देना।
3. गाय की सेवा करें, गायों को घास दें।
4. गणपति की उपासन करे। प्रति बुधवार को लड्डू चढ़ाएं।

कर्क लग्न में बुध दशम भाव में



कर्क लग्न में दशमस्थ बुध मेष राशि का होकर शत्रुक्षेत्री होगा। शत्रुक्षेत्री होकर बुध चौथे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक के व्यापार में नुकसान होगा। जमीन में लगाया हुआ रुपया कष्टप्रद साबित होगा।

बुध की यह स्थिति **'कुलदीपक योग'** बनाती है। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला सबका चहेता व प्यारा होता है।

निशानी–जातक व्यापार वर्गीय (प्रिय) होगा।

विशेष–जातक को बहन का सुख उत्तम नहीं मिलेगा। वाहन को लेकर जातक का रुपया फालतू खर्च होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

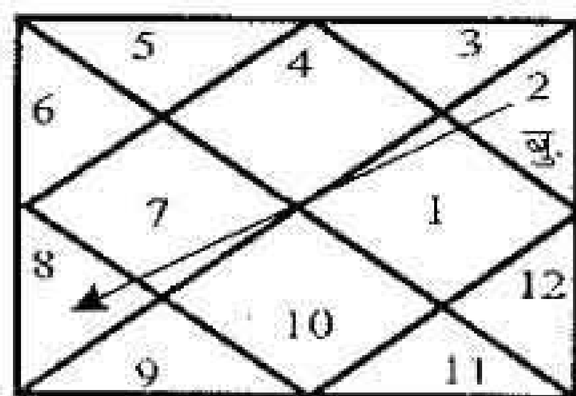
1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ यदि यहां सूर्य हो तो जातक की कुण्डली में शक्तिशाली **'बुधादित्य योग'** बनता है।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ लग्नेश चन्द्रमा केन्द्रवर्ती होने से जातक व्यापार प्रिय व व्यवसायी होगा एवं एक से अधिक मकान का स्वामी होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल स्वगृही होने से **'रुचक योग'** बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति एवं मकान का स्वामी होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु होने से जातक परम सौभाग्यशाली होगा। जातक अध्ययन-अध्यापन एवं धार्मिक व परोपकार के कार्यों में रुचि लेगा।

5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ सुखेश व लाभेश शुक्र होने से जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे। जातक ऐश्वर्यशाली जीवन जीएगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि दशम स्थान में नीच का होगा। ऐसा जातक धनवान होगा। जातक व्यापार से खूब धनार्जन करेगा पर बुद्धि मलीन होगी।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु राजकार्य में बाधा पहुंचाएगा। सरकारी अधिकारी जातक को परेशान करेंगे।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु राजकाज में सफलतादायक है। बुद्धिबल से शत्रु परास्त होंगे।
9. मंगल यदि तृतीय स्थान में हो तो बुध के घर में होगा एवं बुध मंगल के घर में होने से परस्पर **परिवर्तन योग** बनेगा। ऐसे मंगल एवं बुध दोनों का प्रभाव सकारात्मक हो जाएगा। दोनों ग्रहों के अधीनस्थ घर तृतीय स्थान, पंचम स्थान, दशम स्थान एवं द्वादश स्थान सुधर जाएंगे।

दशम भाव के बुध का उपचार–

1. ज़बान का चसका कम करें, मांसाहार व शराब से दूर रहें तो बुध शुभ होगा।
2. बुधवार को गणपति मन्दिर में जाकर दुर्वा लड्डू चढ़ाएं।

कर्क लग्न में बुध एकादश भाव में



कर्क लग्न में एकादश भाव में स्थित वृष राशि का बुध, तीसरे भाव से नवें में एवं बारहवें भाव से बारहवें स्थान पर होगा। जहां पर स्थित होकर यह पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

बहुमंगलप्रदः अनेक प्रकारेण धनवान्।

–भृगुसूत्र 72

तृतीयेश लाभ स्थान में होने से जातक अपने भाई-बहनों का विशेष ध्यान रखेगा। व्ययेश होकर व्यय स्थान से बारहवें होने के कारण जातक मितव्ययी होगा। फालतू रुपया नहीं उड़ाएगा। जातक अनेक प्रकार के धंधों को करते हुए धनवान होगा।

निशानी–विद्या में बाधा आते हुए भी जातक पूरी शिक्षा प्राप्त करेगा। शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। 34 वर्ष बाद किस्मत चमकेगी।

दशाफल–बुध की दशा शुभ फलदायक साबित होगी। यदि गुरु भी एकादश स्थान में हो, पंचम भाव में राहु, शनि या केतु हो तो 'फलदीपिका' अ. 19/ पृ. 375 के अनुसार राहु की महादशा में जातक को गंगा स्नान आदि पुण्य-फल एवं तीर्थ यात्राओं का लाभ होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

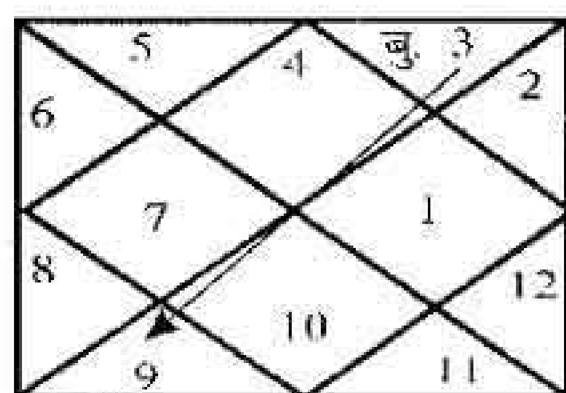
1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ सूर्य होने से '**बुधादित्य योग**' बनेगा। ऐसे जातक को धन लाभ व्यापार के द्वारा होगा। जातक उद्योगपति होगा।

2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ लग्नेश चन्द्रमा यहां उच्च का होगा। ऐसा जातक विद्यावान होगा जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल पंचमेश+दशमेश लाभ स्थान में होने से जातक उद्योगपति होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु भाग्येश होने से जातक उच्च शिक्षायुक्त होगा। जातक धार्मिक कार्य, परोपकार में रुचि रखने वाला, सच्चरित्र व्यक्ति होता है। जातक के पुत्र जरुर होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ सुखेश शुक्र स्वगृही होगा। ऐसा जातक उत्तम विद्या, उत्तम संतति प्राप्त करेगा। कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।
6. **बुध+शनि**–तृतीयेश बुध के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि विद्या में बाधक है। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा। जातक के गुप्त शत्रु व्यापार में रुकावट डालेंगें।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु व्यापार में बदलाव लाएगा। चलते व्यापार में रुकावट आयेगी। रुकावट के बाद बदलाव होगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु कार्य में रुकावट का संकेत देता है। गुप्त शत्रु सदैव सक्रिय रहेंगे।

एकादश भाव के बुध का उपचार–

1. नया कपड़ा दरिया में धोकर गंगा जल का छींटा देकर पहनें।
2. बुध यंत्र पन्ना डालकर गले में पहने तो धनहानि से बचाव होता है। पाठक चाहे तो यह यंत्र लेखक से सम्पर्क कर प्राप्त कर सकते हैं।

कर्क लग्न में बुध द्वादश भाव में



कर्क लग्न में बारहवें भाव में स्थित मिथुन राशि का बुध स्वंगृही होगा। तृतीय भाव से दसवें होने के कारण यह बुध शुभ फलदायक हो गया है।

जातक बुद्धिशाली होगा तथा उसकी शिक्षा उत्तम होगी। धंधे व्यापार के लिए जातक यात्राएं बहुत करेगा। विदेश यात्रा भी सम्भव है।

निशानी–छोटे भाइयों के लिए बुध की यह स्थिति ठीक नहीं। प्रथम तो छोटे भाई होगा नहीं, होगा तो उनसे निभेगी नहीं।

बुध की दृष्टि छठे भाव पर होने के कारण जातक को नौकर अच्छे मिलेंगे। जातक का मातृपक्ष सबल होगा परन्तु जातक को चर्मरोग होगा एवं पेट का रोग भी होगा।

दशा–बुध की दशा अच्छी नहीं जाएगी।

कीर्तिभंग योग–जातक का पराक्रम भंग होगा। किसी भी काम में यश नहीं मिलेगा। समाज में, मित्रों में बदनामी होने का योग है।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–यहां पर '**बुधादित्य योग**' ज्यादा सार्थक नहीं होगा। सूर्य के कारण '**धनहीन योग**' तथा बुध के कारण '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। नि:संदेह जातक धनी एवं प्रभावशाली व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' बनाएगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। नेत्रपीड़ा भी संभव है।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल **विद्याभंग योग** एवं '**राजभंग योग**' की सृष्टि करेगा। जातक के प्रारंभिक विद्या अध्ययन में रुकावट आयेगी। सरकारी नौकरी में बाधा आएगी।
4. **बुध+गुरु**–यहां गुरु '**भाग्यभंग योग**' की सृष्टि करेगा। साथ ही विपरीत राजयोग भी बनाएगा। ऐसा जातक निश्चय ही धनवान, परोपकारी एवं दानी होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ यहां शुक्र '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' की सृष्टि करेगा। जातक को चलते व्यापार में धक्का लगेगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि '**विलम्ब विवाह योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' बनाएगा। ऐसा जातक धनी होगा, व्यापारी होगा पर व्यापार बदलता रहेगा।
7. **बुध+राहु**–राहु के कारण यात्राएं बहुत होंगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। उसके सिर पर कर्जा रहेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु होने से जातक धार्मिक यात्राएं करेगा। जातक भारी खर्चे के कारण कर्ज से दबा रहेगा।

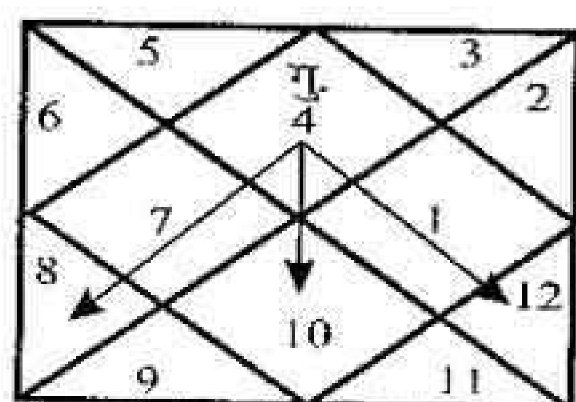
द्वादश भाव के बुध का उपचार–

1. एक स्टील का छल्ला जल प्रवाह करें तथा एक (एक ही समय) पहनना।
2. कोरा घड़ा जल प्रवाह करें, 12 बार।
3. किया हुआ वायदा पूरा करें, जबान के पक्के रहें।
4. अपनी जबान का शब्द ले डूबेगा (गन्दा शब्द न बोलें)
5. प्रति बुधवार गणपति को लड्डू चढ़ाएं।

❑❑❑

कर्क लग्न में गुरु की स्थिति

कर्क लग्न में गुरु प्रथम भाव में



कर्क लग्न के लिए शुभ योगकारक होकर गुरु लग्न में उच्च का होगा। गुरु यहां षष्टेश होने से पापी है पर भाग्येश होने से योगकारक हो गया है।

विशिष्ट योगायोग–गुरु लग्न में होने से दिग्बली होगा तथा क्रमशः 1. **कुलदीपक योग** 2. **केसरी योग** 3. **हंस योग** की सृष्टि करेगा।

इसकी दृष्टि पंचम, सप्तम एवं नवम भाव पर पड़ेगी। ऐसे जातक के जन्म से पिता की किस्मत चमकती है, उसके परिवार का नाम रोशन होता है। ऐसा जातक बुद्धिमानों में अग्रगण्य, उच्चशिक्षाविद् व ज्ञानी होता है। जातक को बुजुर्गों की सम्पत्ति, जायदाद एवं आशीर्वाद की प्राप्ति होती है। इसकी स्वयं की संतान शुभ लक्षणी व आज्ञाकारी होती है।

निशानी–ऐसे जातक गौर वर्ण व सुन्दर होते हैं। आकर्षक व्यक्तित्व के साथ इनका जीवन यशस्वी होता है।

व्यवहार–ऐसे व्यक्ति कृतज्ञ एवं विश्वासी मनोवृत्ति वाले होते हैं। ऐसे जातक आपसी झगड़े को अदालत में नहीं ले जाना चाहते। उनके जीवन में त्याग, अध्यापन की अभिरुचि बनी रहती है तथा जीवन की अन्तिम अवस्था में यह प्रायः संन्यास की मनोवृत्ति धारण कर लेते हैं।

विशेष–छठे भाव का स्वामी होने के कारण गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

उच्च के गुरु का विचित्र फलादेश–कर्क के गुरु के बारे में यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि लग्न के गुरु ने भगवान राम को वनवास दिया। द्वितीयस्थ गुरु ने भीष्म पितामह से राज्य का अधिकार छीन लिया। तृतीयस्थ गुरु ने राजा बलि को पाताल भेज दिया। चौथे भाव के गुरु ने राजा हरिश्चन्द्र के सब सुख छीन लिए। पंचमस्थ गुरु ने राजा दशरथ का पुत्र सुख छीन लिया। छठे भाव के गुरु ने द्रौपदी का चीर हरण शत्रुओं द्वारा कराया सप्तमस्थ उच्च के गुरु ने गजराज को पत्नी वियोग कराया। आठवें गुरु ने रावण को मृत्यु दी।

दसवें गुरु ने दुर्योधन का राज नष्ट किया। ग्यारहवें भाव के गुरु ने राजा नल को वनवास दिया। बारहवें गुरु ने राजा पाण्डु को अकाल मृत्यु दी।

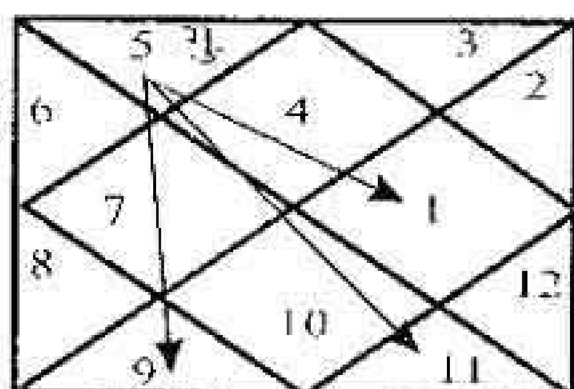
गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–उच्च के गुरु के साथ धनेश सूर्य जातक को आध्यात्मिक शक्ति से युक्त महाधनी बनाता है।
2. **गुरु+चन्द्र**–उच्च के गुरु के साथ स्वगृही चन्द्रमा '**किम्बहुना नामक राजयोग**' बनाएगा अर्थात् इससे अधिक और क्या? ऐसा जातक सकारात्मक शक्ति से युक्त चक्रवर्ती सम्राट होता है।
3. **गुरु+मंगल**–उच्च के गुरु के साथ नीच का मंगल होने से '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य से परिपूर्ण वैभवशाली एवं पराक्रमी होगा।
4. **गुरु+बुध**–पराक्रमेश व खर्चेश बुध गुरु के साथ होने से जातक महान पराक्रमी एवं विद्वान, बुद्धिशाली होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र की युति लग्न स्थान में होने से जातक महान पराक्रमी एवं विलासी होगा। जातक स्वयं सुन्दर होगा। जीवनसाथी भी सुन्दर होगा।
6. **गुरु+शनि**–सप्तमेश+अष्टमेश शनि की युति गुरु के साथ लग्न में होने से जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
7. **गुरु+राहु**–भाग्येश गुरु के साथ लग्न में राहु जातक के भाग्योदय में हल्की रुकावट डालेगा।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु जातक को कीर्तिवान बनाएगा।

प्रथम भाव के गुरु का उपचार–

1. दान न लेना, अपनी किस्मत पर भरोसा रखना।
2. यदि परिवार में जब कोई डिग्री/डिप्लोमा लेगा गुरु अशुभ नहीं रहेगा।
3. पुखराज रत्न जड़ित सहित गुरु यंत्र गले में धारण करें।
4. मूंगा+मोती बीसा यंत्र में अभिमंत्रित कर धारण करें।

कर्क लग्न में गुरु द्वितीय भाव में



कर्क लग्न में द्वितीयस्थ गुरु सिंह राशि में मित्रक्षेत्री है। यह गुरु जातक की भाषा विनम्र एवं कुटुम्ब सुख उत्तम देता है। जातक की सन्तान उत्तम होती है।

विशेष–दूसरे भाव का कारक होकर दूसरे भाव में स्थित होने के कारण धन सम्बन्धी चिन्ता जातक को बनी

रहेगी। कुटुम्ब की जवाबदारी निभाने में धन खर्च होता चला जाएगा।

निशानी–भाग्येश होकर गुरु द्वितीयस्थ होने से जातक का भाग्य उत्तम होगा, जातक का पिता धनवान एवं प्रतिष्ठित होगा। पिता धार्मिक मनोवृत्ति वाला होगा, जातक के अपने पिता के साथ सम्बन्ध अच्छे रहेंगे परन्तु छठे भाव का स्वामी होकर गुरु भाग्य स्थान से छठे होने के कारण पिता की सम्पत्ति का लाभ जातक को नहीं होने देता।

रोग–छठे (रोग स्थान) स्थान का स्वामी होकर तथा द्वितीयस्थ बैठकर छठे भाव पर पूर्ण दृष्टि डालने के कारण जातक को पेट के रोग, कब्जी, सन्निपात, डायबीटिज, पेशाब सम्बन्धी रोग होंगे एवं गुप्त शत्रु भी बहुत होंगे।

गुरु की दृष्टि अष्टम स्थान पर होने के कारण जातक की मृत्यु शान्तिपूर्वक होगी। स्त्री जातक की कुण्डली में गुरु पति कारक सातवें भाव से आठवें स्थान पर होने कारण विवाह देरी से कराता है।

दशाफल–गुरु की दशा अच्छी जाएगी।

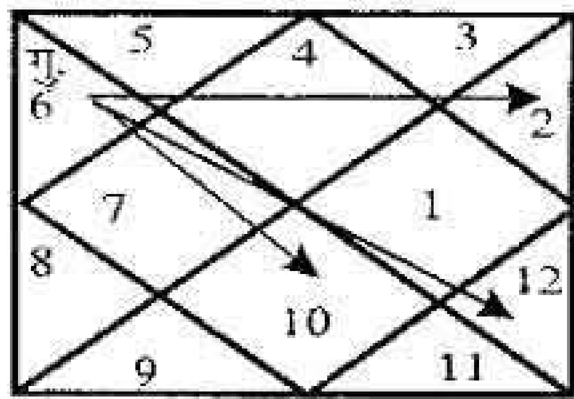
गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–बलवान धनेश के साथ भाग्येश+षष्टेश की युति से क्रमशः **शत्रुमूल धनयोग** एवं **पितृमूल धनयोग** की सृष्टि होगी। ऐसे जातक को पिता से धन मिलेगा। शत्रु से भी धन मिलेगा।
2. **गुरु+चन्द्र**–लग्नेश व भाग्येश की युति धन स्थान में जातक को भाग्यशाली बनाएगा। जातक को परिश्रम का फल मिलेगा।
3. **गुरु+मंगल**–यदि गुरु के साथ मंगल हो तो जातक को **'मुख दोष'** होगा। ऐसे जातक की वाणी अशुद्ध व कर्कश होगी। यदि यहां चन्द्रमा हो तो **'गजकेसरी योग'** के कारण जातक में शत्रुसंहार करने की विशेष क्षमता होगी।
4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ तृतीयेश+खर्चेश बुध धन स्थान में होने से व्यक्ति खर्चीले स्वभाव का होगा। उसकी वाणी सारगर्भित होगी।
5. **गुरु+शुक्र**–भाग्येश गुरु के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र की युति जातक को धन-धान्य, ऐश्वर्य से परिपूर्ण सुखी जीवन देगी।
6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि की युति द्वितीय स्थान में जातक को भाग्योदय विवाहोपरान्त कराएगी।
7. **गुरु+राहु**–भाग्येश गुरु के साथ धनस्थान में राहु होने से जातक फिजूलखर्च होगा तथा उसकी वाणी कर्कश रहेगी। **'चाण्डाल योग'** के कारण जातक अभक्ष्य भोजन कर सकता है।
8. **गुरु+केतु**–ऐसा जातक फिजूलखर्च तो होगा पर उसमें कंजूसी का पुट भी रहेगा।

द्वितीय भाव के गुरु का उपचार–

1. अपने घर का रास्ता साफ–स्वच्छ रखें।
2. मकान का कच्चा हिस्सा फौरन पक्का बनाएं।
3. केसर–चंदन का तिलक लगाना शुरु करें।
4. गुरु यंत्र पुखराज रत्न के साथ गले में धारण करें।

कर्क लग्न में गुरु तृतीय भाव में



यहां गुरु छठे व नवें भाव का स्वामी होकर कन्या राशि (बुध के घर) में है। ऐसे जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहता है। जातक के सिर पर कर्जा नहीं रहता तथा शत्रु नहीं होते।

भाग्येश होकर भाग्य भवन पर दृष्टि होने के कारण भाग्य उत्तम होगा। जातक का पिता धनवान एवं दीर्घायु वाला होगा। पिता से जातक के सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक के छोटे भाइयों से अच्छे सम्बन्ध रहेंगे।

भागीदारी, धंधे में यह गुरु शुभ फल देगा। मित्रों से मदद मिलती रहेगी। सन्तान उत्तम होगी।

विशेष–गुरु के साथ चन्द्रमा होने से **'गजकेसरी योग'** बनेगा। ऐसे जातक को पत्नी उत्तम मिलेगी। समय पर भाग्य साथ देगा।

दशाफल–गुरु की महादशा अच्छी जाएगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

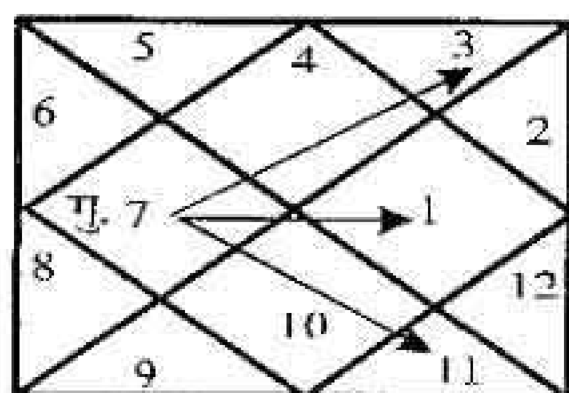
1. **गुरु+सूर्य**–भाग्येश गुरु के साथ धनेश सूर्य पराक्रम स्थान में जातक को पराक्रमी बनाएगा। जातक का जनसम्पर्क तेज होगा। जातक को मित्रों से लाभ होगा। बड़े भाई का सुख भी संभव है।
2. **गुरु+चन्द्र**–यहां भाग्येश गुरु की लग्नेश चन्द्र से युति जहां **'गजकेसरी योग'** बनाती है। वहां जातक पुरुषार्थी होगा तथा उसे हाथ में लिए गये प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।
3. **गुरु+मंगल**–भाग्येश गुरु के साथ पंचमेश+दशमेश मंगल की युति जातक को महान पराक्रमी बनाती है। जातक को तीन से पांच के मध्य भाई हो सकते हैं।
4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ पराक्रमेश बुध उच्च का होगा। ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी एवं यशस्वी होगा। जातक धनवान होगा। उसको भाई–बहन दोनों का सुख मिलेगा।
5. **गुरु+शुक्र**–भाग्येश गुरु के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र तृतीय स्थान में नीच का है। ऐसा जातक पराक्रमी तो होता है पर उसे स्त्री–मित्रों से बदनामी मिलेगी। ऐसे जातक को भाई–बहन दोनों का सुख प्राप्त होता है।

6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ शनि तृतीय स्थान में होने से जातक को पराक्रमी बनाएगा पर मित्रगण व रिश्तेदार पीठ पीछे निन्दा करेंगे।
7. **गुरु+राहु**–भाग्येश गुरु के साथ राहु जातक के परिजनों में विद्वेष पैदा करता है। मित्र दगाबाज होंगे।
8. **गुरु+केतु**–भाग्येश गुरु के साथ केतु जातक को कीर्ति एवं यश देगा। परन्तु समाज में पीठ पीछे उसकी बुराई होगी।

तृतीय भाव के गुरु का उपचार–

1. केसर-चंदन का तिलक लगाएं।
2. दुर्गा पूजन या कन्याओं को मीठा भोजन देकर आशीर्वाद लें।
3. गुरु यंत्र गले में धारण करें।

कर्क लग्न में गुरु चतुर्थ भाव में



गुरु तुला राशि का शत्रुक्षेत्री है पर गुरु केन्द्र में विद्या स्थान में होने के कारण जातक को उत्तम विद्या मिलेगी। माता का सुख अच्छा रहेगा। मकान एवं वाहन का सुख श्रेष्ठ रहेगा।

कुलदीपक योग–गुरु केन्द्र में होने के कारण ऐसा जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला, सबका चहेता व प्यारा होता है।

निशानी–जातक का जन्म ननिहाल में होगा। जातक का ननिहाल पक्ष, मातृपक्ष (मामा इत्यादि) सम्पन्न एवं धनी होंगे।

केसरी योग–गुरु केन्द्र में होने से यह योग बना। धनकारक गुरु केन्द्र में होने से जातक धनवान होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

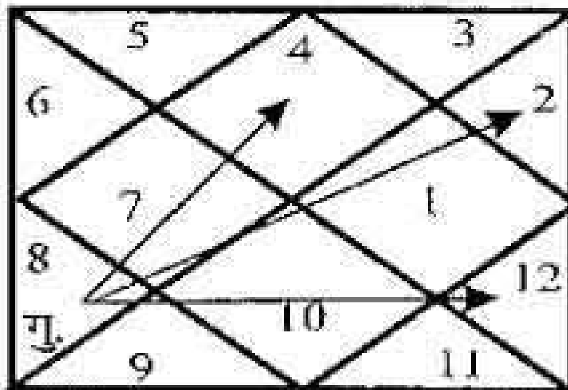
1. **गुरु+सूर्य**–भाग्येश गुरु के साथ धनेश सूर्य हो तो जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक के पास एक से अधिक मकान होंगे।
2. **गुरु+चन्द्र**–यदि गुरु के साथ चन्द्रमा हो तो **'गजकेसरी योग'**, यदि शुक्र भी साथ हो तो **'महाधनी योग'** और यदि सूर्य भी साथ हो तो गुरु+चन्द्र+शुक्र+सूर्य की इस चतुग्रह युति के कारण जातक करोड़पति होगा।
3. **गुरु+मंगल**–भाग्येश गुरु के साथ पंचमेश+दशमेश मंगल सुख स्थान में जातक को सरकार में ऊंचा पद-प्रतिष्ठा दिलाएगा।
4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ तृतीयेश+खर्चेश बुध चतुर्थ स्थान में जातक को एक से अधिक वाहन सुख देगा। जातक का मकान भव्य होगा।

5. **गुरु+शुक्र**–भाग्येश गुरु के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र की युति चतुर्थ स्थान में होने से **'मालव्य योग'** बनेगा। ऐसा जातक चार पहियों वाली गाड़ी का स्वामी होगा। जातक ऐश्वर्यशाली एवं वैभवशाली जीवन जीएगा।
6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ सप्तमेश शनि चतुर्थ भाव में उच्च का होगा। फलत: **'शशयोग'** बनेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं धनवान होगा तथा उत्तम भवन एवं वाहन का स्वामी होगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां गुरु के साथ राहु **'चाण्डाल योग'** बनाएगा। जातक भाग्यशाली होगा। उसके पास एक से अधिक नौकर होंगे। जातक धनवान होगा।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु उत्तम वैभव देगा। जातक कीर्तिवान होगा।

चतुर्थ भाव के गुरु का उपचार–

1. लाल बनियान या कच्छा पहनें।
2. बुजुर्गों के व्यापार से लाभ, बुजुर्गों की सेवा करें।
3. धर्म मंदिर में सिर झुकाना, पूजा–पाठ करें।
4. कुल पुरोहित एवं गुरु का आशीर्वाद लें।
5. पीपल का वृक्ष लगाएं या पीपल के वृक्ष को प्रति गुरुवार पानी सींचें।
6. सच्चा पुखराज यंत्र में जड़वाकर गले में धारण करें।

कर्क लग्न में गुरु पंचम भाव में



गुरु वृश्चिक राशि में मित्रक्षेत्री है। भाग्येश होकर त्रिकोण में बैठकर, भाग्यभवन पर पूर्ण दृष्टि होने के कारण जातक भाग्यशाली एवं धनवान होगा। उसके पिता से अच्छे सम्बन्ध रहेंगे।

गुरु की प्रथम भाव पर दृष्टि होने से जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होगा। जातक का शरीर स्वस्थ व सुन्दर होगा। जातक लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने में पूर्ण सफल होगा। यहां धनकारक गुरु की दृष्टि अपने उच्च स्थान की ओर होने के कारण जातक आर्थिक रूप से महत्वाकांक्षी एवं सफल होगा।

विशेष–एक मत के अनुसार जल राशि का गुरु (कर्क, वृश्चिक व मीन) अच्छा फल नहीं देता। गुरु पंचमस्थ होने से प्रथम तो संतान होगी नहीं, होगी तो पुत्र सन्तान सम्बन्धी चिन्ता सदैव बनी रहेगी।

छठे भाव का स्वामी होकर छठे भाव से बारहवें स्थान में होने के कारण जातक को रोग एवं शत्रु सताएंगे नहीं। पंचमस्थ गुरु जातक को भाषाशास्त्री, डॉक्टर, वकील, जज तथा अपने विषय का विद्वान बनाता है।

दशाफल–गुरु की दशा पूर्णत: शुभ फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

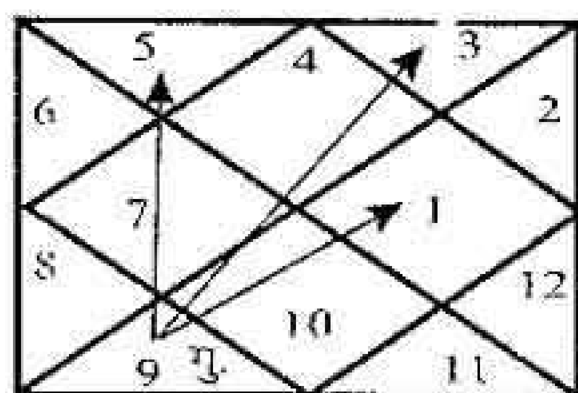
1. **गुरु+सूर्य**–भाग्येश गुरु के साथ धनेश सूर्य पंचम स्थान में शुभ फल देगा। ऐसा जातक विद्यावान, आध्यात्मिक क्षेत्र का प्रख्यात् विद्वान होगा। प्रथम पुत्र होगा। यदि ऑपरेशन न किया गया हो तो तीन से पांच पुत्र होंगे।
2. **गुरु+चन्द्र**–भाग्येश गुरु के साथ लग्नेश चन्द्र की युति '**गजकेसरी योग**' बनाएगी। ऐसा जातक भाग्यशाली होगा। उसे प्रथम कन्या संतति होगी। उसके जीवन में कोई काम धन की वजह से रुका नहीं रहेगा।
3. **गुरु+मंगल**–भाग्येश गुरु के साथ स्वगृही मंगल जातक को तीन से अधिक पुत्र देगा। जातक टैक्नीकल मैकेनिकल विद्या का जानकार होगा। बड़ी भूमि का स्वामी होगा।
4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ तृतीयेश+व्ययेश बुध की युति पंचम स्थान में जातक को उच्च शिक्षा Educational Degree दिलाएगा। जातक तंत्र-मंत्र, ज्योतिष व गूढ़ विद्याओं का ज्ञाता होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–भाग्येश गुरु के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र पंचम स्थान में जातक को आध्यात्मिक साथ-साथ अभिनय-संगीत-कला क्षेत्र में कीर्ति दिलाएगा।
6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि पंचम स्थान में जातक को विदेशी भाषा, विदेशी संस्कृति में दिलचस्पी पैदा करेगा। जातक को आयात-निर्यात के कार्यों में लाभ होगा।
7. **गुरु+राहु**–गुरु के साथ राहु उच्च विद्या में बाधक है। जातक **चाण्डाल योग** के कारण 'लक्ष्य-च्यूत' होगा। पुत्र संतान प्राप्ति में कष्ट हो सकता है।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु पंचम स्थान में थोड़े अवरोध के पश्चात् जातक को विद्या में सफलता देगा। जातक को एकाध गर्भपात हो सकता है।

पंचम भाव के गुरु का उपचार–

1. लंगर, धर्म स्थान का प्रसाद न लेना।
2. मुफ्त भोजन एवं माल से परहेज रखना।
3. सिर पर चोटी रखना।
4. साधु सज्जनों की सेवा करें, धर्मशाला-धर्म मंदिर की सफाई सेवा करें।
5. पुत्र संतति हेतु 'संतान गोपाल' स्तोत्र का पाठ करें।
6. उत्तम विद्या हेतु 'सरस्वती यंत्र' धारण करें।

कर्क लग्न में गुरु षष्टम भाव में

यहां षष्टेश गुरु स्वगृही होकर छठे स्थान में है फलत: जातक का ननिहाल पक्ष समृद्ध होगा। मामा पक्ष से जातक के अच्छे सम्बन्ध रहेंगे। जातक जिम्मेदार व जवाबदेह व्यक्ति होगा।



भाग्यभंग योग–भाग्येश होकर गुरु छठे जाने से भाग्यभंग योग बनाता है। जातक को भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। पिता के साथ उसके सम्बन्ध ठीक नहीं होंगे अथवा पैतृक सम्पत्ति विवाद का कारण बनेगी।

धन कारक होकर छठे स्थान में जाने से धन भाव पर दृष्टि होने से जातक आर्थिक तंगी एवं कर्ज की स्थिति में रहेगा पर धनेश सूर्य की स्थिति इस तथ्य को पुष्ट करेगी।

सन्तान कारक होकर पंचमभाव से दूसरे स्थान पर स्वगृही होने के कारण सन्तति उत्तम होगी। वहां पर बैठकर दशम एवं बारहवें भाव पर दृष्टि होने के कारण जातक की सामाजिक प्रतिष्ठा-स्थिति उत्तम रहेगी। जातक धार्मिक वृत्ति का होगा एवं धार्मिक कार्यों, मांगलिक प्रसंगों, तीर्थ यात्राओं व शुभ कार्यों में रुपया खर्च करेगा।

दशाफल–गुरु की दशा मिश्रित फल देगी।

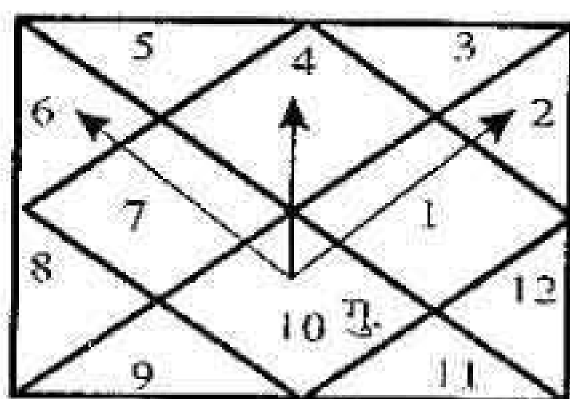
गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य छठे होने से '**धनहीन योग**' बनेगा। जातक को धन संग्रह हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
2. **गुरु+चन्द्र**–गुरु के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' बनेगा। यहां पर बना '**गजकेसरी योग**' ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक धनी व्यक्ति तो होगा परन्तु किसी भी कार्य में पहले प्रयास में सफलता नहीं मिलेगी।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ मंगल होने से '**विद्याहीन योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनेगा। जातक के जमीन को लेकर विवाद होगा तथा प्रारम्भिक विद्या में बाधा आएगी।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ बुध होने से '**पराक्रम भंगयोग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' भी बनेगा। फलतः जातक धनी होगा। उसके पास चार पहियों की गाड़ी होगी। पर मित्र ज्यादा वफादार नहीं होंगे।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनाएगा। ऐसे जातक को सुख प्राप्ति के समय कुछ न कुछ बाधा आती रहेगी। व्यापार में भी उतार-चढ़ाव आयेगी।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ शनि '**विलम्ब विवाह योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' दोनों बनाएगा। ऐसा जातक धनी एवं वैभवशाली होगा परन्तु गृहस्थ सुख देरी से मिलेगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां राहु शक्तिशाली होगा। ऐसा जातक शत्रु का मान-मर्दन करने में सक्षम होगा। '**चाण्डाल योग**' के कारण जातक का आचरण संदिग्ध होगा।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु गुप्त रोग एवं गुप्त शत्रुओं को उत्पन्न करेगा पर शत्रु कुछ बिगाड़ नहीं पाएंगे।

षष्टम भाव के गुरु का उपचार–

1. संतान के साथ या सलाह से व्यापार करना।
2. धर्म मंदिर के पुजारी को पीले वस्त्र देना।
3. पुखराज रत्न सोने में धारण करें।
4. पीला सुगन्धित रुमाल जेब में रखें।
5. गुरुवार को कथा-आरती उपवास करें।
6. गुरु कवच का नित्य पाठ करें।

कर्क लग्न में गुरु सप्तम भाव में



यहां भाग्येश गुरु केन्द्र में मकर राशि (नीच) गत होते हुए भी शुभ फल देगा। भाग्येश, भाग्य स्थान से ग्यारहवां होने से जातक को पिता की सम्पत्ति, कुल व प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। गुरु की दृष्टि एकादश भाव पर होने के कारण जातक को अपने धंधे-व्यापार में उत्तम लाभ मिलेगा।

कुलदीपक योग व केसरी योग–गुरु की स्थिति कुण्डली में कुलदीपक योग एवं केसरी योग की सृष्टि कर रही है। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करता है। जातक यशस्वी होता है। केसरी योग के कारण जातक जिस काम में हाथ डालेगा उसमें उसे लगातार सफलता मिलती चली जाएगी। सप्तमस्थ गुरु के कारण पत्नी धार्मिक एवं भीरू मनोवृत्ति वाली होगी। जातक की पत्नी पतिव्रता होगी एवं सुन्दर अंगों वाली होगी।

प्रथम भाव पर दृष्टि होने के कारण जातक स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होगा। तृतीय भाव पर दृष्टि होने के कारण जातक के जीवन में विशेष यात्रायोग बना रहेगा। भाई एवं भागीदारों के साथ सम्बन्ध सामान्य रहेंगे।

निशानी–ऐसा व्यक्ति अपनी जाति की कन्या से विवाह करता है।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

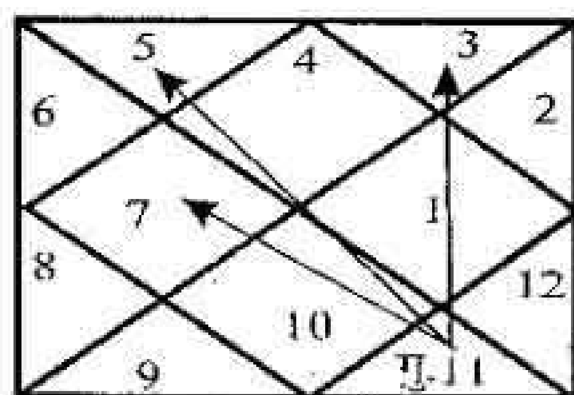
1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ धनेश सूर्य सप्तम भाव में जातक को सौभाग्यशाली बनाएगा। जातक धनी होगा।
2. **गुरु+चन्द्र**–गुरु के साथ चन्द्र हो तो '**लग्नाधिपति योग**', '**गजकेसरी योग**' बनेगा। जातक पराक्रमी होगा तथा उसकी पत्नी सुन्दर होगी।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ यदि मंगल हो तो '**नीचभंग राजयोग**' बनता है। **रुचक योग**' के कारण जातक राजा के समान तेजस्वी-यशस्वी, पराक्रमी होगा एवं बड़ी भूमि का स्वामी होगा।

4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ पराक्रमेश+खर्चेश बुध की युति शुभ है। ऐसे जातक का जीवन साथी वफादार, सुन्दर एवं प्रतिभावान होता है।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र हो तो जातक अपनी स्वजाति की कन्या से विवाह करता है। साथ ही **'शशयोग'** के कारण जातक राजा के समान पराक्रमी व यशस्वी होगा।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ यदि शनि हो तो **'नीचभंग राजरोग'** बनता है।
7. **गुरु+राहु**–सप्तम भाव में गुरु के साथ राहु **'चाण्डाल योग'** बनाता है। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होता है या विवाह के बाद पति-पत्नी में खटपट होती रहेगी।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु विवाह व गृहस्थ सुख में कुछ न्यूनता कराएगा।

सप्तम भाव के गुरु का उपचार–

1. रत्तियां (चिरमयां) पीले कपड़े में बांधकर रखना।
2. नशेबाज, साधु-फगड़ों से दूर रहना।
3. गुरुवार का व्रत रखें।
4. पुखराज रत्न धारण करें, गुरु यंत्र में।

कर्क लग्न में गुरु अष्टम भाव में



कर्क लग्न में कुम्भ का गुरु आठवें होने से सन्तान सम्बन्धी चिन्ता कराता है परन्तु छठे भाव का स्वामी होकर आठवें जाने से विपरीत राजयोग बनाता है। जातक पर कर्जा एवं रोग नहीं होगा तथा जातक अपने शत्रुओं का मान-मर्दन करने में पूर्ण सक्षम होगा। जातक के मातृपक्ष व नौकरों से सम्बन्ध अच्छे होंगे।

भाग्यभंग योग–भाग्येश होकर गुरु आठवें जाने से यह योग बना। जातक को भाग्योदय हेतु रुकावटों का सामना करना पड़ेगा। पिता की मृत्यु छोटी उम्र में होगी, जातक को पिता की सम्पत्ति प्राप्त करने में दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। गुरु की दृष्टि बारहवें स्थान पर होने के कारण जातक धार्मिक-सामाजिक एवं शुभ कार्यों में रुपया खर्च करेगा।

चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने के कारण मकान सुख, वाहन-सुख एवं माता का सुख पिता के बनिस्पत ठीक होगा।

दशाफल–गुरु की दशा मिला-जुला फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ यहां सूर्य होने से **'धनहीन योग'** बनेगा। जातक धनी होगा पर धन संग्रह हेतु उसे संघर्ष करना पड़ेगा।

2. **गुरु+चन्द्र**–गुरु के साथ यहां चंद्रमा जहां '**लग्नभंग योग**' बनाएगा। वहां '**गजकेसरी योग**' भी बनेगा। पर यह **गजकेसरी योग** ज्यादा सार्थक नहीं होगा। जातक धनी होगा पर उसका जीवन संघर्षपूर्ण रहेगा।

3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ मंगल यहां '**विद्याभंग योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनाएगा। जातक धनी होगा पर भाग्योदय हेतु उसे काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ पराक्रमेश बुध होने से '**पराक्रम भंगयोग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। ऐसा जातक चार पहियों वाली गाड़ी का स्वामी होता है। जातक के कुटम्बी एवं मित्रगण ज्यादा वफादार नहीं होंगे।

5. **गुरु+शुक्र**–भाग्येश गुरु के साथ सुखेश+लाभेश होने से सुखहीन योग एवं **लाभभंग योग** बनेगा। ऐसा जातक धनी व प्रतिष्ठित तो होगा पर जीवन में उतार-चढ़ाव बहुत आएंगे।

6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि '**विलम्ब विवाह योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' बनाता है। ऐसे जातक को वैवाहिक कष्ट रहेगा। जातक समर्थवान् एवं धनी होगा।

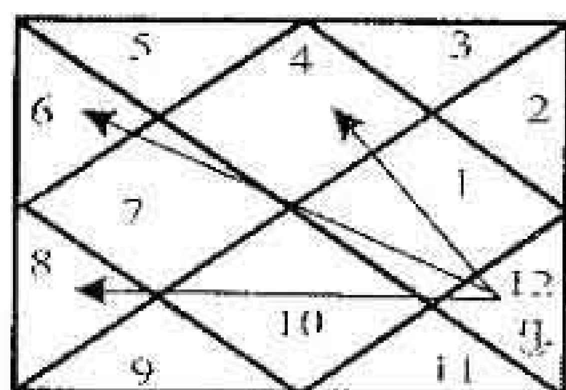
7. **गुरु+राहु**–गुरु के साथ राहु हड्डियों में चोट पहुंचाता है तथा गुप्त एवं प्रकट शत्रुओं से जातक को भयग्रस्त करता है।

8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु दाएं पांव में चोट पहुंचाता है या जातक को शारीरिक तकलीफ दिलाता है जिसका समाधान ऑपरेशन के माध्यम से होगा।

अष्टम भाव के गुरु का उपचार–

1. शरीर पर सोना पहनने से अच्छा होगा।
2. शुक्र की चीज घी, दही, आलू, कपूर धर्म स्थान पर दें, फकीर के बर्तन में दान डालें।
3. पुखराज रत्न जड़ित 'गुरु यंत्र' गले में धारण करें।
4. गुरुवार को व्रतकथा रखें।
5. गुरुवार के दिन श्मशान में पीपल के वृक्ष लगाएं और उसकी पालना करें।
6. गुरु कवच का नित्य पाठ करें।

कर्क लग्न में गुरु नवम भाव में



कर्क लग्न में मीन का गुरु नवम भाव में स्वगृही होने के कारण जातक भाग्यशाली होगा। जातक का पिता धार्मिक, राजनैतिक व सामाजिक दृष्टि से प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति विरासत में मिलेगी।

छठे भाव का स्वामी कोण में होने के कारण जातक ऋण, रोग व शत्रु पर सदा विजय प्राप्त करेगा।

लग्न पर स्वगृही गुरु की उच्च स्थान पर दृष्टि होने के कारण जातक दीर्घायु को प्राप्त करता हुआ सुन्दर, आकर्षक व स्वस्थ शरीर का स्वामी होगा।

तीसरे भाव पर स्वगृही गुरु की दृष्टि होने के कारण जातक का कण्ठ सुन्दर होगा। भाइयों से सम्बन्ध अच्छे हों एवं भागीदारी में लाभ होगा। पांचवे भाव पर दृष्टि के कारण जातक को सन्तान सुख उत्तम, सन्तान प्रभावशाली एवं आज्ञाकारी होगी।

दशाफल–गुरु की दशा, महादशा एवं अन्तरदशा भाग्योदयकारी साबित होगी।

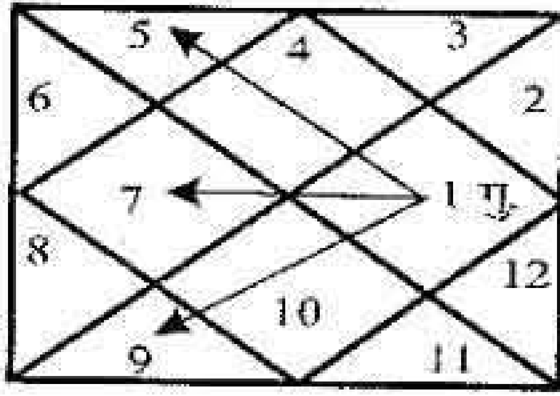
गुरु का अन्य ग्रहों का सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ धनेश सूर्य की युति जातक को पिता की सम्पत्ति दिलाएगी। जातक परम्परागत भूमि व सम्पत्ति का स्वामी होता है।
2. **गुरु+चन्द्र**–गुरु के साथ चन्द्रमा शक्तिशाली '**गजकेसरी योग**' बनाता है। ऐसा जातक परम सौभाग्यशाली, धनी व यशस्वी होता है। उसे माता-पिता द्वारा सम्पादित धन की प्राप्ति होती है।
3. **गुरु+मंगल**–भाग्येश गुरु के साथ स्वगृहाभिलाषी मंगल होने से जातक राजा के समान पराक्रमी, यशस्वी एवं धनवान होगा। जातक ग्राम का मुखिया, प्रधान व राजनेता होगा।
4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ '**नीचभंग राजयोग**' बनाएगा। जातक राजा के समान पराक्रमी, वैभवशाली एवं बुद्धिशाली होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ यदि शुक्र हो तो '**किम्बहुना योग**' बनता है। यदि गुरु के साथ चन्द्रमा हो तो '**गजकेसरी योग**' बनेगा। जातक की सन्तति पराक्रमी होगी जिससे कुल का गौरव बढ़ेगा।
6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ सप्तमेश शनि जातक का भाग्योदय विवाह के बाद कराता है।
7. **गुरु+राहु**–गुरु के साथ राहु जातक को प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी बनाता है। जातक साम-दाम-दण्ड-भेद हर प्रकार से काम करने में सफल होता है।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु जातक को शत्रुंजयी व्यक्तित्व प्रदान करता है।

नवम भाव के गुरु का उपचार–

1. गंगा स्नान करें, प्रत्येक जन्म दिन पर सफलतापूर्वक।
2. तीर्थयात्रा करना/करवाना।
3. झूठा वायदा न करना।
4. झूठा भोजन न खाना या खिलाना बुफे पार्टी से दूर रहें।
5. किसी के शामिल बैठकर भोजन न करें एवं बफर पार्टी में भाग न लें।
6. पुखराज पहने एवं गुरु की सेवा करें।

कर्क लग्न में गुरु दशम भाव में



कर्क लग्न में दशमस्थ मेष राशि का गुरु मित्रक्षेत्री होगा। जातक स्वयं के कारोबार-धंधे व्यापार का स्वामी होगा। वकील, जज, डाक्टर, सी.ए., इंजीनियर जैसे पद पर अधिष्ठित हो सकता है। छठे भाव का स्वामी होकर छठे भाव पर दृष्टि डालने के कारण जातक रोग, ऋण एवं शत्रु नाश करने में पूर्ण सक्षम एवं समर्थ होगा। ये तीनों इससे दूर रहेंगे।

कुलदीपक योग--जातक अपने परिवार व कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक सबका चहेता व प्यारा होगा है। यह गुरु **'केसरी योग'** कराता है। जातक मनुष्यों में सिंह जैसा पराक्रमी होगा।

भाग्येश होकर भाग्य भाव से दूसरे स्थान पर स्थित होकर धनभाव पर पूर्ण दृष्टि होने के कारण जातक जिस धंधे में हाथ डालेगा धन की सफलता उसके कदम चूमेगी।

इस गुरु की दृष्टि चौथे भाव पर होने के कारण जातक प्राप्त को माता का सुख, मकान का सुख, नौकर-चाकर का सुख व सन्तान सुख उत्तम होगा।

दशाफल–गुरु की दशा श्रेष्ठ जाएगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

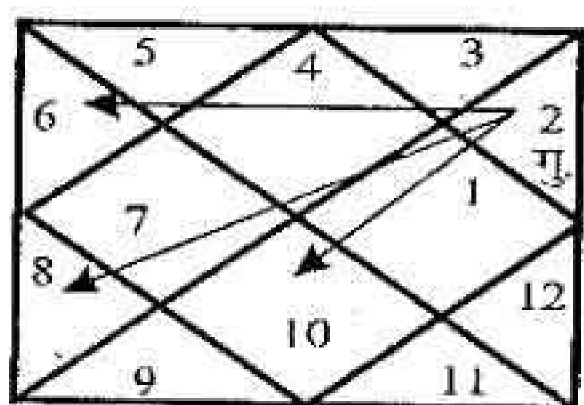
1. **गुरु+सूर्य**–यहां भाग्येश गुरु के साथ धनेश उच्च का होने से **'रविकृत राजयोग'** बनता है। जातक I.A.S. अधिकारी, मंत्री या राज-सरकार मे उच्च पद को प्राप्त करता है।
2. **गुरु+चन्द्र**–भाग्येश गुरु के साथ लग्नेश चन्द्रमा **'गजकेसरी योग'** बनाता है। ऐसा जातक प्रतापी राजा के समान प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।
3. **गुरु+मंगल**–भाग्येश गुरु के साथ स्वगृही मंगल **'रुचक योग'** बनाता है। ऐसा जातक बड़ी भूमि का स्वामी होकर राजा के समान पराक्रमी, धनी, होता है। जातक मंत्री या राजनेता होता है।
4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ पराक्रमेश बुध की युति जातक को महान पराक्रमी बनाएगा। जातक का जनसम्पर्क बहुत तेज होगा।
5. **गुरु+शुक्र**--भाग्येश गुरु के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र जातक को दो से अधिक मकान, दो से अधिक वाहन दिलाएगा।
6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ सप्तमेश शनि नीच का होगा। ऐसा जातक पराक्रमी होगा, प्रतिष्ठित होगा पर राजा से दण्डित होगा।
7. **गुरु+राहु**–गुरु के साथ राहु सरकारी असहयोग दिलाएगा। जातक को भाग्योदय हेतु अनेक प्रकार के धंधे करने होगे।

8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु राज-सरकार से सहयोग दिलाएगा। यहां केतु कीर्ति एवं बदनामी दोनों साथ-साथ होगी।

दशम भाव के गुरु का उपचार–

1. पीले वस्त्र एवं सोना न पहनें।
2. 40-43 दिन तांबें के पैसा चलते पानी में डाले तो पिता श्री के कष्ट दूर होगे। यह प्रयोग गुरुवार के प्रारम्भ करें।
3. गुरुवार का व्रत रखें।
4. पुखराज रत्न जड़ित 'गुरु यंत्र' धारण करें।

कर्क लग्न में गुरु एकादश भाव में



कर्क लग्न में एकादशस्थ वृषभ का गुरु शत्रुक्षेत्री होते हुए भी शुभ फल देगा। जातक धंधे, व्यापार में अच्छी उन्नति करेगा।

निशानी–जातक का बड़ा भाई नहीं होगा। छठे भाव का स्वामी होकर, छठे भाव से छठे स्थान में होने के कारण जातक को ऋण, रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा।

भाग्येश भाग्य भाव से तृतीय स्थान में होने के कारण जातक का पिता धार्मिक एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

इस जातक की कुण्डली में गुरु की दृष्टि तृतीय स्थान पर होने के कारण जातक के छोटे-भाई बहनों के साथ अच्छे सम्बन्ध होंगे। सन्तान भाव पर दृष्टि होने के कारण सन्तान उत्तम होगी पर पिता से अलग रहेगी।

सातवें भाव पर दृष्टि होने के कारण वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा। भागीदारों से धन लाभ भी होगा।

दशाफल–गुरु की दशा उत्तम फलदायक होगी। यदि बुध भी एकादश स्थान में हो तथा राहु, केतु या शनि पंचम भाव में हो तो 'फलदीपका' अ. 19/पृ. 375 के अनुसार राहु की महादशा में जातक को गंगा स्नान इत्यादि पुण्य फल, तीर्थ यात्रा का शुभ लाभ होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

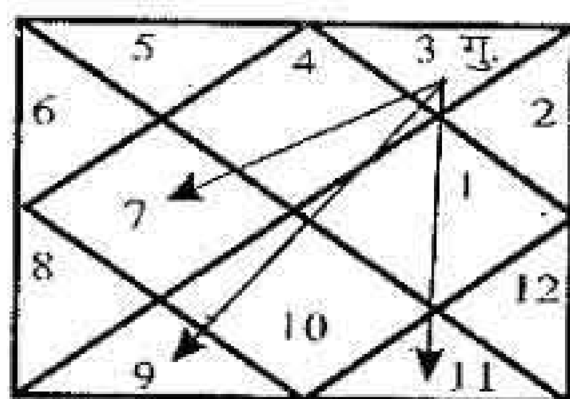
1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य जातक को व्यापार एवं नौकरी दोनों से लाभ दिलाएगा।
2. **गुरु+चन्द्र**–यहां चन्द्रमा उच्च का होकर '**गजकेसरी योग**' बनाएगा। जातक धनवान एवं उद्योगपति होगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **गुरु+मंगल**–भाग्येश गुरु के साथ दशमेश मंगल प्रथम पुत्र देगा। जातक को तीन से पांच के मध्य पुत्र होंगे। जातक उच्च शैक्षणिक उपाधि को प्राप्त करेगा।

4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ पराक्रमेश बुध जातक को महान पराक्रमी एवं बुद्धिशाली व्यक्तित्व का धनी बनाएगा।
5. **गुरु+शुक्र**–भाग्येश गुरु के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र स्वगृही होने से जातक उच्च श्रेणी का व्यापारी होगा। उसका जीवन सुखी व ऐश्वर्य से परिपूर्ण होगा।
6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ सप्तमेश शनि जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होने का संकेत देता है।
7. **गुरु+राहु**–गुरु के साथ राहु व्यापार में उतार चढ़ाव का संकेत देता है। जातक चलते व्यापार को बदलेगा।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु जातक के पराक्रम में वृद्धि करेगा। जातक को समाज में यश-कीर्ति मिलेगी।

एकादश भाव के गुरु का उपचार–

1. पीला सुगन्धित रुमाल पास रखें।
2. पिता के वस्त्र, चारपाई, वस्त्र, सोना का इस्तेमाल न करें।
3. लावारिश लाश को कफन ओढ़ाएं।
4. केसर-चंदन का तिलक करें।
5. पुखराज रत्न सुवर्ण धातु में अभिमंत्रित करके पहनें।

कर्क लग्न में गुरु द्वादश भाव में



कर्क लग्न में द्वादशस्थ गुरु मिथुन राशि का होने से ज्यादा शुभ फल नहीं देगा। जातक का पिता छोटी अवस्था में गुजर जाएगा अथवा जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। चौथे भाव पर दृष्टि होने के कारण माता, मकान, नौकर-चाकर एवं वाहन का सुख उत्तम होगा।

भाग्यभंग योग–भाग्येश होकर बारहवें स्थान पर जाने से यह योग बना। जातक को अपने भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष व दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। छठे भाव का स्वामी बारहवें स्थान पर बैठकर छठे भाव पर दृष्टि डालने के कारण छठे स्थान का शुभ फल नहीं देगा। जीवन में ऋण, रोग व शत्रु का भय बना रहेगा।

निशानी–धन की अस्थिरता बनी रहेगी। जातक को कान का रोग होने की सम्भावना है। जातक को सन्तान सम्बन्धी कोई न कोई चिन्ता लगी रहेगी। यदि मंगल की स्थिति अशुभ हो तो जातक पुत्र सुख से हीन होगा।

दशाफल–गुरु की महादशा, अंतर्दशा शुभ फल नहीं देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य होने से '**धनहीन योग**' बनेगा। जातक धनी तो होगा परन्तु धनसंग्रह हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।

2. **गुरु+चन्द्र**–गुरु के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' बनाएगा। यहां '**गजकेसरी योग**' बनेगा पर यह योग ज्यादा सार्थक नहीं होगा। ऐसा जातक यात्राओं से कमाएगा तथा वह परोपकारी एवं दानी होगा।
3. **गुरु+मंगल**–भाग्येश गुरु के साथ मंगल '**विद्याभंग योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनाएगा। ऐसे जातक को प्रारंभिक विद्या में रुकावटें आयेगी। राज-सरकार में अकारण परेशानियां आएगी।
4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ बुध होने से '**पराक्रमभंग योग**' बनेगा साथ ही व्ययेश व्यय भाव से स्वगृही होने से **विपरीत राजयोग** भी बनेगा। ऐसा जातक धनी होगा तथा चार पहियों की गाड़ी का स्वामी होगा। पर समाज में उसकी बदनामी भी होगी।
5. **गुरु+शुक्र**–भाग्येश गुरु के साथ शुक्र होने से '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनेगा। ऐसा जातक भौतिक सुख-संसाधनों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करेगा।
6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि होने से '**विलम्ब विवाह योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। ऐसा जातक धनी-मानी-अभिमानी होगा पर उसे गृहस्थ सुख देरी से मिलेगा।
7. **गुरु+राहु**–गुरु के साथ राहु जातक को व्यर्थ में भटकाएगा। जातक को आध्यात्मिक सिद्धि में बाधा आएगी। **चाण्डाल योग के कारण** जातक भक्ष्य-अभक्ष्य का ध्यान नहीं रख पाएगा।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु यात्रा में चोरी का संकेत देता है। जातक प्रायः अर्ध-नास्तिक होगा।

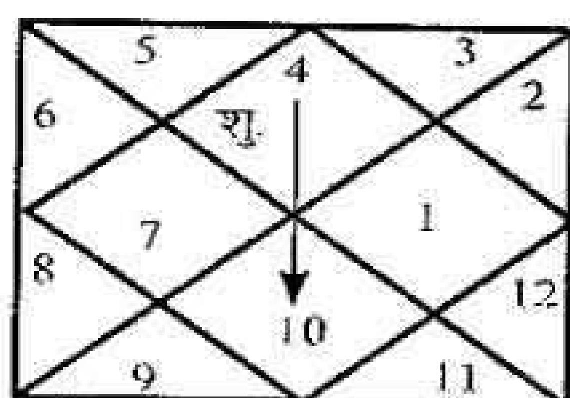
द्वादश भाव के गुरु का उपचार–

1. झूठी गवाही न दें, गहन न करें।
2. किसी के साथ विश्वासघात न करें।
3. गुरु, साधु या पीपल का नित्य सेवा करें।
4. गुरुवार का नियमित उपवास करें।
5. पुखराज पहनें, पुखराज के अभाव में हल्दी की गांठ पीले रंग के धागे में बांधें या सुनैला धारण करें।
6. चांदी का कटोरी से केसर-चंदन का तिलक करें।
7. शुद्ध सोना धारण करें।
8. गुरु कवच का नित्य पाठ करें।

❑❑❑

कर्क लग्न में शुक्र की स्थिति

कर्क लग्न में शुक्र प्रथम भाव में



कर्क लग्न के लिए शुक्र सुखेश व लाभेश है। शुक्र लग्न में **'कुलदीपक योग'** बना रहा है। शुक्र स्त्री राशि में होने के कारण शुभ है। ऐसा जातक दूसरों को तारने वाला, हंसमुख, आनन्दित व स्त्रियों को प्रिय लगने वाला होता है। इन्हें व्यवसाय में यश, सम्पत्ति व कीर्ति की प्राप्ति होती है।

निशानी–ऐसा जातक गौरवर्ण, सुन्दर व आकर्षक होता है। ऐसे जातक को वाहन सुख अवश्य मिलता है तथा जातक स्वपराक्रम से मकान अवश्य बनाता है।

विशेष–ऐसे जातक का अन्य स्त्रियों से सम्पर्क/संसर्ग अवश्य होता है।

दृष्टिफल–यहां से शुक्र सातवीं मित्र दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, जहां मकर राशि अवस्थित है। ऐसा जातक स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में खूब लाभ प्राप्त करता है।

दशाफल–शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। जातक की उन्नति व भाग्योदय होगा। शुक्र कर्क लग्न के लिए 'बाधक ग्रह' भी है। इस बात का ध्यान रखना चाहिए क्योंकि कर्क लग्न के लाभ स्थान में बैठा हुआ ग्रह अथवा लाभेश बाधक ग्रह कहलाता है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

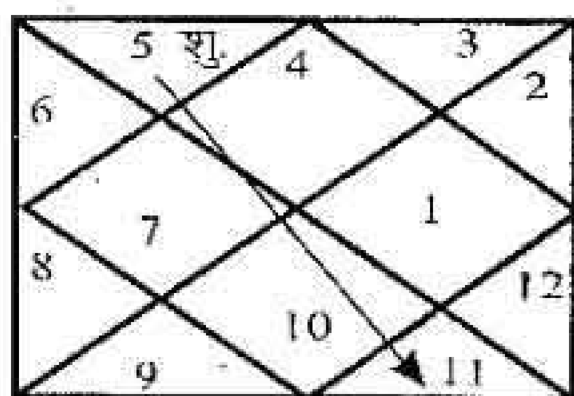
1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ धनेश सूर्य होने से जातक धनवान होगा। उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली तथा पत्नी सुन्दर होगी।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ लग्नेश चन्द्रमा स्वगृही होने से **'यामिनीनाथ योग'** बनाएगा। ऐसा जातक सुखी होगा। उसे माता का सुख, वाहन का सुख एवं मकान का सुख मिलेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ पंचमेश+दशमेश मंगल नीच का होगा। ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी होगा एवं शत्रुओं का मान-मर्दन करने में सक्षम होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ पराक्रमेश+व्ययेश बुध होने से जातक पराक्रमी होगा तथा स्वयं के बुद्धि बल से आगे बढ़ेगा।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ भाग्येश गुरु उच्च का होने से '**हंस योग**' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि होने से जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे। जातक जिद्दी व हठी होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक को लड़ाकू बनाएगा। '**लम्पट योग**' के कारण जातक व्याभिचारी होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से जातक क्रोधी एवं शत्रुंजयी होगा।

प्रथम भाव के शुक्र का उपचार–

1. शुक्र यंत्र गले में धारण करें।
2. चमकीले स्फटिक की माला पहनें।
3. शुक्र स्तवराज का पाठ करें।
4. क्रीम रंग का सुगन्धित रुमाल हर समय जेब में रखें।
5. इष्ट बल बढ़ाने हेतु देवी की उपासना करें।

कर्क लग्न में शुक्र द्वितीय भाव में



कर्क लग्न में शुक्र सिंह राशि में शत्रु क्षेत्री है। चौथे भाव से ग्यारहवें एवं ग्यारहवें भाव से चौथे स्थान पर स्थित होकर आठवें को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। यह मिश्रित फल देता है। जातक को माता का सुख प्राप्त होता है पर मां बीमारी रहती है। जातक को मकान का सुख मिलता है पर मकान से संतोष नहीं होता। नौकर का सुख होता है पर नौकर वफादार नहीं होता।

लाभेश के धन स्थान में होने से मित्र द्वारा धन लाभ, जातक की आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

निशानी–जातक की वकृत्व शक्ति ठीक होगी। आंख, नाक या मुंह में कोई रोग सम्भव है।

विशेष–'फलदीपिका अ. 19/प. 374 के अनुसार यहां शुक्र दूसरे स्थान पर होने से योगकारक है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ यहां धनेश सूर्य स्वगृही होने से '**मातृमूल धनयोग**' बनेगा। जातक को माता की सम्पत्ति या माता समान वृद्ध स्त्री की सम्पत्ति मिलेगी।

2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ लग्नेश चन्द्रमा होने से ऐसा जातक धनवान होगा। उसे परिश्रम का लाभ मिलेगा।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ पंचमेश+राज्येश मंगल जातक को बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी बनाएगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ पराक्रमेश+व्ययेश बुध होने से जातक का धन मित्रों के रख-रखाव में खर्च होगा।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ भाग्येश+षष्टेश गुरु धन स्थान में होने से जातक को अचानक धन मिलेगा एवं धन खर्च भी होता रहेगा। अर्थात् उतार-चढ़ाव बहुत आएंगे।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि होने से जातक को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। जातक का धन बीमारी में, पत्नी के रख-रखाव में खर्च होगा।

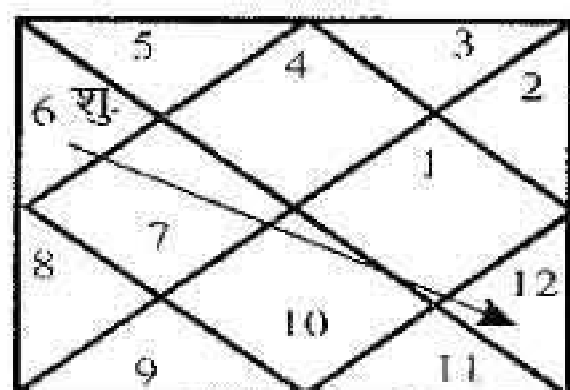
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु धन के घड़े में छेद है। जातक का धन संग्रहित नहीं हो पाएगा।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु आर्थिक विषमता का संकेत देता है।

द्वितीय भाव के शुक्र का उपचार–

1. शुक्रवार को क्रीम रंग के वस्त्र धारण करें।
2. चांदी के आभूषण अधिक पहनें।
3. चांदी की अंगूठी या कड़ा पहनें।
4. इत्र व सुगन्धित वस्तुओं का अधिक इस्तेमाल करें।
5. शुक्र यंत्र धारण करने से धन बढ़ेगा।
6. नवरत्न जड़ित 'श्रीयंत्र' सुवर्ण धातु में पहनें।
7. घर में क्रीम रंग के पर्दे व चादरों का इस्तेमाल करें।

कर्क लग्न में शुक्र तृतीय भाव में



कर्क लग्न में तृतीयस्थ शुक्र नीच का होकर ग्यारहवें भाव से पंचम एवं चौथे भाव से बारहवें होकर भाग्य भवन पर पूर्ण दृष्टि डाले हुए है। ऐसा जातक धार्मिक तथा मंत्र-विद्या का जानकार होता है। उसका कण्ठ उच्चारण स्पष्ट घोष वाला होता है। शुक्र नीच का होने से जातक बहुत कामुक होगा।

निशानी–जातक को मां का सुख पूर्ण नहीं मिलेगा। जातक की माता बीमार रहेगी। जातक का वैवाहिक जीवन पूर्ण सुखमय होगा। जातक का स्वयं अपनी बहनों से वफादारी की उम्मीद

रखना बेकार है।

सावधानी–मित्रों से सम्बन्ध रखते समय सावधानी बरतें क्योंकि पीठ पीछे बुराई होगी एवं मित्र धोखा दे सकते हैं।

दशाफल–शुक्र की दशा अच्छी जाएगी।

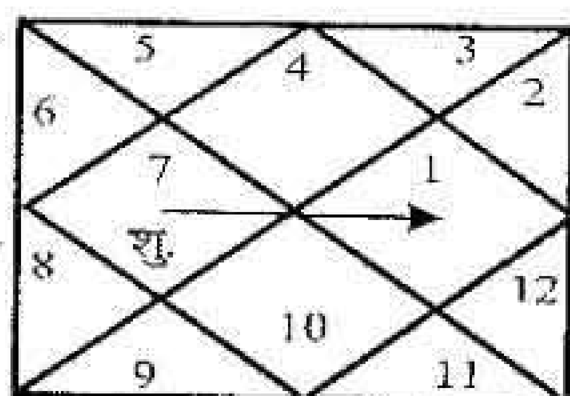
शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ धनेश सूर्य पराक्रम स्थान में जातक को भाई-बहन दोनों का सुख देता है। उसके भाई-बहन सम्पन्न होते हैं।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ लग्नेश चन्द्रमा बहनों की अधिकता देता है। जातक को स्त्री मित्र से लाभ होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ पंचमेश+राज्येश मंगल तीसरे स्थान में तीन भाई व तीन बहनों का सुख देता है। जातक के कुटम्बीगण सम्पन्न होंगे।
4. **शुक्र+बुध**–यदि शुक्र के साथ बुध हो तो यहां **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। शुक्र का अशुभत्व नष्ट हो जाएगा। जातक का पराक्रम, जनसम्पर्क तेज होगा। कुटुम्बीजनों, रिश्तेदारों की बनिस्बत मित्रों व समाज के अन्य लोगों से अधिक लाभ मिलेगा। जातक को लेखनी एवं प्रकाशन सम्बन्धी कार्यों से यश मिलेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ भाग्येश+षष्टेश गुरु पराक्रम स्थान में जातक को भाग्यशाली बनाता है पर कुटम्बी लोग ही जातक के शत्रु होंगे।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि पराक्रम स्थान में जातक को मित्रों से ईर्ष्या कराएगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ पराक्रम स्थान में राहु भाई-बहनों से झगड़ा कराएगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ पराक्रम स्थान में केतु जातक को कीर्ति देगा परन्तु बहनों से नहीं बनेगी। बुआ का सुख कमजोर होगा।

तृतीय भाव के शुक्र का उपचार–

1. घर से निकलते समय चीनी या मिष्ठान का सेवन करें।
2. दही-दूध, आलू का अधिक सेवन करें।
3. शुक्रवार को चांदी खरीदें।
4. शुक्र स्तवराज का पाठ करें।
5. क्रीम रंग का सुगन्धित रुमाल हर समय जेब में रखें।
6. शयन कक्ष की दीवारों में क्रीम रंग का इस्तेमाल करें।

कर्क लग्न में शुक्र चतुर्थ भाव में



कर्क लग्न में चतुर्थ भाव में स्थित शुक्र स्वगृही होगा। लाभेश का स्वगृही होकर केन्द्रस्थ होने से एवं दशम भाव पर दृष्टि होने से शुक्र का शुभ फल बहुत उत्तम रहेगा।

कुलदीपक योग–ऐसा जातक अपने कुटुम्ब, परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला सबका चहेता व प्यारा होता है।

मालव्य योग–स्वगृही शुक्र केन्द्र में होने से यह योग बना। यह पंचमहापुरुष योगों में से उत्तम योग है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता है। जातक को जीवन में भौतिक सुख-समृद्धि, वाहन एवं मकान का सुख, नौकर-चाकर का सुख पूर्ण प्राप्त होगा। जातक का दो-तीन मंजिला मकान होगा। मकान एक से अधिक होगा एवं कम से कम दो-चार नौकर होंगे।

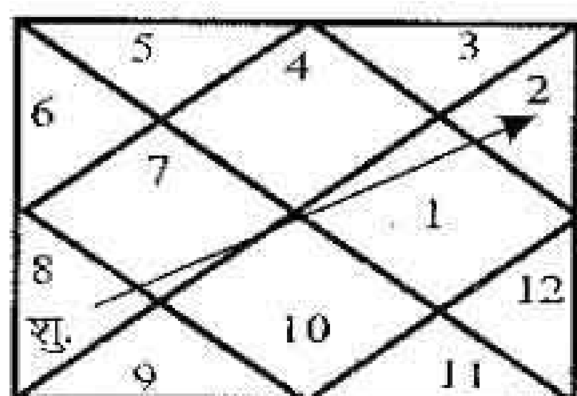
शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य हो तो **'नीचभंग राजयोग'** बनता है। जातक को मां से या भूमि से रुपया मिलेगा। व्यापार में लाभ अधिक होगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ लग्नेश चन्द्रमा जातक को माता का सुख, एक से अधिक वाहन का सुख देगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ पंचमेश+राज्येश मंगल होने से जातक के पास एक से अधिक बंगले होंगे। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी देगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ तृतीयेश+व्ययेश बुध केन्द्र में होने से जातक महान पराक्रमी होगा। उसके पास दो गाड़ियां चार पहियों वाली होंगी।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ भाग्येश+षष्टेश गुरु केन्द्र में जातक को उत्तम वाहन, भवन एवं नौकर-चाकर का सुख देगा पर गुप्त शत्रु बहुत होंगे।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि हो तो **'किम्बहुना योग'** बनता है। जातक को पानी से रुपया मिलेगा। गुप्त व्यापार से लाभ होगा। जातक उद्योगपति होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु विद्या प्राप्ति में बाधक है। तेज गति के वाहन से भय है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु विद्या में बाधा डालेगा। जातक को हृदय रोग होगा।
9. यहां सूर्य यदि स्वगृही या उच्च का हो तो जातक अपने कुटुम्ब में सबसे धनवान व्यक्ति होगा। परन्तु ऐसी स्थिति नहीं बनती क्योंकि गणितागणित स्पष्टीकरण से शुक्र के सामने सूर्य कभी आ ही नहीं सकता। हां, सिंह का सूर्य फिर भी हो सकता है। ऐसे व्यक्ति का जन्म सितम्बर माह में सूर्योदय के पूर्व प्रातः 4-5 बजे का होगा।

चतुर्थ भाव के शुक्र का उपचार–

1. अपने घर में सफेद व क्रीम रंग के पुष्पों के पौधे लगाएं।
2. शुक्रवार के दिन क्रीम रंग के कपड़े पहनें।
3. क्रीम रंग का सुगन्धित रुमाल हर समय जेब में रखें।
4. भौतिक सुख की उपलब्धि हेतु 'शुक्र अष्टोत्तर शत नामावली' का हवनात्मक प्रयोग करें।
5. वाहन क्रीम कलर का खरीदें।

कर्क लग्न में शुक्र पंचम भाव में



कर्क लग्न में शुक्र पांचवें स्थान पर वृश्चिक राशि का मित्रक्षेत्री होगा। यह शुक्र चौथे भाव से दूसरे स्थान पर एवं ग्यारहवें भाव से सातवें स्थान पर बैठ कर लाभ स्थान पर पूर्ण दृष्टि डालेगा। जातक मंत्र-तंत्र ज्योतिष एवं अध्यात्म विद्या का जानकार होगा। जातक को माता का सुख रहेगा। उत्तम मकान वाहन का सुख रहेगा। शुक्र मंगल क्षेत्री होने से जातक कामुक एवं रंगीन मिजाज का होगा।

निशानी–शुक्र पांचवें होने से जातक को कन्या सन्तति की बाहुल्यता रहेगी।

जातक व्यापारी होगा एवं व्यापार में अच्छा रुपया कमाएगा।

जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

जातक को प्रथम कन्या होगी।

यदि पुरुष ग्रह की पंचम भाव पर दृष्टि न हो तो जातक के छः कन्या होंगी।

दशा–शुक्र की दशा में भाग्योदय होगा। **'फलदीपिका'** अ. 19/पृ. 374 के अनुसार ऐसे जातक के लिए बुध की दशा भी योगकारक होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

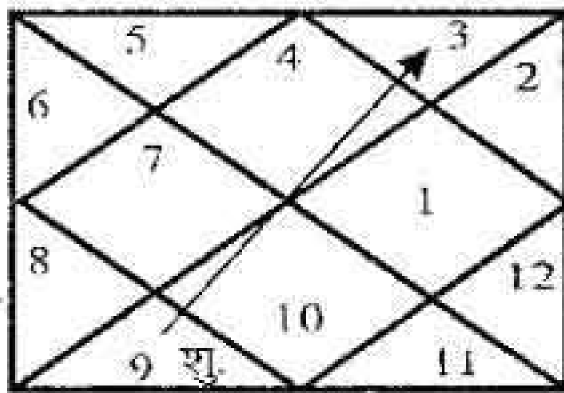
1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ धनेश सूर्य पंचम भाव में जातक को पुत्र संतति देगा। जातक विद्यावान होगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ लग्नेश चंद्रमा यहां नीच का होगा। जातक को विषभोजन का भय बना रहेगा। कला–अभिनय के क्षेत्र में जातक विशेष उन्नति करेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ पंचमेश मंगल यहां स्वगृही होगा। जातक के तीन पुत्र होंगे। जातक मैकेनिकल-टैक्नीकल लाईन का जानकार होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ तृतीयेश+खर्चेश बुध जातक को बुद्धिमान बनाएगा। जातक तंत्र-मंत्र का जानकार होगा।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ भाग्येश+षष्टेश गुरु पंचम स्थान में जातक को पुत्र संतति देगा। पांच पुत्रों की संभावना है। जातक अध्ययन-अध्यापन में रुचि लेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि जातक की विद्या प्राप्ति में एक बार रुकावट लाएगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु पुत्र संतान के सुख में बाधक है तथा वंश वृद्धि में रुकावट पैदा करता है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु संतति सुख में बाधक है तथा एकाध गर्भपात कराता है।
9. मंगल यदि केन्द्र में स्वगृही या उच्च का हो तो जातक का भाग्योदय प्रथम सन्तति के पश्चात् तेजी से होगा।

पंचम भाव के शुक्र का उपचार–

1. संतान प्राप्ति हेतु 'शुक्र यंत्र' धारण करें। यदि कन्या अधिक हों तो शुक्र यंत्र न पहनें।
2. विद्या में विशेष सफलता हेतु 'सरस्वती यंत्र' चांदी में पहनें।
3. शुक्र नामावली का पाठ करें।
4. क्रीम रंग का सुगंधित रुमाल हर समय जेब में रखें।
5. घर की दीवारों, पर्दों का रंग क्रीम रखें।

कर्क लग्न में शुक्र षष्टम भाव में



कर्क लग्न में शुक्र छठे स्थान पर धनु राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। जातक के शत्रु बहुत होंगे पर शत्रुओं पर विजय मिलेगी।

विवाह का कारक होकर शुक्र छठे होने पर एवं सातवें भाव से बारहवें स्थान पर होने से वैवाहिक जीवन सुखी नहीं होगा। जातक दूसरी स्त्रियों में अपने काम की तृप्ति ढूंढ़ेगा। जातक को पेशाब में शक्कर की बीमारी (डायबीटिज) होगी।

लाभभंग योग–लाभेश छठे स्थान में होने से एवं लाभ भाव से शुक्र आठवें स्थान पर होने से यह योग बना। जातक को व्यापार में अच्छा लाभ नहीं होगा।

सुखहीन योग–सुखेश छठे स्थान में जाने से यह योग बना। सुख में कमी रहेगी। वाहन सुख सन्तोषकारी नहीं रहेगा। जातक मकान बदलता रहेगा।

सावधानी–बुरी सोहबत से जातक व्यसनी हो जाएगा, अतः बुरे दोस्तों के संग से बचें अन्यथा गुप्त बीमारी घातक साबित होगी।

दशा–शुक्र की दशा कष्टकारक, रोगकारक होगी। कर्क लग्न वालों के लिए शुक्र बाधक ग्रह भी है। इसका ध्यान रखना चाहिए।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

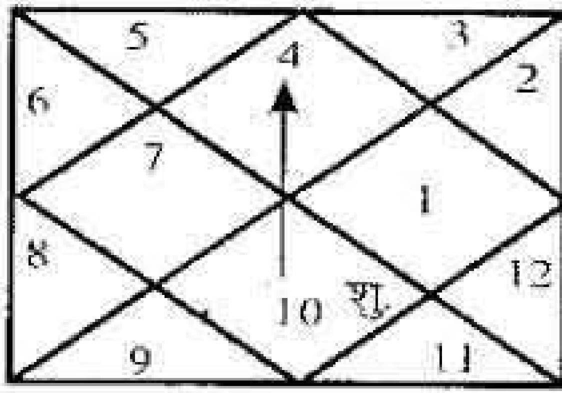
1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ धनेश सूर्य होने से '**धनहीन योग**' बनेगा। जातक को भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ लग्नेश चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' बनाएगा। जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ पंचमेश+राज्येश मंगल होने से '**विद्याभंग योग**' एवं '**राज्यभंग योग**' बनेगा। ऐसे जातक को नौकरी हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ पराक्रमेश+खर्चेश बुध होने से '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। ऐसा जातक धनवान होगा पर प्रतिष्ठा (मान) भंग होने का भय बना रहेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ षष्टेश+भाग्येश गुरु होने से '**विपरीत राजयोग**' एवं '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। ऐसा जातक धनी होगा पर भाग्योदय आसानी से नहीं होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि होने से '**विलम्ब विवाह योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। ऐसा जातक धनी होगा पर विवाह देरी से होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु होने से जातक रोग एवं शत्रु पर विजय पाने में पूर्ण सक्षम होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से जातक को गुप्त शत्रु एवं गुप्त रोग का भय रहेगा।

प्रथम भाव के शुक्र का उपचार–

1. राजयोग को मजबूत करने के लिए 'शुक्र यंत्र' धारण करें।
2. शुक्रवार को व्रता-कथा, कर्पूर आरती करें।
3. 'शुक्र कवच' का नित्य पाठ करें।
4. घर से निकलते समय राई के दाने मुंह में डालकर बाहर निकलें।
5. शुक्रवार के दिन अग्निकोण (SE) की ओर यात्रा न करें।
6. शुक्रवार को नमक और खटाई पूर्णत: वर्जित हैं।

कर्क लग्न में शुक्र सप्तम भाव में

कर्क लग्न में शुक्र सातवें होने से मकर राशि का मित्रक्षेत्री है। चौथे भाव से केन्द्र में ग्यारहवें भाव से कोण (नवमें) में होने से शुक्र अत्यन्त शुभ फलदाई है। जातक दिखने में खूबसूरत एवं आकर्षक होगा। जातक को माता एवं मकान का सुख उत्तम होगा। **कुलदीपक**



योग–ऐसा जातक अपने परिवार-कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला सबका चहेता व प्यारा होगा।

निशानी–लाभेश, लाभ स्थान से नवें में होने से जातक व्यापारप्रिय होगा एवं व्यापार में अच्छा कमाएगा।

जातक पराई स्त्रियों में ज्यादा रुचि रखेगा, पर विवाह स्वजाति में करेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

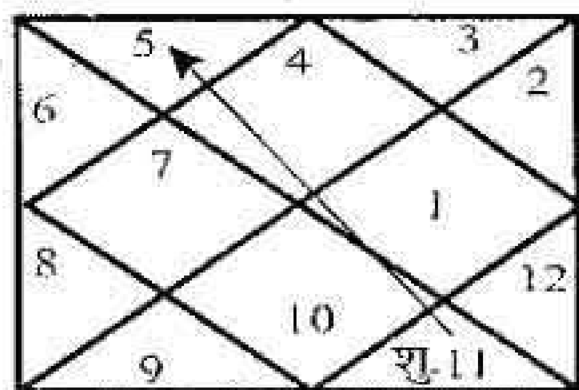
1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी पर पति-पत्नी के विचारों में मतभेद रहेगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–यदि शुक्र के साथ चन्द्रमा हो तो **'लग्नाधिपति योग'** बनता है। जातक को परिश्रम का फल मिलेगा। पत्नी रूप की रानी होगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल उच्च का होकर **'रुचक योग'** बनाएगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा। किस्मत विवाह के बाद चमकेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से जातक पराक्रमी होगा। बुद्धिमान होगा। जीवनसाथी सुन्दर होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु हो तो व्यक्ति अपनी जाति की कन्या से विवाह करेगा। विवाह के बाद किस्मत चमकेगी।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि **'शशयोग'** बनाएगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यवान् होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु गृहस्थ सुख में बाधक है। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु विवाह में विलम्ब कराता है। पति-पत्नी में वैचारिक मतभेद होगा।

सप्तम भाव के शुक्र का उपचार–

1. वैवाहिक सुख हेतु 'शुक्र यंत्र' धारण करें।
2. तुलसी के पौधे को चांदी के बर्तन में जल लेकर सींचे।
3. चमकीले स्फटिक की माला पहनें।
4. गृहस्थ सुख हेतु हीरे की अंगूठी व आभूषण पहनें।
5. श्रीयंत्र के चारों ओर नव हीरे या जिरकान जड़वाकर गले में धारण करें।

कर्क लग्न में शुक्र अष्टम भाव में

कर्क लग्न में शुक्र अष्टम स्थान में कुम्भ राशि का होकर मित्रक्षेत्री होगा। यह शुक्र चौथे भाव से कोण में, तथा ग्याहरवें भाव से दसवें होकर धन स्थान पर दृष्टि डाल रहा है। यह



शुक्र जातक को बुद्धिमान एवं विद्यवान बनाता है। परन्तु विद्या में एकाध बार रुकावट जरूर आती है।

निशानी–जातक पुराने मकान में मरम्मत करवा कर रहेगा। जातक को डायबिटीज होगी।

लाभभंग योग–लाभेश होकर शुक्र आठवें जाने से यह योग बना। ऐसे जातक को लाभ रुक-रुक कर होता है।

सुखहीन योग–सुखेश होकर शुक्र आठवें जाने से यह योग बन रहा है। ऐसे जातक छोटी उम्र में अपने भाई-बहन को खो देते हैं। शुरु में छोटे होते हैं पर मध्य आयु में पहुंचते-पहुंचते स्वयं परिवार के बड़े मुखिया हो जाते हैं।

दशा–शुक्र की दशा अच्छी नहीं जाएगी। अष्टमस्थ इस शुक्र को यदि कोई पाप ग्रह देखता हो तो जातक परिजात अ.5/श्लोक 89 के अनुसार जातक की मृत्यु क्षयरोग, प्रमेह से होगी। शुक्र की दशा में जातक को बीमारी लगेगी। कर्क लग्न वालों के लिए शुक्र बाधक ग्रह है। इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

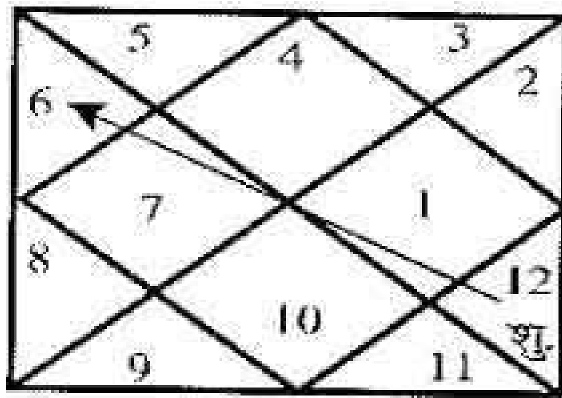
1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य '**धनहीन योग**' बनाएगा। जातक का रुपया मुकदमेबाजी या शत्रुओं का मुकाबला करने में खर्च होगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' बनाएगा। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल '**संतानहीन योग**' एवं '**राज्यभंग योग**' बनाएगा। ऐसे जातक को विद्या में बाधा, संतति व नौकरी विलम्ब से लगेगी।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' बनाएगा। ऐसा जातक धनी होगा। जातक मकान-वाहन सुख से सम्पन्न होगा पर मानभंग होने का खतरा बना रहेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु होने से '**भाग्यभंग योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' दोनों बनाएगा। ऐसा जातक सौभाग्यशाली एवं धनी होगा पर काफी संघर्ष के बाद।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि '**विपरीत राजयोग**' बनाएगा। जातक धनी होगा पर '**विलम्ब विवाह योग**' के कारण विवाह सुख देरी से मिलेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु गुप्त रोग बनाएगा। जातक की आयु को खतरा है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक के जीवन काल में शल्य चिकित्सा जरूर कराएगा।

अष्टम भाव के शुक्र का उपचार–

1. राजयोग को मजबूत करने के लिए 'शुक्र यंत्र' धारण करें।

2. शुक्रवार को व्रत-कथा तथा कर्पूर, आरती करें।
3. 'शुक्र कवच' का नित्य पाठ करें।
4. घर से निकलते समय राई के दाने मुंह में डालकर बाहर निकलें।
5. शुक्रवार के दिन अग्नि कोण (SE) की ओर यात्रा न करें।
6. शुक्रवार को नमक और खटाई पूर्णत: वर्जित है।

कर्क लग्न में शुक्र नवम भाव में



कर्क लग्न में नवम भावस्थ शुक्र उच्च का होता है। यह चौथे भाव से छठे एवं ग्यारहवें भाव से ग्यारहवें होकर तीसरे भाव पर पूर्ण दृष्टि से देखा रहा है। ऐसे जातक को पिता की सम्पत्ति मिलती है। जातक का पिता धार्मिक, प्रतिष्ठित एवं अत्यधिक धन-दौलत वाला होता है। जातक की माता अच्छी होगी। जातक को उत्तम वाहन एवं उत्तम मकान का सुख मिलेगा।

निशानी–जातक को मित्र एवं बड़े भाई साहब से लाभ होगा।

विशेष–कर्क लग्न वालों के लिए शुक्र लाभेश होने के कारण बाधक ग्रह है पर लाभ स्थान में कोई अन्य ग्रह होगा तो वह बाधक ग्रह कहलाएगा; शुक्र नहीं।

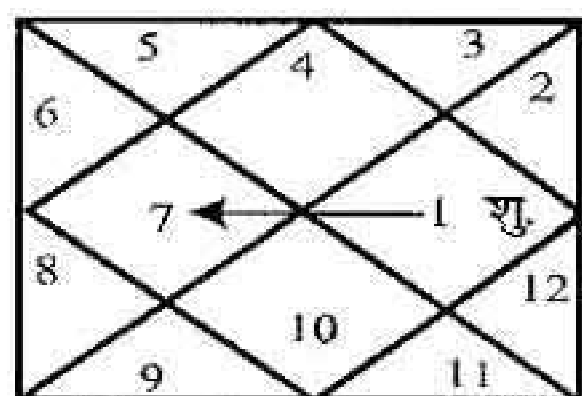
शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य व्यक्ति को धनवान एवं सभी प्रकार के ऐश्वर्यशाली संसाधनों से युक्त जीवन देगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ लग्नेश चन्द्रमा जातक को परिश्रम का समुचित लाभ देगा। जातक क्रियाशील एवं सौन्दर्य प्रेमी होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ पंचमेश+राज्येश मंगल व्यक्ति को बड़ी भूमि एवं भवन का स्वामी बनाएगा। उसे पैतृक सम्पत्ति भी मिलेगी।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ पराक्रमेश बुध **'नीचभंग राजयोग'** बनाएगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी तथा बुद्धिमान होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु होने से **'किम्बहुना योग'** बनता है अर्थात् इससे अधिक और क्या? जातक परम धार्मिक, परम दयालु, परम परोपकारी होता हुआ राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि जातक का भाग्योदय विवाह के बाद कराएगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक के भाग्योदय में बाधा का कार्य करेगा। फिर भी जातक धार्मिक एवं नीतिवान होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को उन्नति के चरम शिखर पर पहुंचाएगा।

नवम भाव के शुक्र का उपचार–

1. भाग्योदय हेतु 'शुक्र यंत्र' शीघ्र पहनें।
2. हीरे की अंगूठी व हीरे के आभूषण अधिकाधिक पहनें।
3. शीघ्र भाग्योदय हेतु शुक्र अष्टोत्तर शत नामावली का हवनात्मक प्रयोग करें।
4. नवरत्न जड़ित श्रीयंत्र धातु में पहनें।
5. नव हीरा जडित श्रीयंत्र गले में धारण करें।
6. वाहन क्रीम रंग का खरीदें तो उन्नति होगी।

कर्क लग्न में शुक्र दशम भाव में



कर्क लग्न में शुक्र दसवें स्थान में मेष राशिगत होकर मित्रक्षेत्री होगा। चौथे भाव से सातवें स्थान पर, एकादश भाव से बारहवें स्थान पर होकर चतुर्थ भाव अपने ही घर को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है।

ऐसे जातक को शुक्र के धंधे से लाभ होता है। जातक ऐश्वर्यशाली वस्तुओं का व्यापारी, हीरा–मोती, जवाहरात, स्वर्ण आभूषण, रत्न, केमीकल, स्त्री रोग विशेषज्ञ एवं कलात्मक वस्तुओं का पारखी, एक्सपोर्ट–इम्पोर्ट के विदेशी कारोबार से लाभ प्राप्त करने वाला व्यक्ति होता है।

निशानी–जातक के बड़े भाई-बहन से सम्बन्ध अच्छे नहीं होते। जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होगा।

दशा–शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। कर्क लग्न वालों के लिए शुक्र बाधक ग्रह है, इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य यहां उच्च का होकर '**रविकृत राजयोग**' बनाएगा। जातक उच्च नौकरी या व्यापार करेगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ लग्नेश चन्द्रमां जातक को व्यापार में उन्नति देगा। ऐसा जातक धनवान होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल यहां '**रुचक योग**' एवं '**पद्मसिंहासन योग**' बनाएगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से व्यक्ति महान पराक्रमी तथा बुद्धिशाली होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ भाग्येश॰षष्टेश गुरु होने से व्यक्ति परम सौभाग्यशाली होगा। पर प्रत्येक कार्य में एक बार अड़चन जरुर आएगी।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ सप्तमेश॰अष्टमेश शनि यहां नीच का होगा। ऐसा जातक पराक्रमी तो होगा पर पत्नी से कम निभेगी।

7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु राजकार्य की पूर्ण सफलता में बाधक है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु राजकार्य की प्रगति में अवरोधक है। फिर भी जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम व समर्थ होगा।

दशम भाव के शुक्र का उपचार–

1. राजयोग व नौकरी हेतु 'शुक्र यंत्र' धारण करें।
2. व्यापार लाभ हेतु नवरत्न जड़ित श्रीयंत्र पहनें।
3. हीरे की अंगूठी व हीरे के आभूषण अधिकाधिक पहनें।
4. शीघ्र राज्यसुख की प्राप्ति हेतु शुक्र अष्टोत्तर शत नामावली का हवनात्मक प्रयोग करें।
5. कनकधारा यंत्र+श्रीयंत्र+कुबेर यंत्र सुनहरी फ्रेम में जड़वाकर स्थापित करें।
6. घर की दीवारों पर क्रीम रंग का इस्तेमाल करें।

कर्क लग्न में शुक्र एकादश भाव में

5 4 3 2 शु. 6 7 1 8 12 10 9 11

कर्क लग्न में शुक्र एकादश भाव में होने से स्वगृही होगा। चौथे भाव से आठवें एवं पांचवें पर दृष्टि होने से शुक्र जातक को आर्थिक लाभ देगा। जातक को उत्तम मित्र एवं श्रेष्ठ पड़ौसी मिलेंगे।

जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा। जीवनसाथी वफादार एवं पुण्यवान होगा।

निशानी–जातक को माता का सुख तो होगा पर मां बीमार रहेगी। जातक की प्रथम संतान कन्या होगी। जातक को कन्या सन्तति की बाहुल्यता रहेगी।

विशेष–जातक पारिजात के अनुसार कर्क लग्न वालों के लिए शुक्र की यह स्थिति 'बाधक ग्रह' का काम करेगी। बाधक ग्रह अपनी दशा में जातक की उन्नति में बाधक होता है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

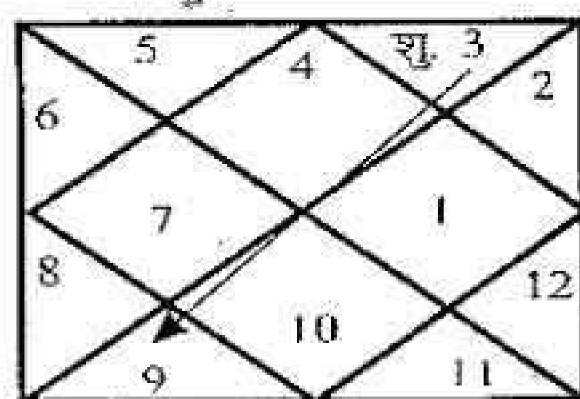
1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ धनेश सूर्य होने से जातक महान् धनी होगा। ऐसा जातक पुत्रवान जरूर होगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–यदि शुक्र के साथ चन्द्रमा हो तो **'किम्बहुना योग'** बनता है। इससे अधिक और क्या? ऐसा जातक उच्च कोटि का उद्योगपति किंवा व्यापारी होता है तथा व्यापार में खूब धन कमाता है।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ पंचमेश+राज्येश मंगल जातक को उद्योगपति बनाएगा। जातक के तीन पुत्र होंगे।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ तृतीयेश+व्ययेश बुध की युति से जातक कुशल व्यापारी होगा पर व्यापार में उतार-चढ़ाव आता रहेगा। जातक के कन्याएं अधिक होंगी।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ भाग्येश+षष्टेश गुरु लाभ स्थान में होने से जातक भाग्यशूर होगा। जातक के पुत्र पराक्रमी होंगे पर उनके जीवन में शत्रु भी होंगे जो समय-समय पर परेशान करेंगे।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि लाभ स्थान में जातक को शूरवीर बनाएगा। जातक व्यापार प्रिय होगा। प्राय: जीवन का प्रारंभ प्राईवेट नौकरी से होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ यहां राहु व्यापारिक लाभ को तोड़ेगा तथा संतान सुख में व्यवधान उत्पन्न करेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ यहां केतु वंशवृद्धि में बाधक है। व्यापार में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे।

एकादश भाव के शुक्र का उपचार–

1. व्यापार लाभ हेतु 'शुक्र यंत्र' धारण करें।
2. शुक्रवार के दिन चांदी के बर्तन से तुलसी में जल सींचें।
3. कनकधारा यंत्र+श्रीयंत्र+कुबेर यंत्र सुनहरी फ्रेम में जड़वाकर स्थापित करें।
4. वाहन क्रीम रंग का खरीदें।
5. ऑफिस में क्रीम रंग का फर्नीचर बनवाएं।

कर्क लग्न में शुक्र द्वादश भाव में



कर्क लग्न में द्वादशस्थ शुक्र मिथुन राशि में होगा। शुक्र की दृष्टि छठे भाव पर होने से जातक उड़ाऊ व खर्चीले स्वभाव का होगा।

सुखहीन योग–सुखेश शुक्र बारहवें होने से यह योग बना। ऐसे जातक की माता छोटी उम्र में गुजर जाएगी या बीमार रहेगी। माता से जातक के संबंध मधुर नहीं होंगे।

लाभभंग योग–जातक को मकान का, वाहन का सुख उत्तम मिलेगा। परन्तु मकान एवं वाहन की सुख संतोषजनक नहीं होगा।

द्वादश शुक्र योग–जातक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेगा। फलदीपिका अ. 19/पृ. 374 के अनुसार शुक्र की यह स्थिति विशेष योगकारक है।

नेत्र विकार–जातक को बाईं आंख में विकार हो सकता है।

दशा–शुक्र की दशा जातक के लिए लाभकारी नहीं होगी। क्योंकि 'कर्क लग्न' वालों के लिए शुक्र बाधक ग्रह का कार्य करेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य यहां '**धनहीन योग**' बनाता है। यह धन पीड़ा एवं नेत्र पीड़ा दोनों को दर्शाता है।

2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ चन्द्रमा यहां '**लग्नभंग योग**' बनाएगा। ऐसे जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। वामनेत्र में पीड़ा-व्याधि रहेगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ यहां मंगल क्रमशः '**विद्याभंग योग**' एवं '**राज्यभंग योग**' बनाता है। ऐसे जातक को प्रारंभिक विद्या में बाधा आती है। सरकारी नौकरी प्राप्त करने में परेशानी आती है।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध यहां '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' दोनों बनाता है। जातक धनी तथा वैभव सम्पन्न होगा परन्तु मान भंग होने का भय बना रहेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु क्रमशः '**भाग्यभंग योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' दोनों बनाएगा। जातक धनी, पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा पर संघर्ष बहुत करना पड़ेगा। प्रथम प्रयास में सफलता नहीं मिलेगी।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से '**विलम्ब विवाह योग**' बनता है साथ ही '**विपरीत राजयोग**' भी बनता है। जातक का विवाह देरी से होगा पर विवाह के बाद किस्मत चमकेगी।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु होने से जातक के '**लम्पट योग**' बनता है। जातक व्यभिचारी होगा। जातक विदेश जाएगा एवं विदेशी कन्या से विवाह करेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से जातक देशाटन, तीर्थाटन में रुचि लेगा तथा विदेशी व्यापार से (Export-Import) से धन कमाएगा।

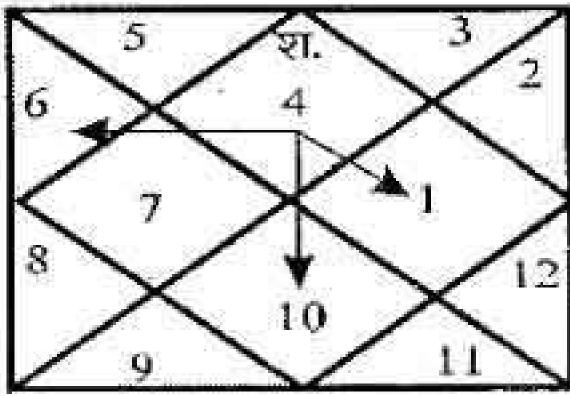
द्वादश भाव के शुक्र का उपचार–

1. राजयोग को मजबूत करने के लिए 'शुक्रयंत्र' धारण करें।
2. शुक्रवार को व्रत-कथा आरती करें।
3. 'शुक्र कवच' का नित्य पाठ करें।
4. शुक्रवार के दिन अग्नि कोण (SE) की ओर यात्रा न करें।
5. शुक्रवार को नमक और खटाई पूर्णतः वर्जित है।
6. किसी की जमानत न दें एवं रुपया किसी को उधार न दें।

❑❑❑

कर्क लग्न में शनि की स्थिति

कर्क लग्न में शनि प्रथम भाव में



कर्क लग्न में सातवें एवं आठवें घर का स्वामी होने से शनि मारक है। शनि की दृष्टि में विष, भय एवं अलगाववाद की मनोवृत्ति है। यहां पर जलराशि में बैठकर शनि तीसरे, सातवें एवं दसवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

निशानी–ऐसे जातक के जीवन में भाग्योदय का अवसर 26 वें वर्ष में या 36 वें वर्ष के मध्य होता है तथा आयु के 25 वें एवं 31 वें वर्ष आर्थिक विषमता, नुकसान व संघर्ष के भय होते हैं।

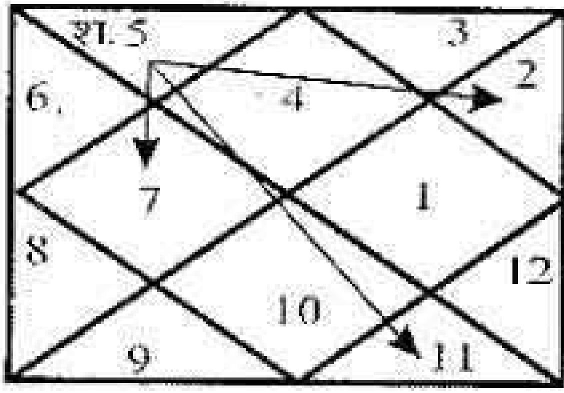
व्यवहार–ये लोग कुछ मधुरभाषी होते हैं। ऐसे जातक अन्तकरण में ईर्ष्यालु स्वभाव के होते हैं तथा अपने से बड़े या वरिष्ठ अधिकारी से झगड़े कर उन्नति प्राप्त करते हैं। यद्यपि इनका स्वभाव अच्छा होता है पर इनमें स्वार्थी प्रवृत्ति कुछ विशेष होती है।

रोग–इनको सर्दी–जुकाम, खांसी व दमे की शिकायत रहती है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. कर्क लग्नस्थ शनि की दृष्टि जिन–जिन स्थानों पर है, उन–उन स्थानों में सूर्य या राहु में से कोई भी ग्रह वहां बैठा हो तो जातक को उस भाव के शुभ फल से वंचित कर देगा, अर्थात् यदि तीसरे भाव में राहु या सूर्य हो तो जातक को भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा।
2. यदि सातवें स्थान में राहु या सूर्य हो तो जातक को जीवनसाथी का सुख नहीं मिलेगा।
3. यदि दसवें स्थान में राहु या सूर्य हो तो जातक को पिता का सुख, राज्य का सुख नहीं मिलेगा।

कर्क लग्न में शनि द्वितीय भाव में



कर्क लग्न में द्वितीयस्थ शनि सिंह राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। सातवें भाव से आठवें एवं आठवें भाव से सातवें स्थान पर रहकर शनि चौथे, आठवें एवं ग्यारहवें भाव को पूर्ण दृष्टि में देखेगा।

यह शनि कुटुम्ब सुख में न्यूनता देता है। जातक के कुटुम्बीगण जातक के शुभचिन्तक नहीं होंगे। जातक को नेत्र पीड़ा, दांत की पीड़ा एवं धनी की कमी मध्यम आयु तक होती हैं तथा उसकी भाषा ओछी होती है। सप्तमेश होकर सातवें भाव से आठवें होने के कारण पत्नी से विचारों में मतऐक्यता नहीं रहेगी।

निशानी–जातक की माता बीमार रहेगी। जातक का बड़े भाई से सम्बन्ध अच्छा नहीं रहेगा। भागीदार से सम्बन्ध तनाव पूर्ण रहेंगे। शनि जातक को आकस्मिक धन भी देता है।

दशा–शनि की दशा मारक होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

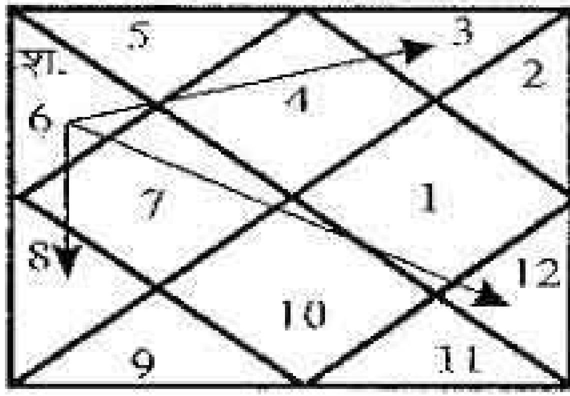
1. **शनि+सूर्य**–शनि के साथ सूर्य हो तो–'**कलत्रमूल धनयोग**' बनेगा। जातक का ससुराल धनवान होगा। जातक को पत्नी एवं ससुराल की सम्पत्ति मिलेगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है।
2. **शनि+चन्द्र**–लग्नेश व सप्तमेश+अष्टमेश की युति धन स्थान में विवाह के बाद जातक की उन्नति होने का संकेत देती है।
3. **शनि+मंगल**–पंचमेश+दसमेश की युति सप्तमेश+अष्टमेश के साथ धन स्थान में धनार्जन में सहायक है। जातक विवाह के बाद धनी एवं प्रथम पुत्र संतति के बाद महाधनी होगा।
4. **शनि+बुध**–तृतीयेश+खर्चेश बुध की युति सप्तमेश+अष्टमेश शनि के साथ धन स्थान में धन की अपव्यय कराएगी।
5. **शनि+गुरु**–षष्टेश+भाग्येश गुरु की युति सप्तमेश+अष्टमेश शनि के साथ धन स्थान में होने से विवाह के बाद जातक का भाग्योदय कराएगी।
6. **शनि+शुक्र**–लाभेश+सुखेश शुक्र की युति सप्तमेश+अष्टमेश शनि के साथ धन स्थान में होने से जातक का धन वाहन इत्यादि के रख-रखाव में खर्च कराएगी।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु धनहानि कराता है तथा धन का संग्रह नहीं होने देता।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु धन की बरकत में बाधक है।

द्वितीय भाव के शनि का उपचार–

1. नवरत्न जडित 'श्रीयत्र' का लॉकेट पहनने से आर्थिक विषमताएं दूर होंगी।

2. दाम्पत्य सुख हेतु शनि भार्या स्तोत्र का पाठ करें।

कर्क लग्न में शनि तृतीय भाव में



कर्क लग्न में तीसरे स्थान पर कन्या का शनि मित्रक्षेत्री होगा। यह शनि सातवें भाव से सातवें कोण में और आठवें भाव से आठवें स्थान पर बैठकर पंचम भाव, नवमभाव और द्वादश भाव पर दृष्टि डालेगा। यह शनि वैवाहिक सुख तो उत्तम देगा पर शयन सुख में बाधक का कार्य करेगा।

जातक को सभी प्रकार की भौतिक सुख-सुविधा, उत्तम होते हुए भी उसका पूरा आनंद नहीं मिलेगा। जातक की आयु लम्बी होगी पर वृद्धावस्था अच्छी नहीं होगी।

जातक डरपोक स्वभाव का होगा तथा छोटे भाई-बहनों से अच्छे सम्बन्ध नहीं रख पाएगा।

निशानी–

1. जातक के अध्ययन में बाधा आकर पढ़ाई अधूरी छूट जाएगी।
2. सन्तान प्राप्ति में तकलीफ होगी।
3. जातक अंधविश्वास का विरोधी होगा।
4. जातक व्यर्थ की चिन्ताएं अधिक करेगा। जिससे नींद कम आएगी।

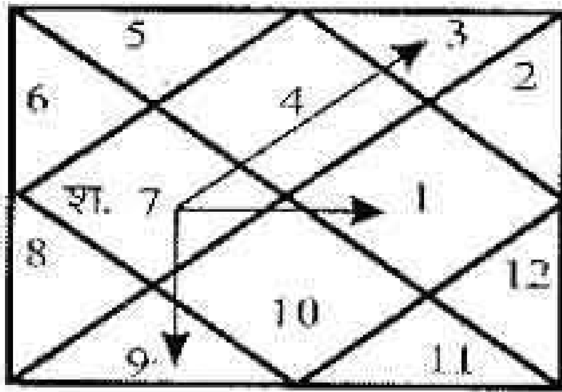
दशा–शनि की दशा मिश्रित फल देगी। ऐसा मीठा फल जिसका अन्त कड़वा होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यदि शनि के साथ सूर्य हो तो जातक का बड़ा भाई गुजर जाएगा एवं जातक स्वयं परिवार का मुखिया बन जाएगा।
2. **शनि+चन्द्र**–लग्नेश चंद्रमा सप्तमेश के साथ तृतीय स्थान में होने से जातक का पराक्रम विवाह के बाद बढ़ेगा।
3. **शनि+मंगल**–पंचमेश+दशमेश मंगल के साथ शनि होने से जातक को भाइयों से लाभ रहेगा परन्तु मित्रों से अधिक लाभ रहेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध हो तो जातक छोटे भाई-बहनों की सहायता करेगा तथा अनजान व्यक्ति की सहायता भी करेगा।
5. **शनि+गुरु**–भाग्येश+षष्टेश गुरु शनि के साथ तृतीय स्थान में होने से विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा।

6. यदि शनि के साथ और कोई पाप ग्रह हो तो जातक 'भातृद्वेषी' होगा।

कर्क लग्न में शनि चतुर्थ भाव में



कर्क लग्न में चतुर्थ भाव में स्थित शनि उच्च का होगा। जातक को मकान-वाहन का सुख उत्तम होगा। जातक पर कर्जा नहीं होगा। जातक के शत्रु स्वत: ही नष्ट होते रहेंगे।

शशयोग–शनि केन्द्र में उच्च का होने के कारण **'शशयोग'** बनता है। जो पंच महापुरुष योगों में से एक उत्तम योग है। सप्तमेश उच्च का होने से जातक का जीवनसाथी उच्च कुटुम्ब परिवार से होगा। जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा। जातक नौकर-चाकर, बंगला-गाड़ी ऐश-आराम में परिपूर्ण जीवन जीएगा।

निशानी–

1. विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
2. जातक व्यापार के माध्यम से खूब रुपया कमाएगा।
3. जातक विदेश जाएगा तो खूब रुपया कमाएगा।

विशेष–एक्सपोर्ट–इम्पोर्ट व हैण्डीक्राफ्ट के धंधे में जातक को लाभ होता है।

दशा–शनि की दशा शुभ फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–शनि के साथ यदि सूर्य हो तो **'नीचभंगराजयोग'** बनता है। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। जातक को ससुराल की सम्पत्ति विरासत में मिलेगी।
2. **शनि+चन्द्र**–लग्नेश चन्द्रमा केन्द्र में शनि के साथ होने से जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक का निजी भवन, निजी वाहन उत्तम श्रेणी का होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल होने से जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा। जातक का ससुराल धनी व प्रतिष्ठित होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध होने से जातक पराक्रमी तथा कुल का दीपक होगा। अपने कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ भाग्येश गुरु होने से **'केसरी योग'**, **'कुलदीपक योग'** बनेगा। ऐसा जातक परिवार का प्रेमी व अतिभाग्यशाली होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ यदि शुक्र हो तो **'किम्बहुना योग'** बनता है। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु **'मान्दी योग'** बनाएगा। जातक को माता का सुख नहीं मिलेगा। वाहन से दुर्घटना होगी।

चतुर्थ भाव के शनि का उपचार–

1. उपाय संख्या 83 से 97 के मध्य कोई पांच उपाय करें।
2. शनि चालीसा एवं नवग्रह स्तोत्र पढ़ें।
3. नीलम 5.25 कैरट का धारण करें।

कर्क लग्न में शनि पंचम भाव में

कर्क लग्न में शनि पंचम भाव में वृश्चिक राशि का शत्रुक्षेत्री है। परन्तु सप्तमेश होकर पंचम भाव में बैठ कर अपने घर (सप्तम भाव) पर पूर्ण दृष्टि होने के कारण जातक को जीवनसाथी शक्तिशाली व धनाढ्य मिलेगा। ससुराल से आर्थिक लाभ एवं ससुराल पक्ष सदैव मददगार रहेगा।

निशानी–

1. जातक का विवाह देरी से होगा। जीवनसाथी से खटपट रहेगी।
2. सन्तान सम्बन्धी कोई न कोई चिन्ता जातक को जीवन में लगी रहेगी।
3. जातक को व्यापार में लाभ होगा परन्तु उधार दिए गए रुपयों का डूबने का अन्देशा बराबर लगा रहेगा।
4. जातक के स्वयं के विद्याध्ययन में बाधा आएगी।

दशा–शनि दशा सामान्य रहेगी। सावधानी रखने योग्य है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनेश सूर्य की सप्तमेश शनि के साथ युति होने से जातक को ससुराल की सम्पत्ति मिलेगी पर विवाद रहेगा क्योंकि शनि अष्टमेश है।
2. **शनि+चन्द्र**–लग्नेश चन्द्र की सप्तमेश शनि के साथ पंचम में युति होने से जातक स्वपराक्रम से आगे बढ़ेगा तथा सफलता प्राप्त करेगा।
3. **शनि+मंगल**–पंचमेश+राज्येश मंगल स्वगृही होकर शनि के साथ होने से जातक को तीन पुत्र देगा। पुत्र जन्म के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
4. **शनि+बुध**–तृतीयेश+खर्चेश बुध शनि के साथ होने से जातक के विद्याध्ययन में संघर्ष रहेगा। संतति पर रुपया खर्च होता रहेगा।

5. **शनि+गुरु**–भाग्येश+षष्टेश गुरु पंचम भाव में शनि के साथ होने से विद्या द्वारा भाग्योदय, पुत्र संतति द्वारा जातक का भाग्योदय होगा।

6. **शनि+शुक्र**–सुखेश+लाभेश शुक्र, शनि के साथ पंचम स्थान में होने से जातक को गुप्त व्यापार–समझौता से लाभ होगा।

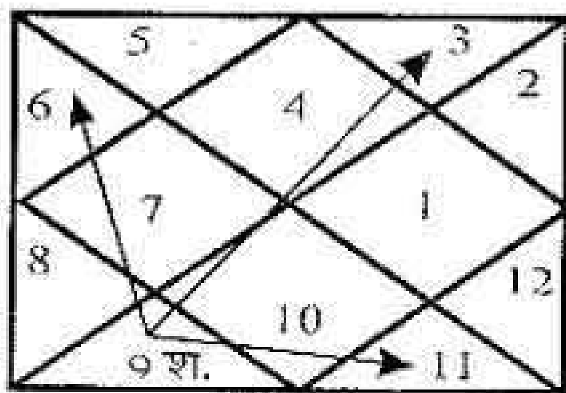
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु होने से विद्या में बाधा व रुकावट रहेगी। संतान अवज्ञाकारक होगी।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु होने से जातक के पुत्र आवारा होंगे।

पंचम भाव के शनि का उपचार–

1. संतान गोपाल का पाठ करें।

कर्क लग्न में शनि षष्टम भाव में



कर्क लग्न में शनि के छठे धनु राशि में बैठकर आयु भाव को देखने से जातक की आयु लम्बी होगी। छठे भाव में स्थित शनि शत्रुओं का नाश करने में पूर्णतः सक्षम है। धन के मामले में जातक व्यावहारिक होगा। जातक पर कर्जा नहीं होगा। शनि स्वगृहाभिलाषी होने में जातक महत्वाकांक्षी होगा। जातक के छोटे भाई से सम्बन्ध मधुर नहीं होंगे।

निशानी–नुक्कड़ का मकान, जातक कानून का जानकार, धर्म-अध्यात्म, ज्योतिष एवं मन्त्र-तन्त्र विद्या में रुचि रखने वाला होगा। शनि की द्वादश भाव दृष्टि होने के कारण जातक फिजूल खर्च होगा। जातक विकलांग हो सकता है।

कलत्रहीन योग–सप्तमेश के छठे जाने से एवं शनि सातवें भाव में बारहवें स्थान पर स्थित होने के कारण यह योग पुष्ट होता है।

प्रथमतः तो जातक की सगाई, विवाह में विघ्न आएगा, विलम्ब हो या न हो, यदि देवकृपा से विवाह हो जाए तो पत्नी का पूर्ण सुख प्राप्त नहीं होगा। पत्नी घर से भाग जाएगी, तलाक हो जाए या पत्नी की मृत्यु पहले हो जाएगी।

दशा–शनि की दशा अशुभ फल देगी, सावधानी रखें एवं उपाय करें।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनेश सूर्य शनि के साथ छठे होने पर '**धनहीन योग**' बनता है। गुप्त समझौतों से धोखा मिलेगा।

2. **शनि+चन्द्र**–लग्नेश चन्द्रमा शनि के साथ छठे होने से '**लग्नभंग योग**' बनेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। जातक निराशावादी होगा।

3. **शनि+मंगल**–पंचमेश+दशमेश मंगल शनि के साथ छठे होने से संतान एवं विद्या पक्ष में बाधा आएगी। गुप्त समझौते भंग होंगे।

4. **शनि+बुध**–पराक्रमेश+खर्चेश बुध छठे स्थान में शनि के साथ होने से पराक्रम भंग होगा। जातक बदनाम होगा।

5. **शनि+गुरु**–भाग्येश+षष्टेश गुरु शनि के साथ छठे होने से '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। भाग्योदय में बाधा आएगी।

6. **शनि+शुक्र**–सुखेश+लाभेश शुक्र छठे होने से सुखभंग योग बनेगा। सुख प्राप्ति में निरन्तर बाधा, व्यापार में बाधा आएगी।

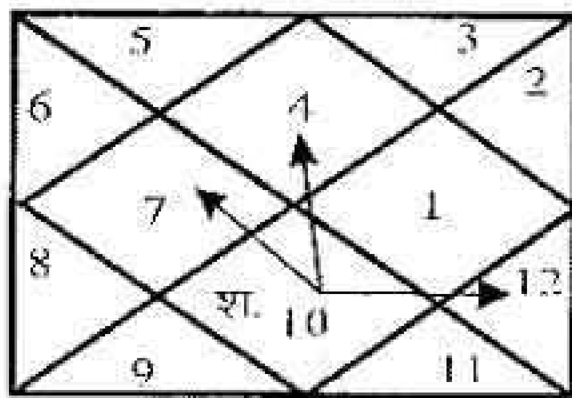
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु पत्नी सुख में बाधक है। जातक के जीवनसाथी की मृत्यु पहले होगी।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु पत्नी को असाध्य बीमारी देगा।

षष्टम भाव के शनि का उपचार–

1. शनिकवच, महाकाल शनि मृत्युंजय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
2. बजरंग बाण का पाठ करें।

कर्क लग्न में शनि सप्तम भाव में



कर्क लग्न में शनि सातवें स्थान में होने से स्वगृही होगा तथा चतुर्थ स्थान, लग्न स्थान एवं भाग्यस्थान पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक अत्यन्त धनी, राज्याधिकारी एवं शक्तिशाली होगा। जातक दीर्घायु वाला एवं ईर्ष्यालु एवं प्रतिक्रियावादी होता है। जातक उच्च कोटि का समाज सेवी होगा।

शशयोग–शनि केन्द्र में स्वगृही होने से यह योग बना है। यह पंच महापुरुष योगों में उत्तम योग है। जातक को सभी प्रकार की भौतिक सुख–सुविधाएं उपलब्ध रहती हैं। वह बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होता है। वाहन सुख उत्तम पर वाहन पुराना होगा।

निशानी–जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक दिखने में ज्यादा सुन्दर नहीं होगा। कुछ श्यामल छाया जातक के शरीर पर होगी। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।

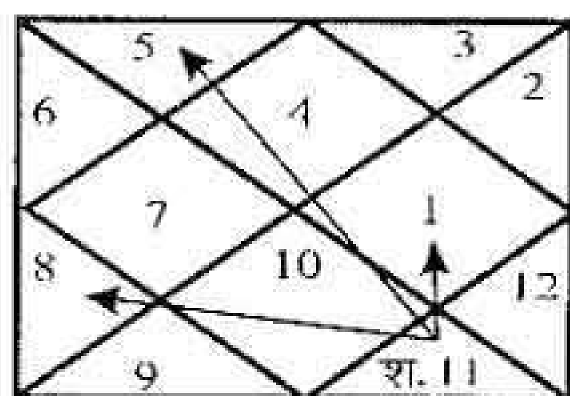
ऐसा जातक अन्य जाति की कन्या से विवाह करता है।

दशा–शनि दशा ठीक जाएगी पर उसमें सूर्य या शुक्र का अन्तर मारक होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनेश सूर्य शनि के साथ होने से पत्नी व ससुराल से निश्चय धन मिलेगा।
2. **शनि+चन्द्र**–शनि के साथ यदि चन्द्रमा हो तो **'लग्नाधिपति योग'** बनता है।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ यदि मंगल हो तो **'किम्बहुना योग'** बनता है। ऐसा जातक साक्षात राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली होता है पर 'कुजयुते' शिश्न चुम्बन पर अत्यन्त कामी होने के कारण जातक गुप्तांगों के साथ खेलता है और उनका चुम्बन करता है।
4. **शनि+बुध**–खर्चेश+पराक्रमेश बुध शनि के साथ सप्तम में होने से जातक की पत्नी बुद्धिमान एवं पराक्रमी होगी।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ यदि गुरु हो तो **'नीचभंग राजयोग'** बनता है।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र हो तो 'शुक्रयुते भग चुम्बनपर:' (सत्यजातकम्) जातक पशु की तरह स्त्री का भग चुम्बन करेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु गृहस्थ सुख में बाधक है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ यदि केतु हो तो **'केतु युते स्त्री सम्भोगी'** (सत्यजातकम्) जातक पराई स्त्रियों के साथ सम्भोग करेगा।

कर्क लग्न में शनि अष्टम भाव में



कर्क लग्न में अष्टमस्थ शनि कुम्भ राशि में अपनी मूल त्रिकोण राशि में होगा। आठवें स्थान पर बैठकर इसकी दृष्टि धन स्थान, पंचम स्थान एवं दशम स्थान पर होगी। यह शनि जातक को दीर्घायु देता है, साथ ही जातक पुरानी वस्तुओं का खरीददार व शौकीन होता है। ऐसे जातक को हैंडीक्राफ्ट तथा आयात-निर्यात के धंधे में लाभ होता देखा गया है।

द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि होने के कारण जातक को नेत्र रोग, दन्त रोग एवं कौटुम्बिक अशांति का सामना करना पड़ेगा।

कलत्रहीन योग–सातवें स्थान का स्वामी होकर शनि के आठवें जाने से यह योग बना। शनि सातवें भाव में दूसरे स्थान पर होने के कारण जातक का वैवाहिक जीवन तो सुखी रहेगा पर पत्नी वृद्धावस्था में साथ छोड़ देगी। पत्नी की मृत्यु जातक से पहले होगी।

निशानी–जातक के अपने पिता के साथ सम्बन्ध ठीक नहीं होंगे। जातक की एक दो–सन्तान नष्ट होंगी। जातक में किसी भी प्रकरण के बारे तत्काल निर्णय लेने की शक्ति नहीं होगी। जातक कुटुम्बीजनों से भयभीत रहेगा।

विद्याभंग योग–शनि की दृष्टि पंचम भाव पर होने के कारण विद्या में बाधा आएगी। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता भी रहेगी।

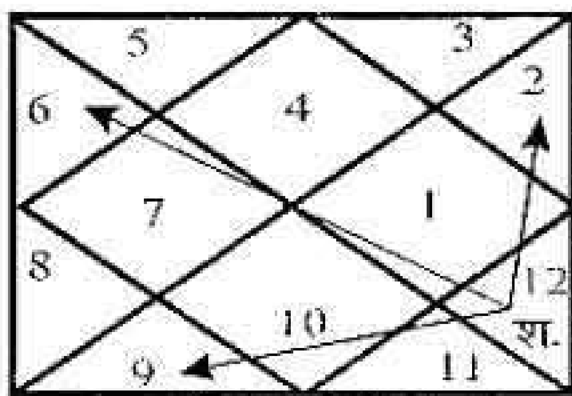
शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–शनि के साथ सूर्य '**धनहीन योग**' बनाएगा। फलतः आर्थिक परेशानी जातक का पीछा नहीं छोड़ेगी।
2. **शनि+चन्द्र**–शनि के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' भी बनाएगा। फलतः जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि+मंगल की युति से '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध होने से '**विपरीत राजयोग**' बना। जातक धनवान होगा पर उसका पराक्रम भंग जरुर होगा। जातक बदनाम होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु होने से '**भाग्यभंग योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' दोनो बने। ऐसा जातक धनवान होगा परन्तु अचानक भाग्योदय में बाधा आएगी।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र होने से '**सुखहीन योग**' एवं 'लाभभंग योग' बनेंगे। जातक के जीवन में अनेक कष्ट आएंगे।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु अचानक दुर्घटना कराता है।
8. **शनि+केतु**–जातक के पैरों में कष्ट पहुंचेगा।

अष्टम भाव के शनि का उपचार–

1. दशरथकृत शनि स्तोत्र पढ़ें।

कर्क लग्न में शनि नवम भाव में



कर्क लग्न में शनि मीन राशि का होकर नवम भाव में बैठने पर तृतीय स्थान, षष्टम स्थान एवं एकादश स्थान पर दृष्टि डालेगा।

सप्तमेश होकर शनि भाग्य स्थान में होने से जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होगा। उसकी आयु लम्बी होगी एवं जातक को ससुराल पक्ष से समय-समय पर आर्थिक लाभ होता रहेगा।

नवम भाव में स्थित शनि पिता के लिए ठीक नहीं है। जातक अपने पिता से अधिक कमाएगा तथा धर्म, समाज व परोपकार हेतु अधिक धन खर्च करेगा। जातक की नौकरी अच्छी होगी।

शनि की एकादश भाव पर दृष्टि होने से जातक का लाभ प्राप्ति थोड़ी देरी में होगी। परिश्रम का लाभ मिलेगा जरूर, पर देरी से।

निशानी–जातक डरपोक स्वभाव का होगा। शनि की दृष्टि यहां अशुभ फलदायक मानी गई है।

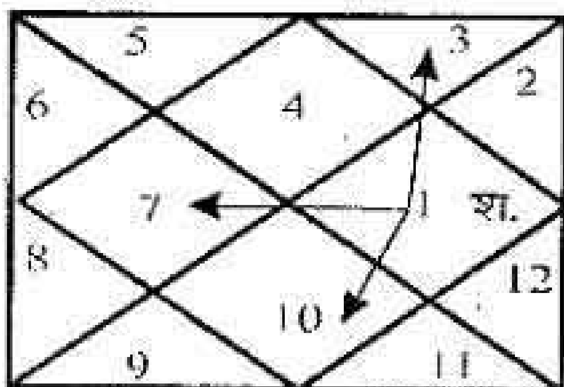
शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–शनि के साथ सूर्य जातक को पराक्रमी बनाएगा, परन्तु जातक का सही पराक्रम पिता की मृत्यु के बाद उदय होगा।
2. **शनि+चन्द्र**–शनि के साथ लग्नेश चन्द्रमा भाग्य स्थान में जातक को जलीय पदार्थों से लाभ दिलायेगा
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल हो तो 'राजयोग' बनेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ तृतीयेश+खर्चेश बुध नीच का होगा। ऐसे जातक की बुद्धि ऐन समय पर कुण्ठित हो जाती है।
5. **शनि+गुरु**–यदि गुरु यहां सप्तम या अष्टम भाव में हो तो शनि के घर में होगा एवं शनि गुरु के घर में होगा। परस्पर इस परिवर्तन के बारे ऋषि पाराशर न कहा है–

   शनि क्षेत्रे यदा जीवो, जीव क्षेत्रे गते शनिः।
   स्थान हानि करो जीवः, स्थान वृद्धि करो शनिः॥

   शनि जिस स्थान में बैठा है वहां के फल को पुष्ट करेगा, उस स्थान की वृद्धि करेगा पर गुरु उस स्थान को कमजोर करेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ साथ सुखेश+लाभेश शुक्र उच्च का होगा। फलतः जातक के भाग्योदय विवाह के बाद या माता की मृत्यु के बाद होगा
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु संघर्ष के साथ भाग्योदय करायेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु भाग्य में उतार-चढ़ाव लाता रहेगा।

कर्क लग्न में शनि दशम भाव में



कर्क लग्न में मेष का शनि दशम भाव में नीच का होगा। इस शनि की दृष्टि द्वादश स्थान, चतुर्थ स्थान एवं सप्तम स्थान पर है। ऐसा जातक अच्छा कमाता है एवं राजदरबार से, सरकारी क्षेत्र से उसे समय-समय पर सहयोग मिलता रहता है।

सप्तमेश शनि केन्द्र में होने एवं सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि होने से जातक का वैवाहिक जीवन सुखी परन्तु पत्नी व

ससुराल पक्ष जातक के कक्षा-स्तर में निम्न होंगे। विवाह देर से होगा।

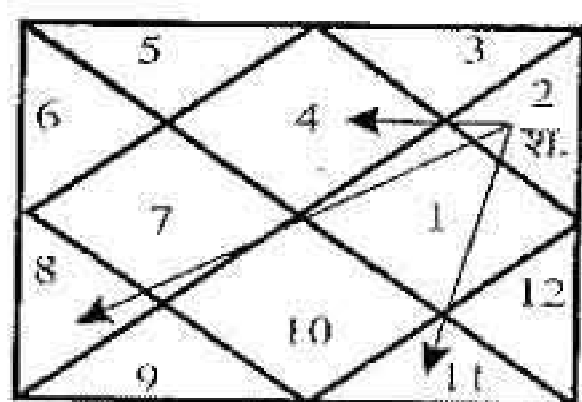
अष्टमेश होकर शनि दसवें भाव से होने में जातक को कमाने के लिए खूब मेहनत करनी पड़ेगी। शनि की दृष्टि बारहवें भाव पर होने के कारण जातक बेकार बहुत खर्चे होंगे। यात्राओं एवं परदेश गमन पर रुपया खर्च होगा।

शनि की चौथे भाव पर दृष्टि है जो कि उसकी उच्च राशि है। ऐसे जातक को मातृ-सुख उत्तम प्राप्त होता है एवं रहने का मकान उत्तम एवं वाहन सुख भी उत्तम होता है।

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध-

1. **शनि+सूर्य**-शनि के साथ सूर्य यहां **'नीचभंग राजयोग'** बनाएगा। जातक महाधनी होगा। पिता की मृत्यु के जातक की बाद किस्मत चमकेगी।
2. **शनि+चन्द्र**-शनि के साथ चन्द्रमा **'विष योग '** बनाएगा। नौकरी में बाधा पर बहुधंधी व्यापार में लाभ होगा।
3. **शनि+मंगल**-शनि के साथ यदि मंगल हो तो **'नी चभंग राजयोग'** बनता है।
4. **शनि+बुध**-शनि के साथ जातक को पराक्रमी बनाएगा पर सगे भाई-बहनों से कम पटेगी।
5. **शनि+गुरु**-शनि के साथ गुरु जातक को भाग्यशाली बनाएगा पर उसका भाग्योदय धीमी गति से होगा। जातक राजनीति में विशेष दक्ष होगा।
6. **शनि+शुक्र**-शनि के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र जातक को व्यापार में उन्नति रहेगा।
7. **शनि+राहु**-शनि के साथ राहु व्यापार में बाधक है।
8. **शनि+केतु**-शनि के साथ केतु थोड़ी तकलीफ के साथ व्यापार को शुरु करायेगा।
9. यदि मंगल यहां मकर राशि में हो तो सप्तमेश व दशमेश मंगल शनि में परस्पर परिवर्तन योग बनने से इस कारण **पद्मसिंहासन योग** भी बनता है।

कर्क लग्न में शनि एकादश भाव में



कर्क लग्न में शनि एकादश भाव में वृष राशि गत होकर मित्रक्षेत्री होगा। जहां पर बैठ कर शनि लग्न स्थान, पंचम स्थान एवं अष्टम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। शनि की यह स्थिति पूर्णत: लाभदायक है। जातक को बड़े भाई-बहनों, भागीदारों एवं मित्रों से आर्थिक लाभ मिलता रहेगा।

सप्तमेश लाभ स्थान में होने से एवं सप्तम भाव से शनि पंचम स्थान पर होने से जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा।

अष्टमेश शनि एकादश भाव में जाकर अष्टम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखने के कारण जातक की आयु लम्बी होगी।

निशानी–शनि की लग्न भाव पर दृष्टि होने के कारण जातक का चिन्तन प्राय: नकारात्मक होगा। जातक को छोटी-मोटी बीमारियां लगी रहेंगी।

शनि की दृष्टि पंचम स्थान पर होने के कारण जातक की प्रथम सन्तति विलम्ब से होगी। सन्तान संबंधी कोई न कोई चिन्ता जातक को लगी रहेगी।

गढ़ा धन मिलेगा–लाभ स्थान में बैठकर शनि की दृष्टि अष्टम भाव पर होने से जातक को जमीन में गड़ा खजाना, गुप्त धन मिलेगा या आकस्मिक धन लाभ होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–शनि के साथ सूर्य विवाह से धन दिलाएगा।
2. **शनि+चन्द्र**–शनि के साथ चन्द्रमा प्रयत्न से लाभ दिलाएगा। जातक थोड़ा उदासीन स्वभाव का होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल प्रथम पुत्रोत्पत्ति के बाद भाग्योदय कराता है।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को पराक्रमी एवं यात्रा प्रेमी बनाएगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु जातक को भाग्यशाली बनेगा पर विवाह के बाद।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र स्वगृही होने से जातक उद्योगपति होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु एक बार चलते उद्योग को रोकेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु व्यापार-उद्योग में उतार-चढ़ाव लायेगा।

कर्क लग्न में शनि द्वादश भाव में

कर्क लग्न में शनि द्वादश स्थान में मिथुन राशि का मित्र के घर में होगा। वहां बैठकर धन स्थान, षष्टम् स्थान एवं भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक ज्योतिष, तन्त्र-मन्त्र, गुप्त विद्याओं का जानकार होगा। जातक की स्त्री की सेहत खराब होगी।

शनि की नवम भाव पर दृष्टि पिता के लिए ठीक नहीं होगी। जातक परदेश में रहेगा या परदेशी के साथ धंधा करेगा।

दुर्घटना भय–अष्टमेश शनि बारहवें जाने से जातक को अकस्मात् दुर्घटना का भय रहेगा।

कोर्ट-कचहरी के चक्कर–अष्टमेश शनि की दृष्टि छठे स्थान पर होने के कारण रोग व शत्रु पर विजय मिलेगी पर जातक को कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगाने होंगे। यदि शनि पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को जेल भी जाना पड़ सकता है।

कलत्रहीन योग–सप्तमेश होकर बारहवें जाने से एवं सप्तम भाव में शनि छठे स्थान पर होने से जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं होगा। अंतर्जातीय विवाह या कुछ विचित्रता बनी रहेगी।

निशानी–जातक सदैव चिन्ताग्रस्त रहेगा।

दशा–शनि की महादशा-अंतर्दशा कष्टप्रद होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–शनि के साथ सूर्य जातक को एक आंख से काना बना देगा तथा नेत्र पीड़ा देगा। **धनहीन योग** के कारण आर्थिक विषमता रहेगी।
2. **शनि+चन्द्र**–जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। बाई आंख नष्ट होगी।
3. **शनि+मंगल**–जातक की संतान कपूत होगी तथा वह उसकी आज्ञा में नहीं रहेगी।
4. **शनि+बुध**–जातक का पराक्रम भंग होगा। कुटुम्ब से अपयश मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**–जातक का भाग्य विलम्ब से उदय होगा। जातक गुप्त रोगों का शिकार होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र चलते व्यापार में रुकावट तथा नुकसान करायेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु भ्रमण करायेगा। यात्रा में चोरी होगी।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु परोपकार एवं शुभकार्यों में धन का अपव्यय करायेगा।

❑❑❑

राहु का वैदिक व पौराणिक स्वरूप

अथर्ववेद में सर्वप्रथम राहु का उल्लेख सूर्य के प्रसंग में आता है। जिसका अर्थ अन्धकार है। ऋग्वेद में राहु उस असुर का नाम प्रतीत होता है, जो सूर्य–चन्द्र ग्रहण का कारण बनता है। इसे स्वर्भानु कहा है जो सूर्य के प्रकाश रोकता है। यथा–

यत् त्वा सूर्यर्भानु स्तमसाविध्यदासुरः।
अक्षेत्रविद् यथामुग्धो भुवनान्यदीधयुः॥

–ऋग्वेद 5/40/5

वैदिक साहित्य में निर्दिष्ट **'स्वर्भानु'** का स्थान ही वैदिकोतर पुराकथा शास्त्र में राहु के द्वारा लिया गया है।[1] जिस कारण इसे **चन्द्रार्क प्रमर्दन** (चन्द्र–सूर्य के तेज को नष्ट करने वाला) कहा गया है।[2] कई पुराणों में इसका नामान्तरण स्वर्भानु बताया गया है। भागवत में इसकी कन्या का नाम **स्वर्भानु पुत्री** कहा गया है। ज्योतिषशास्त्र में भी अनेक स्थलों पर राहु को **'स्वर्भानु'** नाम से पुकारा गया है।[3] महाभारत की कथा के अनुसार समुद्रमंथन के उपरान्त देवगण अमृत पान करने लगे, तब यह दानव भी प्रच्छन्न रूप से अमृतपान में शामिल हुआ। अमृत इसके गले तक ही पहुंच पाया था कि सूर्य व चन्द्र ने इस दैत्य की उपस्थिति की सूचना विष्णु को दी। विष्णु ने तत्काल इसका शिरच्छेद किया। जिससे इसका सिर धड़ (शरीर) से अलग होकर भूमि पर गिरा।[4] इसके सिर से केतु का निर्माण हुआ तथा धड़ वाला राहु सिरविहीन होकर सर्वत्र सबको डराने लगा। सूर्य व चन्द्रमा के प्रति राहु–केतु का द्वेष कम नहीं हुआ और समय आने पर वे ग्रसते हैं, जिसे क्रमशः सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण कहते हैं।[5] पुराणों में राहु का आकार वृत्ताकार माना गया है। इसका व्यास बारह हजार योजन तथा दायरा बयालीस हजार योजन है।[6]

---

1. प्राचीन चरित्रकोश–सिद्धेश्वर शास्त्री (1964), भारतीय चरित्रकोश मण्डल, पूना 4, पृष्ठ 749
2. श्रीमद् भागवत महापुराण 5/23/7 (1954), गोरखपुर
3. युक्तौ स्वर्भानु नावा भवति हि मनुजः केतुना श्वेत कुष्ठी। बृहद् योगरत्नाकर, पृष्ठ 28
4. महाभारत आदिपर्व, पंचम स्कन्ध अध्याय 17/4
5. पद्मपुराण ब्रह्मखण्ड, 10
6. महाभारत (तृतीय खण्ड) भूमिपर्व अ. 12/श्लोक 41, गीताप्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 2572

आचार्य वराहमिहिर ने राहु के तीन नामों में उसका (तम, अगु, असुर) एक नाम **'असुर'** भी माना है।[1] परवर्ती ज्योतिष में राहु सौरमण्डल के नवग्रहों में से एक है जो कि दुष्ट ग्रह माना गया है। बृहत्संहिता में स्वयं वराहमिहिर प्रश्नात्मक शैली में समाधान करते हुए कहते हैं कि यदि राहु ग्रह है तो आकाश में सदा और ग्रहों की तरह क्यों नहीं दिखाई देता? यह काला होने के कारण ब्रह्माजी के वरप्रदान से पर्वकाल से भिन्न समय में दिखाई नहीं देता।[2] वराहमिहिर ने राहुचाराध्याय व केतुचाराध्याय पर अलग से विस्तार में अध्याय लिखकर इसका गणितागत स्पष्टीकरण किया है।

राहु का पौराणिक स्वरूप

राहु की माता का नाम सिंहिका है, जो दैत्यराज हिरण्यकशिपु की पुत्री है। माता के नाम से राहु को सैंहिकेय कहा जाता है। राहु के सौ और भाई थे, इनमें सबसे बड़ा राहु ही था अवस्था में ही नहीं बल में भी राहु सबसे बढ़ा-चढ़ा था। आगे चलकर यह ग्रह बन गया (श्रीमद्भा० 6/6/37)।

समुद्र-मंथन से जब अमृतोपलब्धि के बाद राहु छलपूर्वक अमृत-पान के लिए देवताओं की पंक्ति में जा बैठा और चन्द्रमा-सूर्य ने भगवान विष्णु को उसके कपटभाव का रहस्य बतला दिया, तब भगवान ने चक्र से राहु का सिर धड़ से अलग कर दिया, किंतु अमृत पीने से वह अमर हो गया था (श्रीमद्भा० 8/9/24-27) इसी से उसको ब्रह्मा ने यह ग्रह बना दिया- **'अजो ग्रहमचीकल्पत्'** (श्रीमद्० 8/9/26)।

राहु ग्रह मण्डलाकार होता है (महा०, भीष्म० 12/40)। ग्रहों के साथ राहु भी ब्रह्मा की सभा में बैठता है (महा०, सभा० 12/29)। पृथ्वी की अपनी छाया मण्डलाकार होती है। राहु यहीं भ्रमण करता है (मत्स्य पु० 29/61)। राहु ग्रह छाया का अधिष्ठातृ-देवता है। ऋग्वेद में बताया गया है कि असूर्या (सिंहिका) का पुत्र राहु जब सूर्य और चन्द्र को तम से आच्छन्न कर लेता है, तब इतना अंधेरा छा जाता है कि लोग अपने स्थान को ही नहीं पहचान पाते (ऋक्० 5/40/5)। ग्रह बनने के बाद भी राहु वैर-भाव से पूर्णिमा को चन्द्रमा पर और अमावस्या को सूर्य पर आक्रमण करता है। इसे ग्रहण या राहु पराग कहते हैं। उपराग के समय अव्रतत्व (अपवित्रता) आ जाता है, जिसका प्रतिकार स्नानादि से किया जाता है (ऋक्० 5/40/6-9)

वर्ण-राहु ग्रह का वर्ण नीलमेघ के समान है और इसके सिंहासन का रंग भी नीला है।

वाहन-राहु का रथ अंधकार रूप है। इसे कवच आदि से सजाए हुए वायु के समान वेग वाले आठ काले घोड़े खींचते हैं (मत्स्य पु० 127)।

---

1. राहुस्तमोऽगुरसुरश्च शिखीच केतुः, बृहज्जातक अ. 2/श्लोक 3 पृष्ठ 23
2. राहुचाराध्याय, बृहत्संहिता अ. 5/2 श्लोक पृष्ठ 35

राहु का ध्यान इस प्रकार करना चाहिए–

करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः।
नीलसिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते॥

(मस्त्य पु० 94/7)

'राहु का मुख भयंकर है। उनके हाथों में तलवार, ढाल, त्रिशूल और वरमुद्रा शोभा पाती है तथा वे नीले रंग के सिंहासन पर आसीन होते हैं। ध्यान (प्रतिमा) में ऐसे ही राहु प्रशस्त माने गए हैं।

राहु का अधिदेवता **'काल'**, प्रत्याधिदेवता **'सर्प'** है।

राहु

1. प्रिय अन्न–गेहूं	**10. प्रिय दिशा**–नैर्ऋत्य
2. प्रिय रत्न–गोमेद रत्न	**11. प्रिय मण्डल**–शूर्पाकं
3. प्रिय पशु–अश्व	**12. नाप**–अंगुल 12
4. प्रिय वस्त्र–नीलवस्त्र	**13. प्रिय देश**–राठिनादेश
5. प्रिय वस्त्र–कंबल	**14. गौत्र**–पैठीनस गोत्र
6. आहुति–तिल	**15. प्रिय रंग**–काला
7. दान–तैल	**16. जप संख्या**–18,000
8. प्रिय धातु–लोह	
9. प्रिय वस्तु–अभ्रक	

उत्पत्ति–पुराणों की गाथाओं में समुद्र मंथन की कथा में अमृत की उपलब्धि के बाद देव-दानव सभी अमर होने की इच्छा से भगवान की मोहिनी मूर्ति की ओर निहारते हुए अमृत पीने की प्रतीक्षा में रत थे, तब राहु ने छलपूवर्क अमृत पान के लिए अपने सौ भाइयों की पंक्ति से उठकर सूर्य व चंद्र के मध्य आ बैठा। इस छल की तरफ सूर्य व चन्द्र ने भगवान को इशारा किया। अमृत की कुछ बूंदे ही राहु के मुंह में जा पाई थीं कि सुदर्शन चक्र से भगवान ने उसका सिर धड़ से अलग कर दिया परन्तु वह अमृत पीने से अमर हो गया। इसी से ब्रह्मा ने उसे ग्रह बना दिया–**'अजो ग्रह मचीकल्पत'** (श्री मन्दा 08/9/25)

वास्तव में राहु की माता का नाम सिंहिका है जो दैत्यराज हिरण्यकशिपु की पुत्री थी। माता के नाम से इसे सैहिंकेय कहते हैं। राहु के सौ भाई थे। वह इसमें सबसे बड़ा बलवान था। ऐसा भागवत में वर्णन है। एक ही दैत्य के शरीर के दो टुकड़े हुए। उसके सिर को राहु व धड़ को केतु कहते हैं। केतु भी बहुत से हैं ऐसा मत्स्य पुराण 84/9 में वर्णन है इनमें सबसे प्रधान धूमकेतु है। (वायु पुराण 153/10)

राहु को सर्पाकार दिया गया है। उसमें सर्प का मुख राहु और उसकी पूंछ केतु है। वरदान

से अमर बने ये दोनों ग्रह बनकर सातों ग्रहों को पीड़ित करते हैं। उनमें खासकर सूर्य व चन्द्र को। चंद्र+राहु से व सूर्य+केतु से ग्रहण योग बनता है और सभी ग्रहों को अपने मध्य में लेने से **कालसर्प योग** बनता है। 7 ग्रहों को सात वार मिले व उनके नाम से प्रसिद्ध है। इनको कोई वार नहीं मिला क्योंकि इनकी छाया ही ग्रहों को ढकने वाली है। फिर भी ज्योतिष व महर्षियों ने राहु को बुधवार और केतु को मंगलवार दिया। फलादेश में राहु को **शनिवत्** और केतु को **कुजवत्** कह कर इनके फल इन दो मुख्य ग्रहों के अनुरूप दर्शाए।

यद्यपि आज से 100–150 वर्ष पुरानी कुण्डलियों में राहु व केतु को दर्शाते भी नहीं थे। आज भी कई प्राचीन विद्वान इनको स्थान नहीं देते हैं। महाभारत भीष्मपर्व (12/40) में राहु को मण्डलाकार माना है। यह ग्रहों के साथ ब्रह्मा की सभा में बैठता भी है। पृथ्वी की अपनी छाया मण्डलाकर होती है। राहु यहीं भ्रमण करता है। (मत्स्यपुराण) राहु ग्रह छाया का अधिष्ठातृ देवता है। ऋग्वेद में इसे **असूर्या** कहा गया है। यह सूर्य और चंद्र को तम से आच्छन्न कर लेता है। तब इतना अंधेरा छा जाता है कि लोग अपने स्थान को ही नहीं पहचान पाते।

ग्रह बनने के बाद राहु हर पूर्णिमा को चंद्र को व हर अमावस्या को केतु सूर्य को आच्छादित करता है। अत: ये दोनों तिथियां अव्रतत्व बनती है। लोग इस दिन अन्न ग्रहण नहीं करते हैं। दान पुण्य कर घर के पापों का प्रायश्चित करते हैं। उपराग के समय यह अव्रतत्व इतना होता है। जिसका प्रतीकार स्नानादि से किया जाता है (ऋक् 5/40/8–9) इसलिए हर अमावस्या व पूर्णिमा ग्रह की होती है।

वर्णन–कर्मकाण्ड के ग्रन्थों में इसके वर्णन पाए जाते हैं।

राहो बब्बर देशे संजात: काय वर्जित:।
गोत्रे पेठेनसि जाति, सिंहारूढ़ो वरप्रद:।।
कराल वदन श्रेष्ठ: पूज्यो नैऋतपत्रके।
सिंहिका गर्भ संभूतं, तं राहु प्रणमाम्यहम्।।
केतवो विविधाकारो मलयाद्रि समुद्र् भव:।
द्विभुज: जैमनि गोत्रे गदाहस्त: वरप्रद:
ब्रह्म व ज्ञान मन्त्रेण, शोभने मारुते दले।

राहु केतु को प्रसन्न करने हेतु वैदिक मंत्र भी हैं पर ज्योतिष आचार्य इन्हें ग्रह नहीं मानते। राहु को पैठेनसि गोत्र और केतु को जैमिनी गोत्र मिला लिया है। यह अंधकार स्वरूप है। अत: नीलवर्ण है। राहु का देश बब्बर है और विविध आकार के केतुओं का देश मलयाद्रि है। इसमें धूमकेतु प्रधान है। राहु का स्थान नैऋत्व कोण व केतु का वायव्य कोण है। केतु द्विभुजाधारी है एक हाथ में ध्वजा रखते हैं। दूसरे हाथ में गदा है। इनका 9 घोड़ों का रथ वायु वेग से चलता है। यह अपने अंधकार से ग्रहों को ढक देते हैं। यह ज्योतिष की भाषा में तमोग्रह कहलाते हैं। राहु का अधिष्ठाता देवता ब्रह्मा व केतु का चित्रगुप्त है। केतु का नाम शिखी है। राहु केवल तम से संबंधित होता है। राहु से 7 स्थान हरदम केतु का रहता है। इसका विचरण हरदम पर्वत शिखरों व घने वनों में रहता है।

राहु-केतु के वर्णन—आचार्य वराहमिहिर, बृहत् पराशर होरा, ऋग्वेद, अमरकोश, महाभारत, याज्ञवल्क्य स्मृत, जातक परिजात, सारावली, उत्तर कालामृत, बृहत संहिता, होरासार, फलदीपिका, शिव संहिता, संकेतनिधि, दैवज्ञाभरण, उदुदाय प्रदीपिका तथा काटवें का राहु विचार आदि ग्रन्थों में परिशीलन से इसका संपूर्ण ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। तदनुसार वर्णनों में आया है, राहु घर में स्थान लेता है। केतु कोनों में। ये नीचे देखते हैं। इसका रंग नीलमणि के समान होता है। रंग-बिरंगा वस्त्र राहु का और छिद्र युक्त वस्त्र केतु का है। दोनों की जाति चांडाल, धातु सीसा, राहु का गोमेद व केतु का लहसुनिया रत्न है। राहु शाल वृक्ष का निर्माता व केतु छोटे पौधों का कर्त्ता है। लिंग पुरुष, गुण तामस, अवस्था वृद्ध, रस कसाय, स्थान विवर, समय दोपहर, भूमि ऊसर, धातु लोहा, तत्त्व वायु पापग्रहों में चरग्रह व चरण रहते हैं। खासकर स्थान सांप के बिल हैं। क्योंकि यह सर्पाकार है।

बलवन्ता—मेष, वृश्चिक, कुंभ, कन्या, वृष, कर्क राशि में तथा दशम स्थान में राहु बली होता है। कन्या राशि के अंत में वृष तथा धनु में रात्रि में तथा उत्पात एवं धूमकेतु के दर्शन के समय केतु बलवान होता है। संध्या में राहु बली होता है। राहु का मुख प्रायः दक्षिण में होता है। यह 18 मास में राशि बदलता है। सदा वक्री रहता है।

राहु केतु की उच्चता व नीचता के विषय में ज्योतिषियों में बड़ा मतभेद है।

> **''राहोस्तु कन्यका गेहं, मिथुनं स्वाच्चमं स्मृतम्**
> **कन्या राहु ग्रह प्रोक्त, राहुच्च मिथुन स्मृतम्**
> **राहो नीचं धनुः प्रोक्तं, केतोः सप्तम मेव च''**

राहु का स्वगृह कन्या तथा उच्च राशि मिथुन है नीच राशि धनु है। मूल त्रिकोण कर्क मानी है।

> **राहोस्तु वृषभं केतोः वृश्चिके तुंग संज्ञितम्।**
> **मूल त्रिकोणं कुंभं च प्रियं मिथुन उच्यते।।**

कई आचार्यों के मत में राहु की उच्च राशि वृषभ केतु की वृश्चिक, मूल त्रिकोण कुंभ और प्रिय राशि मिथुन मानी है। बृहत्पाराशर होरा में राहु का उच्च वृष, केतु का उच्च वृश्चिक, राहु मूल त्रिकोण कर्क केतु का मूल त्रिकोण मिथुन और धनु राहु का स्वगृह कन्या व केतु का स्वगृह मीन माना है। इस तरह स्वगृह, उच्च, मूल त्रिकोण तथा नीच के बारे में किसी एक ज्योतिष का सर्वसम्मत नहीं है। सब आचार्यों ने भिन्न-भिन्न मत व्यक्त किए हैं। डॉ. हेनेरी कॉवें जर्मनी विद्वान खूब शोध कर अपने निष्कर्ष में कहा है कि हमेशा वक्र गति से चलने वाले केतु के दृष्टि कर्म उल्टे गिने जाएं या सीधे अन्य ग्रहों की तरह गिने जाए इसके बारे में मैतक्य नहीं है। इस तरह इन दोनों छायाओं को ब्रह्मा ने ग्रह होने का वर तो दिया पर उनके क्रम व बल के बारे में आज तक कोई मत नहीं हो पाया। छाया जैसे घूमती है वैसे ही ये ग्रह घूमते हैं।

अतः परिणाम एक जैसा नहीं मिल पाते है। जैसे छाया निश्चित है और अनिश्चित ढंग से परिवर्तित होती है वैसे ही ग्रह अकस्मात फल देकर धीरे-धीरे परिणाम विपाक करते हैं। अतः इनकी बलवन्ता में मतैक्य नहीं हो पाता।

मित्र-शत्रु—राहु के मित्र बुध, शुक्र और शनि हैं तो केतु के सूर्य, मंगल और गुरु मित्र ग्रह हैं। राहु का शत्रु मंगल, सूर्य, चंद्र, गुरु, सम है। राहु का दोष बुध दूर करता है। राहु का फल शनिवत है। केतु का भौमवत है। पर इनमें भी मतैक्य नहीं हो पाया है।

दृष्टि

''सुतमदन नवान्ते पूर्णदृष्टिं तमस्य
युगम दशम गेहे चार्य दृष्टिं वदन्ति
सहज रिपुविपक्षान् पाददृष्टिं मनुन्द्रा।
निज भुवन मुपेतो लोचनाद्यः प्रदिष्ट''

राहु की दृष्टि 5-7-9-12 स्थानों पर पूर्ण होती है। 2-10 भावों पर आधी होती है। 3-6 पर एक चौथाई दृष्टि होती है। स्वगृह में हो तो दृष्टि नहीं होती है। परन्तु प्रायः ज्योतिषगण 5-7-9-3-10-4-8 भावों पर अन्य ग्रहों की तरह इसकी एक पाद 3/10 द्विपाद 5/9 संपूर्ण 7 और त्रिपाद 4/8 पर ही मानते हैं। इस तरह यह छाया ग्रह अनिश्चित दृष्टि वाला है। अभी तक का शोध करना अवशिष्ट है।

फल—कई ज्योतिष आचार्य राहु व केतु को ग्रह ही नहीं मानते हैं। उसे केवल बुरी छाया कह कर टालते हैं। क्योंकि राहु केतु का कोई स्वतंत्र फल नहीं है। केवल फलों में आकस्मिकता, शीघ्रता के ही ये परिचायक हैं। राहु-केतु किसी ग्रह या भाव में जिस राशि से संबंधित हैं उनके स्वामी के अनुसार ही फल देते हैं। अतः इनके स्वतंत्र फलों का अस्तित्व ही नहीं है। सूर्य आदि ग्रह जैसे स्वतंत्र फल रखते हैं। ऐसा इनका फल कहीं पर दृष्टिगोचर नहीं है। अतः ये ग्रह व्यर्थ के हैं।

''यद् यद् भावगतौ वापि यद् यद् भावेश संयुतौ।
तद् तद् फलानि प्रबलौ, प्रदिशेतां तमो ग्रहौ॥''

(लघुपराशरी श्लोक 13)

राहु केतु जिन-जिन भावों में बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन भावेश के साथ बैठे होते हैं तब उन-उन भावों अथवा उन-उन अधिपतियों के द्वारा मिलने वाले जो फल होंगे वे फल अधिकता से प्राप्त होंगे।

इस श्लोक के टीकाकार-स्व. वि. गो. नवार्थ मराठी में कहते हैं कि ऐसा इसलिए है कि राहु और केतु किसी भी राशि के अधिपति नहीं हैं। स्व० श्री रघुनाथ शास्त्री पटवर्धन अपनी टीका में कहते हैं कि राहु और केतु वास्तविक ग्रह ही नहीं हैं, वे तो छाया ग्रह हैं। अतः अन्य ग्रह की छाया को फल करेंगे। सुश्लोक शतक के टीकाकार कहते हैं कि ये छाया ग्रह हैं अतः स्वयं प्रकाशमान नहीं हैं। अतः इनका स्वतंत्र फल नहीं है। श्री विनायक शास्त्री लिखते हैं कि ये ग्रह जिसके भी साथ होंगे उस ग्रह का या भाव का प्रबल फल करेंगे। श्री शास्त्री धीरजराम

पंड्या का मत है कि "**राहुकेत्वोः फलं सर्वम् मंदवत् कथितं बुधैः**" अतः राहु केतु का फल शनि की तरह ही माने जाते हैं। श्री उत्तमराम मयाराम ठक्कर के मत से ज्योतिषाचार्यों ने इन ग्रहों का प्रमाणभू ग्रन्थों में स्वामित्व नहीं दिया है। अतः प्रमाण में तो 7 ग्रह और 12 भाव ही हैं। अतः ये केवल फलों में प्रबलता दे सकते हैं। इनका कोई महत्त्व नहीं है। ज्योतिषाचार्य तीर्थ पं. सीताराम झा लिखते हैं कि–

"विमर्दकत्वादर्केन्द्वोः प्रबलावित्युदीरितो।
बिम्बाभवाच्च तौ स्वं स्वफलं नो दातुमर्हतः॥

राहु केतु ग्रहण में सूर्य और चंद्र के विमर्दक हैं। अतः प्रबल पाप ग्रह हैं। परन्तु आकाश में इनका अपना बिम्ब नहीं है अतः ये स्वतंत्र फल कारक नहीं हैं।

इस तरह हम देखते हैं कि राहु केतु ग्रह वास्तव से स्वतंत्र फलदाता नहीं हैं परन्तु पीड़क ग्रह जरूर हैं।

ये कुण्डली में होते हैं तब एक साथ छः भावों को अपने पापकर्त्तरी योग से दूषित कर देते हैं। इस तरह जीवन के संपूर्ण सुख में आधा जहर घोल कर अपना अस्तित्व बनाते हैं। शनि चूंकि छाया पुत्र है और दुःख का स्वामित्व रखता है ठीक इसी तरह ये दोनों छाया ग्रह हैं और शनि की तरह दुःखदायक अनुभूति देते हैं।

राहु केतु को ग्रह स्वरूप मानने में प्रमाण–श्री दैवज्ञ नारायण भट्ट ने चमत्कार चिंतामणि ग्रंथ में, जीवननाथ दैवज्ञ ने भाव प्रकाश में और स्वयं पाराशर ने अपनी विंशोत्तरी मान्य दशा में राहु केतु को अलग-अलग ग्रह मानते हुए अपनी दशा व भावों के फल निर्दिष्ट किए हैं। अतः इन सात ग्रहों की तरह व्यक्तियों पर राहु केतु अपना स्वतंत्र प्रभाव डालते हैं। इसमें शक नहीं होना चाहिए। वैदिक साहित्य और पुराण भी इसी के प्रमाण हैं। अतः इन्हें ग्रह मानकर इनका स्वतंत्र फल यह है कि यह पृथकताकारी ग्रह हैं और सदाः प्रभावी हैं, सर्वसम्मति विश्वसनीय है।

स्वरूप–राहु और केतु की स्वतंत्र राशि व स्वतंत्र प्रभाव के फल न होने से ही इनका स्वतंत्र वर्णन कठिन है। परन्तु जिन व्यक्तियों का राहु सुधरा हुआ है व बली है। वह राहु प्रधान व्यक्ति स्नेहशील व विचारपूर्वक परीक्षा के बाद कार्य करता है। अभिमान परन्तु मान का भूखा होता है। बुद्धि तीव्र व इच्छाएं श्रेष्ठ होती हैं। प्रयत्नशील व मितभाषी, अपने वादे का पक्का होता है। लेखन कला में चतुर होता है। स्वभाव सरल, विचार स्वतंत्र, व्यवस्थित व स्पष्ट होते हैं। अपने उद्योग में मस्त रहता है। किसी काम में दखल नहीं देता है पर दखल भी पंसद नहीं करता। प्रभावशाली व्यक्तित्व व रौब से काम लेने वाला होता है। यदि राहु बिगड़ा हुआ है तो इसके फल उल्टे होंगे।

कारकत्व–छत्र, चामर (राजचिन्ह) देश की समृद्धि, नीच जाति, वाहन, जुआ, अयोग्य स्त्री से संबंध, विदेश गमन, अपवित्रता, हड्डी गांठ के रोग, झूठ बोलना, सपेरा, वन, पर्वत,

नेऋत्यदिशा, वात कफ के रोग, सरीसृप, दुर्गा की उपासना, मंत्र-तंत्र-यंत्र, पशु समृद्धि मलेच्छ भाषा, कालाबाजार, भंयकर रोग, सन्निपात, झाड़फूंक, मांत्रिक, ओझा, आकस्मिक प्राकृतिक घटनाएं, झगड़ा, यश, टूटना, अलग होना, श्मशान घाट, पशु मैथुन, केतु में कुत्ते, मुर्गे, गिद्ध, सींगवाले पशु, चुगली, लोभ, भिक्षावृत्ति, दिखावा, शिव उपासना, कारावास, भविष्यवाणी, उद्भुत काम, अत्युद्दाम, ज्ञान, मोक्ष, गुफा में निवास, रोग से छुटकारा, प्रसिद्धि, ऋण से मुक्ति, मठ में रहना, चित्रकारी, पर्यटक।

अचूक फल

- ❑ जन्म कालिक राहु पर गोचर में केतु आए या केतु की राशि में राहु आए तो अति अरिष्ट होता है।
- ❑ जन्मदशा से पांचवीं राहु की दशा आए तो अशुभ फल देगी।
- ❑ राहु नवम स्थान में हो और नवमेश बलवान हो विशेषकर बुध नवमेश में हो तो अचानक भाग्य चमकता है।
- ❑ राहु धन भाव, पंचम व लाभ स्थान में हो तो लॉटरी, सट्टा, शेयर में शुभ फल देगा, यदि बुध से युति हो या भावेश बलवान हो।
- ❑ राहु+शनि हो तो धन हानि करेंगे। जिन भावों को राहु देखेगा उसकी हानि करेगा।
- ❑ सूर्य, मंगल, केतु का प्रभाव कहीं पर एकत्रित सीधा अथवा केतु की दृष्टि द्वारा पड़ रहा हो तो उस प्रदर्शित भाव या वस्तु में आग लग जाती है।
- ❑ शुभ स्वक्षेत्री ग्रह के साथ केतु युति विशेष लाभ देगी। जैसे शु+के युति चतुर्थ, पंचम, सप्तम, भाग्य, दशम, लाभ में हो।
- ❑ केतु यदि योगकारक ग्रह के साथ स्थित हो केतु अधिष्ठित राशि का स्वामी अपनी युक्ति से अचानक लॉटरी आदि से धन की प्राप्ति कराएगा।
- ❑ जिन भावों पर षष्ठेश और राहु का साथ-साथ प्रभाव पड़े तो वह वस्तु म्लेच्छ हो जाती है जैसे किसी स्त्री की कुण्डली में षष्ठेश राहु अधिष्ठित राशि के स्वामी का प्रभाव हो तो उस स्त्री का शय्या सुख बिगड़ेगा। उसका पति पराई स्त्रियों का भोग करेगा।
- ❑ राहु की दशा में किसी वक्री ग्रह की दशा आए या वक्री ग्रह की दशा में राहु की दशा आए तो नष्ट वस्तुओं की पुनः प्राप्ति होती है।
- ❑ राहु मंगल का प्रभाव द्वितीय भाव या द्वितीयेश पर पड़े तो मुख टेढ़ा हो जाने का रोग होता है।
- ❑ चंद्र और राहु का अंतर सात अंश से कम हो तो कुण्डली में ग्रहण योग बनेगा।
- ❑ जन्म चक्र 12, 1, 8, 9, 11 भावों में राहु चंद्र की युति से ग्रहण का स्पष्ट फल होगा।

- राहु से दादा का और केतु से नाना का विचार किया जाता है। पांचवें भाव में राहु हो तो जातक प्रायः मंत्र, तंत्र, ज्ञाता बनता है।
- राहु केतु जिन राशियों में स्थित हों तो उन राशियों के स्वामी में इन ग्रहों का प्रभाव आएगा वे अपनी दृष्टि से दूसरे ग्रहों पर भी इतना प्रभाव ले जाएगे। राहु में उस भाव से व्यक्ति को अलग करने की शक्ति होगी। जैसे राहु कर्क में स्थित है, कर्क का स्वामी चंद्रमा है केतु शुक्र युति है। वहां पर राहु की 7वीं दृष्टि शुक्र पर पड़ेगी, तो शुक्र पर चंद्र का भी प्रभाव पड़ेगा। फलतः पति अपनी पत्नी से पृथक होने में तत्पर रहेगा।
- राहु केतु स्वतंत्र हो किसी के साथ न हों तो ऐसे राहु की भी दृष्टि खतरनाक होगी। राहु में पृथकता और केतु में क्रूरता या मारकता रहेगी।
- राहु केतु किसी ग्रह के साथ हों तो अपनी दृष्टि के साथ उस ग्रह का भी प्रभाव देंगे। जैसे राहु तथा मंगल दशम में स्थित हो तो पंचम दृष्टि से दूसरे भाव को और नवम से षष्ट भाव को भी देंखेंगे।
- शुक्र और बुध के साथ केन्द्र में पड़ा केतु हमेशा शुभ फल देता है।
- बारहवें में पड़ा केतु व्यक्ति को मोक्ष देगा। राहु विदेश यात्रा देगा।
- गुरु+केतु युति से **चाण्डाल योग** बनता है। इससे बुद्धि में भ्रम, अल्प धन, लोभ, व हरदम कोई न कोई चिंता बनी रहती है।

उपचार

1. राहु या केतु जो भी अनिष्टकारी है उसका जप कराएं।
2. राहु दोष में दुर्गासप्तशती के पाठ व केतु दोष में शिव जप या लघुरुद्र प्रयोग फलदाई होते हैं।
3. राहु या केतु की वस्तुएं यथा, उड़द, गेहूं, रत्न, नील वस्त्र, कंबल, तिल, तेल, लौह आदि दान करें।
4. कालसर्पयोग बन गया हो तो नित्य शिवपूजन करें या फिर नागपंचमी को नाग पूजन करें।
5. कुत्तों को उड़द से बनी मिठाई मंगल या बुधवार को दें।
6. बुधवार का व्रत करें। केतु में मंगल का व्रत करें।
7. राहु के लिए गोमेद और केतु के लिए लहसुनिया पहनें।

राहु का खगोलीय स्वरूप

राहु प्रकाश पिण्ड न होकर छाया ग्रह है। आकाश में इसकी कोई स्थिति नहीं है। वेदों और पुराणों में इसकी स्पष्ट उपलब्धि का उल्लेख मिलता है। ज्योतिष ग्रन्थों के अनुसार

चन्द्र-ग्रहण में भूच्छाया और सूर्य ग्रहण में चन्द्रमा को ढकने वाले पदार्थ को राहु-केतु मानते हैं। कुछ विद्वान लोग पृथ्वी की उत्तरी ध्रुव्र को राहु और दक्षिणी ध्रुव को केतु कहते हैं।

ये दोनों ग्रह एक दूसरे 6 राशि (180 डिग्री अंश) की दूरी पर रहते हैं तथा इनकी चाल सदैव 3/10/48 रहती है और ये वक्री (उलटी) गति से ही चलते हैं। आधुनिक गणना से 6798 दिन 16 घण्टा 44 मिनट और 24 सेकेंड में ये ग्रह द्वादश राशि को भोगते हैं। स्थूल मान से 18 वर्ष द्वादश राशि और 18 मास एक राशि 240 दिन एक नक्षत्र और 60 दिन तक एक नक्षत्र-पाद पर रहते हैं।

विद्वानों के अनुसार पूर्णिमा के दिन चन्द्र और राहु का अन्त सात अंश से कम हो तो ग्रहण अवश्य होता है। दूसरे शब्दों में पृथ्वी की छाया में जब चन्द्रमा पर आ जाता है तब प्रकाशहीन हो जाता है। इसी को ''चन्द्र ग्रहण'' कहते हैं। यदि चन्द्रमा का पूर्ण पिण्ड पृथ्वी की छाया में आए तब पूर्ण चन्द्र ग्रहण, अधूरा पिण्ड छाया में आए तो खण्ड चन्द्र ग्रहण कहलाता है।

जब पृथ्वी और सूर्य के बीच चन्द्रमा आ जाता है तब सूर्य का कुछ भाग नहीं दिखता है। यह ''सूर्य ग्रहण'' कहलाता है। सूर्य ग्रहण में सूर्य, चन्द्र तथा राहु का विचार किया जाता है। राहु दक्षिण दिशा का स्वामी है तथा अत्यन्त क्रूर माना जाता है।

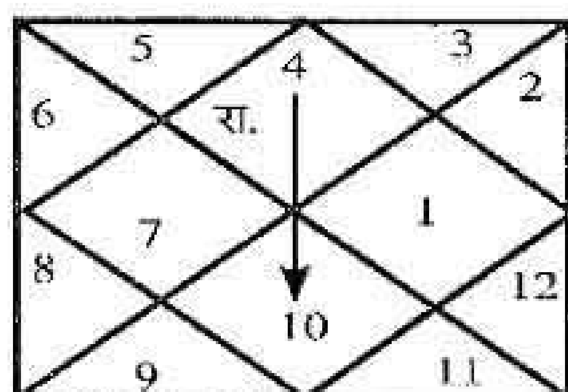
राहु का ज्योतिषीय स्वरूप

राहु सिंहिका राक्षसी का पुत्र है। यह पैठीनस गौत्र वाला व बर्बर देश का, नैऋत्य दिशा में सूर्याकार मण्डल में रहता है। इस राक्षस का धड़ रूपी शरीर काजल के पहाड़ जैसा, अंधकार रूप, भयंकर, महाबलवान है। धुएं की आकृति से युक्त कई बार मुकुट पहने हुए सर्प के समान दिखाई देता है। राहु दशम स्थान में बलवान माना गया है। यह चण्डाल जाति का है तथा वन में रहता है। इसका धातु शीशा है। यह दक्षिण दिशा का स्वामी और धुएं जैसा इसका रंग है। यह पृथकतावादी ग्रह है। जिस घर के भाव में यह स्थित रहता है। उसी में बाधा पहुंचाने की इसकी प्रवृत्ति है। यह जिस ग्रह के साथ बैठता है उसको भी दूपित कर देता है। यह भ्रम आभास, पिशाच, भूत, बाधा, जासूसी, निराधार बातें फैलाता है। यह अद्‌भुत और विलक्षण वस्तुओं का कारक ग्रह है। शरीर में यह अपस्मार, चेचक, नासूर, भूख, प्रेत-पिशाच, बाधा, अरुचि, कीड़े और कोढ़, गुप्त रोग और गुप्त शत्रुओं का कारक ग्रह है। इसका रत्न ''गोमेद'' है।

❑❑❑

कर्क लग्न में राहु की स्थिति

कर्क लग्न में राहु प्रथम भाव में



लग्न में कर्क राशिस्थ राहु शत्रु के घर में होने से जातक दयावान किन्तु जिद्दी होता है। इसका जन्म अस्पताल या ननिहाल में होता है। जातक राज-दरबार में इज्जत व मान पाता है। इनको अपने कुल व कार्य का बड़ा अभिमान होता है। पर धंधे में स्थाईत्व नहीं रहेगा। धंधे में बदलाव आता रहेगा।

व्यवहार–ये प्रायः पर छिन्द्रान्वेषी होते हैं। किसी भी कार्य में कमी या दोष ढूढ़ने में कुशल होते हैं। इनके बोलने एवं व्यवहार में परस्पर मेल नहीं होता अर्थात् मुंह से बोलते कुछ हैं तथा व्यवहार में करते कुछ और हैं। 'फलदीपिका' के अनुसार लग्न में राहु वाला व्यक्ति धनी और बलवान होता है।

दशा–राहु की दशा अशुभ रहेगी।

विशेष–ऐसा व्यक्ति जीवन में अनेक प्रकार के धंधे करता है। जीवन संघर्षमय रहता है। किसी एक कार्य में उल्लेखनीय उपलब्धि नहीं मिलती। कर्क लग्न के लिए राहु विशेष अशुभ फलदायक है क्योंकि लग्न स्वामी चन्द्रमा इसका शत्रु है। जिसे वह राहु ग्रहणकाल में ग्रसित करता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

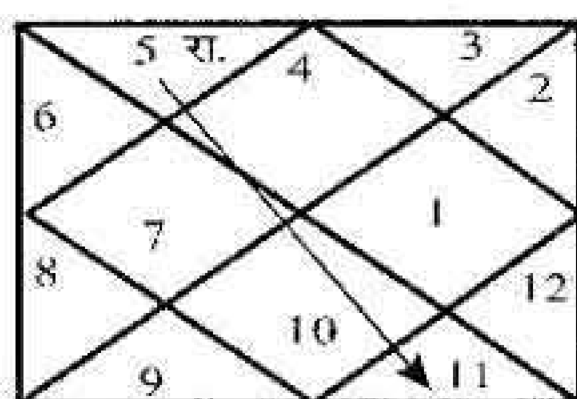
1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ धनेश सूर्य होने से जातक तेजस्वी व धनवान होगा।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा **'यामिनीनाथ योग'** बनाता है। ऐसा जातक राजा के समान प्रतापी एवं ऐश्वर्यवान होता है।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल नीच का होगा। ऐसा जातक लड़ाकू एवं उग्र स्वभाव का व्यक्ति होगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसा जातक अस्थिर मनोवृत्ति वाला होगा।

5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु उच्च का '**हंस योग**' बनाएगा। ऐसा जातक राजा के तुल्य परम पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र वाला जातक हठी होगा पर अपने कुल का नाम रोशन करने वाला यशस्वी जातक होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि होने से जातक हठी एवं लड़ाकू होगा जिसका दुष्प्रभाव जातक के गृहस्थ जीवन पर पड़े बिना नहीं रहेगा।
8. **चन्द्रग्रहण**–यदि लग्न स्थान में ग्रहण योग हो तो व्यक्ति मितव्ययी एवं सदा रोगी रहेगा।

प्रथम भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. शनिवार को काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
2. शनिवार के दिन काला वस्त्र न पहनें।
3. सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण के समय दान-दक्षिणा, मंत्र पाठ करें।
4. शनिवार के दिन जौ के आटे की गोलियां मछलियों को खिलाएं।
5. राहु के मंत्र का जाप करें, दशांश हवन करे एवं राहु की वस्तुओं का दान करें।
6. हाथीदांत की मूर्ति या वस्तुएं घर में न रखें।

कर्क लग्न में राहु द्वितीय भाव में



कर्क लग्न में राहु दूसरे में भाव में अग्निसंज्ञक सिंह राशि में होगा। यह राहु के शत्रु का घर है। यह राहु व्यर्थ के धन खर्च को बताता है। धन के घड़े में छेद है। जातक के पास रुपया नहीं टिकेगा। कुटुम्ब में विवाद रहेगा। जातक अनीति से रुपया कमाने में विश्वास रखेगा जो कि कष्ट का कारण होगा। धन कमाने की महत्वाकांक्षा तीव्र रहेगी।

निशानी–जातक की भाषा ओछी व लड़ाकू किस्म की होगी। आंखें निर्बल, निस्तेज होंगी। जातक दंत रोगी हो सकता है।

विशेष–जातक का वैवाहिक जीवन सुखद नहीं होगा। ज्योतिष में राहु को चोर माना गया है। द्वितीय स्थान धन और वाणी का स्थान है। ऐसा जातक चौर्यबुद्धि वाला होता है। 'फलदीपिका' अ. 8/ श्लोक 25 के अनुसार द्वितीय में राहु होने से मुख रोग होता है अथवा जातक कपटपूर्ण वाणी बोलता है। मेरे निजी अनुभव में द्वितीयस्थ राहु धन के घड़े में छेद का कार्य करता है। फलत: जातक कितना भी कमाये, धन एकत्रित नहीं होता। किसी की आंखों में गोल धुएं का घेरा जैसा दिखाई दे तो निश्चय ही लग्न स्थान में राहु होता है।

दशा–राहु की दशा अनिष्ट फलदायक होगी।

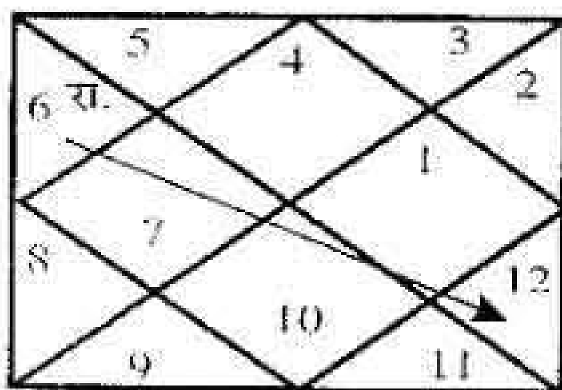
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–यहां राहु के साथ सूर्य स्वगृही होगा। ऐसा जातक धनवान होगा, पर धन संग्रह के मामले में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा जातक को मानसिक चिंता व तनाव से ग्रसित कर देगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल जातक को कटु सत्य बोलने वाला व्यक्ति बनाएगा। ऐसे जातक की अपने परिजनों से कम पटेगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध जातक को फिजूलखर्च बनाएगा। ऐसा जातक परवंचक होगा। उसकी बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु जातक को वाणी में हकलाहट देगा। धन संग्रह में सफलता बड़ी कठिनाई से मिलेगी।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र धन स्थान में जातक को स्त्री लोलुप बनाएगा। जातक का धन ऐशो-आराम में ज्यादा खर्च होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि होने से जातक कूटनीतिज्ञ होगा एवं गुप्त षड्यंत्र में ज्यादा रुचि लेगा। जातक प्रायः मिथ्याभाषी होगा।
8. **ग्रहणयोग**–यदि धन स्थान में ग्रहण हो तो व्यक्ति को पूर्वार्जित सम्पत्ति प्राप्त नहीं होती, खुद की मेहनत से ही कमाएगा।

द्वितीय भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. श्रीसूक्त का सुबह-शाम नित्य पाठ करें।
2. श्रीयंत्र+कनकधारा यंत्र+कुबेर यंत्र का नित्य पूजन, दर्शन करें।
3. राहु शन्ति का प्रयोग करें।
4. कड़वा वचन किसी को न बोलें।
5. धन प्राप्ति हेतु दूर्वा एवं काले तिल से राहु का हवन करें।

कर्क लग्न में राहु तृतीय भाव में



कर्क लग्न में तृतीयस्थ राहु कन्या राशि मित्र क्षेत्री होगा। यह राहु भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

जातक अद्वितीय बहादुर एवं साहसी होगा। भाइयों का सुख ठीक होगा। जातक अदम्य साहसी होते हुए भी अन्दर से डरपोक होगा। पिता के साथ उसके सम्बन्ध ठीक (मधुर) नहीं होंगे। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।

निशानी–जातक अधार्मिक एवं तर्की स्वभाव का होगा।

दशा–राहु की दशा ठीक जाएगी।

विशेष–'त्रिषट् एकादशे राहु:' सूत्र के अनुसार राहु मांगलिक दोष को नष्ट करता हुआ यहां उत्तमफल देगा। यदि यहां चन्द्रमा के साथ राहु हो तो जातक के माता की मृत्यु अल्प आयु में होगी।

'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 25 के अनुसार ऐसा जातक भाइयों का विरोधी तथा दृढ़-निश्चयी होता है। मेरे निजी अनुभव से ऐसे जातक को कुटुम्ब में यश नहीं मिलता।

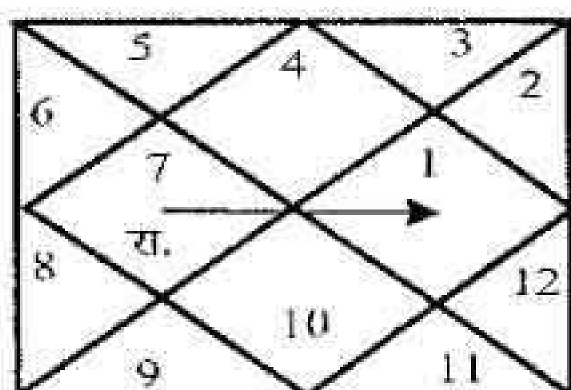
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–यहां राहु के साथ सूर्य होने से जातक पराक्रमी होगा। उसके परिजन धनवान होंगे।
2. **राहु+चन्द्र**–यहां राहु के साथ चन्द्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसे जातक के मित्र अविश्वासी होंगे। परिजनों में विद्वेष रहेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल तृतीय स्थान में होने से जातक महान पराक्रमी होगा पर सगे भाइयों से उसकी नहीं निभेगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध उच्च का होगा। ऐसा जातक महान पराक्रमी होगा। मित्रों से उसे लाभ रहेगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ षष्टेश गुरु मित्रों से दगा दिलाएगा। बड़े भाई का व्यवहार भी संदिग्ध रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र नीच का होगा। ऐसा जातक स्त्री-लोलुप होगा। स्त्री मित्रों से लाभ रहेगा। जातक का चरित्र संदिग्ध रहेगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि गृहस्थ सुख में बाधक है। जातक को अपने ही आत्मीय लोगों के द्वारा भारी धोखा होगा।
8. **ग्रहण योग**–यह जातक की बहनों के लिए घातक योग है। ऐसा व्यक्ति शोरगुल कम पसन्द करता है तथा वह एकान्त प्रिय होता है।

तृतीय भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. भाई-कुटुम्बीजनों को पलटकर जबाब न दें।
2. गलत व्यक्तियों एवं व्यभिचारी स्त्रियों की सोहबत से बचें।
3. जौ रात्रि में सिरहाने रखकर सोएं। प्रात: जानवरों या किसी गरीब को भेंट करें।
4. बड़े भाई या बहन से लड़ने पर चूल्हे की आग बुझ जाएगी।

कर्क लग्न में राहु चतुर्थ भाव में



कर्क लग्न में चतुर्थ भाव में स्थित राहु तुला राशि का मित्र के घर में होगा एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

जातक को माता का प्रेम न मिलेगा। रहने का मकान अच्छा नहीं हो। विद्याध्ययन में रुकावट आएगी। जातक को अपने कुटुम्बीजनों से दूर रहना पड़ेगा। जातक जिस काम में हाथ डालेगी उसमें कोई न कोई रुकावट (बाधा) जरूर आएगी।

दशा–राहु की दशा सुख में न्यूनता लाएगी।

विशेष–चतुर्थस्थ राहु वाहन सुख एवं मातृ-सुख में न्यूनता कराता है। 'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 25 के अनुसार 'कदाचित्सुखी' ऐसा जातक हठबुद्धि वाला होकर कभी-कभी ही सुखी होता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ नीच का सूर्य एक हजार राजयोग नष्ट करता है। ऐसे जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलती।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा जातक को मानसिक संताप कराएगा। ऐसे जातक को माता का सुख कम मिलेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल कुण्डली को **'डबल मांगलिक'** बनाएगा। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होगा तथा उसकी एक भूमि विवादित रहेगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध जातक को पराक्रमी बनाएगा पर मामा से उसकी कम पटेगी।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु **'चाण्डाल योग'** बनाता है। जातक सौभाग्यशाली होगा पर जीवन में गुप्त शत्रुओं की स्थिति बनी रहेगी।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र **'लम्पट योग'** बनाता है। **'मालव्य योग'** के कारण जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'धूर्त योग'** बनाता है। **'शशयोग'** के कारण जातक चार पहियों की गाड़ी का स्वामी होगा। नौकर-चाकर एवं जमीन-भवन से मुक्त राजसी जीवन जीएगा।
8. **ग्रहणयोग**–चौथे स्थान में चन्द्र ग्रहण हो तो माता की मृत्यु सातवें वर्ष में हो जाती है। जातक ज्यादातर किराये के मकान में रहता है।

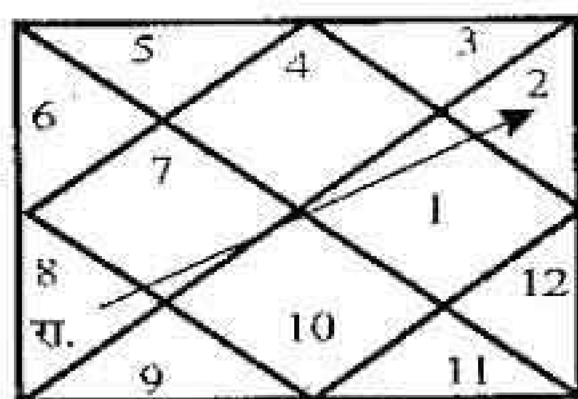
चतुर्थ भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. तेज गति के वाहन से दूर रहें।
2. माता, बुआ या बड़ी बहन की बीमारी में लापरवाही न रखें उनका दिन न दुःखाएं।

3. राहु के वैदिक मंत्रों का जाप करें।

4. राहु शान्ति का प्रयोग करें।

कर्क लग्न में राहु पंचम भाव में



कर्क लग्न में पंचम भाव में स्थित राहु वृश्चिक राशि का शत्रुक्षेत्री होगा। यह राहु विद्या में रुकावट डालने वाला एवं सन्तान सुख में बाधक है।

निशानी–जातक स्वभाव से लुच्चा होगा पर गुप्त विद्या, रहस्यमय शक्तियों का जानकार होगा। ऐसा व्यक्ति प्राय: नाक से बोलता है।

दशा–राहु की दशा निष्फल जाएगी।

विशेष–'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 26 के अनुसार ऐसा जातक पुत्रहीन, कठोर हृदय वाला होता है। मेरे निजी अनुसंधान के अनुसार ऐसे व्यक्ति को पितृदोष एवं सर्पदोष होता है। जिसकी शान्ति कराने से जातक को राहत मिलती है।

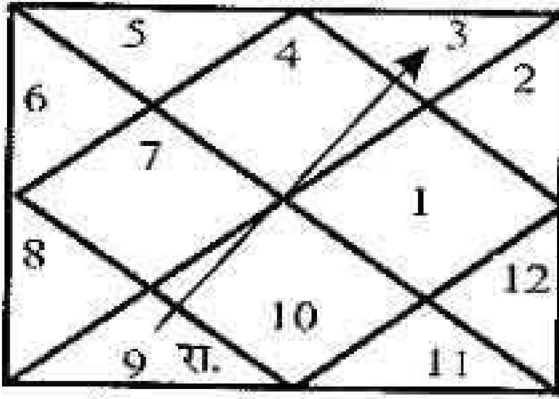
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य जातक को विद्या-हुनर द्वारा लाभ कराएगा। हालांकि जातक की विद्या अधूरी छूटेगी अथवा एक बार उसमें बाधा आएगी।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा जातक को स्व पुरुषार्थ से धनार्जन कराएगा। प्रथम संतति कन्या होगी। कन्या संतति की अधिकता रहेगी। विष भोजन का भय रहेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल स्वगृही होने से जातक टैक्नीकल व मैकेनिकल कार्यों का जानकार होगा। जातक ठेकेदारी से धन कमाएगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध जातक को बुद्धिशाली बनाएगा। परन्तु विद्या का लाभ जातक को जीवन में नहीं मिल पाएगा। जातक की याददाश्त कमजोर होगी।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु जातक के भाग्य में बाधक है। जातक को गुरुजनों से असहयोग की प्राप्ति होगी। बड़ा भाई अपेक्षित मदद नहीं करेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र **'लम्पट योग'** बनाता है। ऐसे जातक को व्यापार में, मातृसुख में अपेक्षित लाभ नहीं मिलेगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि यहां **'धूर्त योग'** बनाएगा। जातक षड्यंत्रकारी योजनाओं में रुचि लेगा। उसके जीवन में गुप्त शत्रु की उपस्थिति रहेगी।
8. **ग्रहणयोग**–पुत्र नहीं होने अथवा अल्पायु वाली सन्तति एवं गर्भपात होता है।

पंचम भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. संतान गोपाल स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
2. राहु के तांत्रिक मंत्रों का जाप, हवन एवं तर्पण करें।
3. राहु की वस्तुओं का दान करें।
4. पितृदोष या कालसर्प योग की शान्ति कराएं।

कर्क लग्न में राहु षष्टम् भाव में



कर्क लग्न में छठे भाव में स्थित धनु राशि का राहु नीच का एवं उद्विग्न होगा। जहां बैठकर वह अपनी उच्च राशि बारहवें भाव को देखेगा।

ऐसे जातक के गुप्त एवं प्रकट शत्रु बहुत होंगे पर जातक शत्रुओं को सबक सिखाने एवं ठिकाने लगाने में पूर्ण सक्षम होगा।

निशानी–जातक अपना काम निकालने हेतु कोई भी, कैसा भी तरीका काम में ले सकेगा।

विशेष–'त्रिषट् एकादशे राहु:' सूत्र के अनुसार राहु यहां मांगलिक दोष को नष्ट करता हुआ उत्तम फल देगा।

दशा–राहु की दशा शत्रु बढ़ाएगी।

सावधानी–जल्दीबाजी में कोई निर्णय न लें। क्रोध पर नियंत्रण रखें एवं धैर्यपूर्वक आगे बढ़ें। 'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 26 के अनुसार ऐसा जातक लक्ष्मीवान और दीर्घायु होता है पर छठे भाव में राहु गुदा रोग कराता है। मेरे निजी अनुसंधान के अनुसार ऐसे जातक को शत्रु परेशान करते रहते हैं। उसे शत्रु पक्ष से कोई न कोई चिन्ता बनी रहती है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

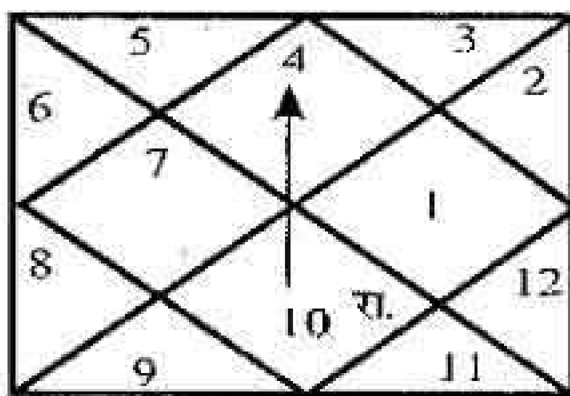
1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**धनहीन योग**' बनाता है। जातक को धन प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। यद्यपि जातक समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होगा पर राजा से दण्डित होगा।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' बनाता है। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। जातक सदैव भयग्रस्त, चिन्ताग्रस्त रहेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**राजभंग योग**' एवं '**विद्याहीन योग**' बनाता है। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' के साथ '**पराक्रम भंगयोग**' भी बनाता है। ऐसा जातक धनी मानी तो होगा पर एक बार उसका पराक्रम भंग होगा।

5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु '**चाण्डाल योग**' बनाता है, साथ ही '**विपरीत राजयोग**' भी बनाता है। ऐसा जातक धनवान एवं ऐश्वर्यवान होता है।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनाता है। ऐसा जातक व्यापार में घाटा उठाता है। स्त्री की वजह से उसे बदनामी मिलती है।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि '**विवाहभंग योग**' बनाता है। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होगा। गृहस्थ सुख में कुछ न कुछ कमी रहेगी।
8. **ग्रहणयोग**–इस स्थान में रा+चं+सू ग्रहण जातक के लिए शुभ होगा परन्तु मामा व मौसियों के लिए ठीक नहीं होता, मौसियां विधवा होती हैं।

षष्टम भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. राहु कवच का नित्य पाठ करें।
2. चांदी की ठोस गोली जेब में रखें।
3. राहु पंचविंशति स्तोत्र का हवनात्मक प्रयोग करें।
4. राहु की वस्तुओं का दान करें।
5. रात्रि को गहरी नींद से सोए हुए व्यक्ति को भूरे-काले रंग का कम्बल ओढ़ाकर चुपचाप चले जाएं।

कर्क लग्न में राहु सप्तम भाव में



कर्क लग्न में सप्तम भाव में स्थित मकर राशि का राहु मित्र क्षेत्री होगा तथा लग्न (प्रथम) भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

राहु की स्थिति वैवाहिक सुख में बाधक है। जातक के धंधे में रुकावट होगी। जातक का अंर्तजातीय विवाह हो जातक मानसिक रूप से सदैव चिन्तित रहेगा।

निशानी–जातक अपने पसन्द की शादी करेगा और पसन्द माता-पिता के विपरीत होगी। जातक स्वयं की पत्नी के अलावा अन्य स्त्रियों की तलाश में भटकता रहेगा। फलदीपिका के अ. 8/श्लोक 26 के अनुसार ऐसे जातक का धन स्त्री संग से नष्ट हो जाता है। ऐसा जातक प्राय: विधुर व अवीर्य वाला होता है।

दशा–मध्यम फलकारी है।

विशेष–

1. यदि यहां शनि हो तो जातक अंर्तजातीय विवाह करता है।
2. यदि यहां राहु के साथ शुभ ग्रह हो तो जातक दूसरा विवाह करेगा।

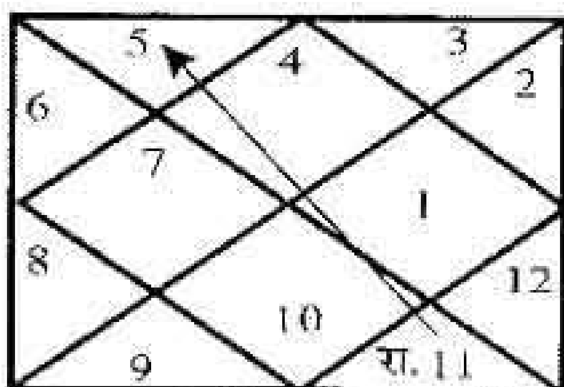
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य जातक का विलम्ब विवाह कराएगा। साथ ही विवाह विच्छेद योग भी बनता है।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा जातक को मानसिक चिन्ता देगा। साथ ही कार्य में सफलता भी देगा। जीवनसाथी शक्की मिजाज का होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल उच्च का होने से '**रुचक योग**' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा। जातक की किस्मत विवाह के बाद चमकेगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध होने से जातक का धन जीवनसाथी के रख-रखाव को लेकर खर्च होगा। जातक फिजूल खर्च होगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ नीच का गुरु होने से '**चाण्डाल योग**' बना। ऐसे जातक का संसर्ग अपने से बड़ी उम्र के स्त्री के साथ होता है।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ सप्तम भाव में शुक्र '**लम्पट योग**' बनाएगा। ऐसा जातक चाल-चलन व चरित्र का अच्छा नहीं होता।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि यहां पर '**शशयोग**' बनाएगा। ऐसा व्यक्ति राजा के समान पराक्रमी-ऐश्वर्यशाली होता हुआ भी धूर्त होगा।
8. **ग्रहण योग**–यदि यहां सूर्य ग्रहण हो तो 48वें वर्ष में जीवनसाथी की मृत्यु होगी। चन्द्र ग्रहण हो तो स्त्री का स्वभाव अच्छा न होने से गृहस्थ संसार के प्रति जातक उदासीन रहता है।

सप्तम भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. राहु शान्ति प्रयोग करें।
2. राहु के वैदिक मंत्रों का जाप रुद्राक्ष की माला पर करें।
3. राहु की वस्तुओं का दान करें।
4. अत्यधिक बूढ़ी एवं बेसहारा स्त्रियों की मदद करें।

कर्क लग्न में राहु अष्टम भाव में



कर्क लग्न में अष्टम भाव में स्थित कुम्भ राशि का राहु मित्रक्षेत्री है। जहां बैठकर वह धन भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

राहु की यह स्थिति पेट में पीड़ा एवं जातक को गुप्त रोग देगी। जातक को धन प्राप्ति में रुकावट महसूस होगी।

जातक पारिजात अ. 5/ श्लोक 91 के अनुसार यदि अष्टमस्थ राहु को कोई पाप ग्रह देखता है तो फोड़े-फुंसी, उष्ण रोग, सर्पदंश या कोई दवाई के प्रतिरोध से जातक की मृत्यु होगी।

दशा–राहु की दशा अनष्टि सूचक है। राहु की दशा में जातक को कोई बीमारी हो सकती है।

विशेष–ऐसे जातक का परिवार बड़ा होता है तथा वह आर्थिक विपन्नता से ग्रस्त होता है। फलदीपिका अनु. 8/26 के अनुसार अष्टमस्थ राहु वाला व्यक्ति विकल, वात रोग से पीड़ित, अल्प सुत वाला, अल्पायु एवं अशुद्ध अकरणीय कर्म करने वाला होता है। मेरे निजी अनुसंधान से ऐसे जातक की वाणी दूषित होती है। ऐसे जातक परिश्रम बहुत करते हैं पर उसका फल उन्हें नहीं मिलता। कुटुम्ब में अपयश एवं आत्मीय जनों से वांछित सम्मान नहीं मिलता।

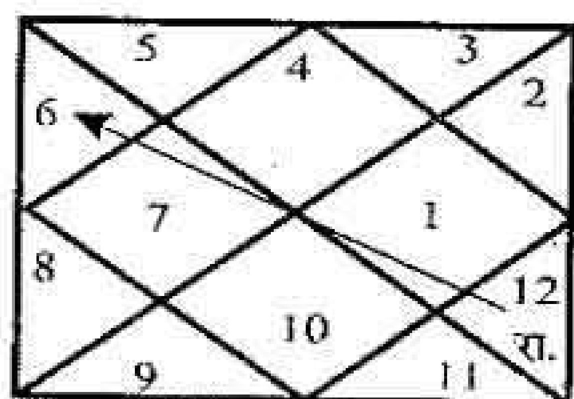
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य यहां **'धनहीन योग'** बनाता है। ऐसे जातक को पग-पग पर आर्थिक विषमता का सामना करना पड़ता है।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ यहां चन्द्रमा **'लग्नभंग योग'** बनाएगा। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता। जातक मानसिक परेशानी में रहता है।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल यहां पर **'विद्याभंग योग'** एवं **'राजभंग योग'** दोनों बनाता है। ऐसा जातक दर-दर भटकता है पर सरकार से उसे सहयोग नहीं मिलता। जातक के प्रत्येक कार्य में बाधा आती है।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध यहां पर **'पराक्रम भंगयोग'** एवं **'विपरीत राजयोग'** दोनों बनाएगा। ऐसा जातक धनवान व ऐश्वर्य सम्पन्न तो होगा पर मानहानि का भय बराबर बना रहेगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु **'भाग्यभंग योग'** एवं षष्टेश अष्टम में होने से **विपरीत राजयोग** दोनों बनाएगा। ऐसा जातक धनवान एवं ऐश्वर्य सम्पन्न होगा पर भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'लग्नभंग योग'** दोनों बनाएगा। फलतः जातक को गुप्त रोग गृहस्थ सुख प्राप्ति में बाधक होंगे तथा उसे व्यापार में भी नुकसान उठाना पड़ेगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **विलम्ब विवाह योग** कराएगा तथा गृहस्थ सुख में बाधा पहुंचाएगा। परन्तु अष्टमेश अष्टम में स्वगृही होने से **विपरीत राजयोग** के कारण जातक धनवान होगा।
8. **ग्रहण योग**–अष्टम भाव में सूर्य ग्रहण हो तो विवाह जल्दी होता हैं पर पुत्र एक ही होता है। स्त्री की आयु कम होती है। चन्द्र ग्रहण हो तो जातक स्वयं अल्पायु वाला होता है। 38वें वर्ष में आयु को खतरा रहता है।

अष्टम भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. राहु कवच का नित्य पाठ करें।
2. असाध्य बीमारी से बचाव हेतु महामृत्युंजय का पाठ करें।
3. हाथीदांत की वस्तुएं घर में न रखे, न प्रयोग में लें।
4. प्राणों पर यदि संकट हो तो अपने वजन के बराबर कच्चा कोयला शनिवार के दिन जल में प्रवाहित करें।
5. यदि बुखार न उतर रहा हो तो 800 ग्राम जौ गौ मूत्र में धोकर शनिवार के दिन जल में प्रवाहित करें।

कर्क लग्न में राहु नवम् भाव में



कर्क लग्न में राहु नवम भाव में मीन राशि का शत्रुक्षेत्री होगा। जहां बैठकर वह तृतीय भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेगा।

राहु की यह स्थिति 45 वर्ष की आयु तक जातक को भाग्योदय हेतु संघर्ष कराती रहेगी। जातक की अपने बड़े भाई के साथ खटपट रहेगी। भागीदारी व्यापार नहीं जमेगा।

निशानी–जातक धर्मग्रन्थों, ज्योतिष–तंत्र–मंत्र के गूढ़ रहस्यों का जानकार होगा।

दशा–राहु की दशा व अंतर्दशा मध्यम अवस्था के पहले कष्टदायक एवं उसके बाद ठीक रहेगी।

विशेष–'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 27 के अनुसार 'धर्मस्थे प्रतिकूल वाग्- गणपुर ग्रामाधिपो अपुण्यवान्। ऐसा जातक प्रतिकूल् वचन बोलने वाला किन्तु किसी समुदाय, नगर या ग्राम का नेता होता है तथा अपुण्यवान, अधार्मिक जातक होता है। मेरे निजी अनुसंधान के अनुसार ऐसा जातक भाग्योदय हेतु अनेक प्रयत्न व धंधे करता है परन्तु फूटे घड़े में जिस प्रकार से पानी नहीं रहता, उसी प्रकार से भाग्योदय हेतु किए गए प्रयत्नों में सफलता नहीं मिलती।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

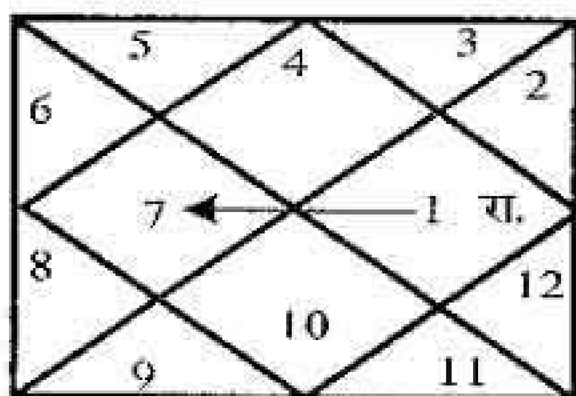
1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य जातक को धनी एवं रौबीला व्यक्तित्व देगा।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ लग्नेश चन्द्रमा जातक को परिश्रम का यथेष्ट लाभ नहीं होने देगा। जातक की माता धार्मिक होगी पर बीमार रहेगी।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल जातक को बड़ी भूमि व जमीन का स्वामी बनाएगा। ऐसा जातक परम प्रतापी होगा।

4. **राहु+बुध**–राहु के साथ नीच का बुध भाग्य स्थान में जातक को परम पराक्रमी बनाएगा। ऐसे जातक का जनसम्पर्क बहुत तेज (सघन) होगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु वैसे तो यहां '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। परन्तु गुरु स्वगृही होने से जातक राजा तुल्य प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होगा। धर्म ध्वज होगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र उच्च का '**लम्पट योग**' बनाता है। ऐसा जातक व्याभिचारी होगा। स्त्री-मित्रों से खूब लाभ होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि '**धूर्त योग**' बनाएगा। जातक षड्यंत्रकारी होगा, कुटिल होगा परन्तु प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होगा।
8. **ग्रहणयोग**–यहां चन्द्र ग्रहण हो तो जातक की अगली पीढ़ी भाग्यवान होती है। सूर्य ग्रहण हो तो माता-पिता की बचपन में मृत्यु होती है।

नवम भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. राहु के वैदिक मंत्रों का जाप, अनुष्ठान करें।
2. राहु शान्ति प्रयोग करें।
3. शीघ्र भाग्योदय हेतु राहु के एक लाख अठारह हजार तांत्रिक मंत्रों का दूर्वा, काले तिल, कर्पूर व कमलगट्टे का हवन करें।

कर्क लग्न में राहु दशम भाव में



कर्क लग्न में दशम भाव में स्थिति मेष राशि का राहु शत्रुक्षेत्री होगी। इसकी दृष्टि चतुर्थ भाव पर रहेगी।

राहु की यह स्थिति जातक के धंधे-व्यवसाय एवं व्यापार के लिए संघर्षपूर्ण राह को बताती है। ऐसे जातक पूर्ण परिश्रमी होते हैं पर सरकार की ओर से परेशानी आ सकती है।

निशानी–जातक पूर्ण परिश्रमी एवं साहसी होगा।

दशा–राहु की दशा मध्यम आयु के पूर्व संघर्षकारी एवं बाद में ठीक हो जाएगी।

विशेष–'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 27 के अनुसार ऐसा जातक सत्कर्महीन, थोड़े पुत्र वाला, निर्भय एवं विख्यात (कुख्यात) होता है। मेरे निजी अनुसंधान के अनुसार ऐसे जातक का व्यापारिक या व्यवसायिक जीवन कलहपूर्ण रहता है। परिवार में विग्रह रहता है। सरकारी अधिकारियों से अनबन रहती है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य उच्च का होगा। '**रविकृत राजयोग**' के कारण जातक परम तेजस्वी व्यक्तित्व का धनी होगा। सरकार में उसका प्रभाव अक्षुण्ण होगा।

2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा यहां उच्चाभिलाषी होगा। फलत: जातक महत्वाकांक्षी होगा। उसे मातृपक्ष से वांछित सहयोग समय पर नहीं मिलेगा।

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ स्वगृही मंगल '**रुचक योग**' बनाएगा। जातक राजा के समान पराक्रमी, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं प्रभावशाली व्यक्ति होगा पर लड़ाकू तथा परम साहसी होगा।

4. **राहु+बुध**–राहु के साथ यहां बुध होने से जातक बुद्धिशाली, पराक्रमी होगा तथा राजा का प्रमुख सलाहकार होगा।

5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ यहां पर गुरु '**चाण्डाल योग**' बनाएगा, परन्तु व्यक्ति अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम रोशन करने से पीछे नहीं रहेगा।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र यहां पर '**लम्पट योग**' बनाता है। ऐसा जातक स्त्री का रसिक एवं अत्यन्त कामी होता है। स्त्रियां भी इनके प्रति सहज ही आकर्षित हो जाती हैं।

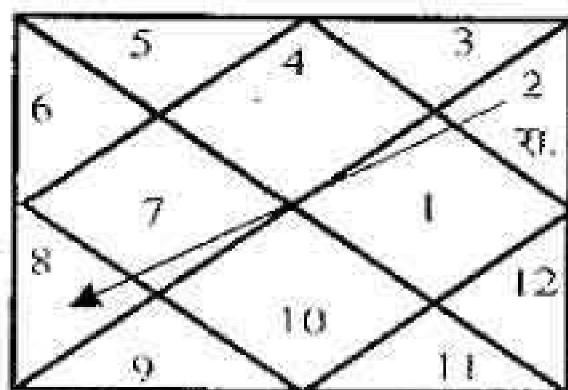
7. **राहु+शनि**–यहां पर राहु के साथ नीच का शनि '**धूर्त योग**' बनाता है। ऐसा जातक अत्यन्त चालाल व कूटनीतिज्ञ होता है। इनसे दुश्मनी करना घातक रहता है क्योंकि यह कभी भी, कुछ भी कर सकता है।

8. **ग्रहण योग**–यहां चन्द्र ग्रहण माता की मृत्यु अल्पायु में कराता है। सूर्य ग्रहण हो तो पिता की मृत्यु बचपन में होती है।

दशम भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. राजयोग की प्राप्ति हेतु राहु के तांत्रित मंत्रों का हवन करें।
2. राहु की वस्तुओं का दान करें।
3. राहु पंचविंशति नाम स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
4. राहु के पंचविंशति स्तोत्र का हवनात्मक प्रयोग काले तिल व दूर्वा से करें।

कर्क लग्न में राहु एकादश भाव में



कर्क लग्न में एकादश भाव में स्थित वृष राशि का राहु मित्रक्षेत्री होगा। यहां बैठकर राहु पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। ऐसा जातक आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होगा। व्यापार-व्यवसाय में उसे आकस्मिक लाभ मिलेगा पर प्रेम प्रकरण में बदनामी मिलेगी।

निशानी–जातक को पुत्र संतान संबंधी चिन्ता रहेगी।

दशा–राहु की दशा अकस्मात लाभ एवं उत्तम फल देगी।

विशेष–'त्रिषट् एकादशे राहु:' के सूत्र के अनुसार राहु यहां मांगलिक दोष को नष्ट करता हुआ उत्तम फल देगा। 'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक के अनुसार ऐसा जातक लक्ष्मीवान एवं दीर्घायु होता है परन्तु कान में रोग होता है पुत्र अल्प होते हैं।

मेरे निजी अनुसंधान के अनुसार ऐसा व्यक्ति चिन्तातुर रहता है। धन के मामले को लेकर बदनामी या संघर्ष की स्थिति रहती है। सर्वत्र लाभ दिखलाई देता है पर कांच में दिखाई देने वाले रुपयों की तरह धन हाथ नहीं लगता।

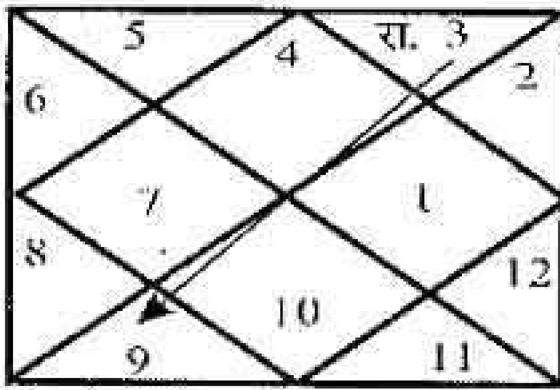
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य जातक को आध्यात्मिक व गूढ़ रहस्यमय विद्याओं का ज्ञाता बनाता है। जातक व्यापार प्रिय होगा।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्र होने से ऐसा व्यक्ति स्वपराक्रम से आगे बढ़ता है। उच्च का चन्द्रमा उसे उच्च कल्पना शक्ति देगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल जातक को उद्योगपति बनाएगा तथा वह ऐसा जातक रचनात्मक कार्य करने वाला होता है तथा वह खाली नहीं बैठ सकता।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ यहां पर बुध होने से जातक महान पराक्रमी होगा पर व्यापार-व्यवसाय को लेकर खर्च बढ़े-चढ़े होंगे।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु यहां पर **चाण्डाल योग** बनाता है। ऐसे जातक का जो भी स्वप्न आएंगे वे सच होंगे। जातक में पूर्वाभास की शक्ति होगी।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र स्वगृही होकर **'लम्पट योग'** बनाएगा। ऐसा जातक विलासी होगा तथा व्यापार में खूब धन अर्जित करने में सक्षम होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि होने से **'धूर्त योग'** बनेगा। ऐसा जातक शठ होगा। जातक दूसरों को उल्लू बनाने में समर्थ होगा पर उसका खुद का गृहस्थ जीवन ज्यादा आनन्ददायक नहीं होगा।
8. **ग्रहणयोग**–इस स्थान पर चन्द्र ग्रहण शुभ होता है जातक अनेक प्रकार के धंधों से धन कमाता है। यदि यहां सूर्य ग्रहण हो तो जातक को बड़े भाई के कुटुम्ब का पोषण करना पड़ता है।

एकादश भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. भंगी या निम्न वर्ग के व्यक्ति को कभी-कभी खैरात दें। उनके जरूरत की वस्तु भेंट करें।
2. रात को आराम करने की जगह पर शक्कर की बोरी या सौंफ की बोरी कायम रखने से राहु की अशुभ फल नष्ट होगा।
3. राहु शान्ति प्रयोग करें।

कर्क लग्न में राहु द्वादश भाव में



कर्क लग्न में द्वादश भाव में स्थित मिथुन राशि का राहु उच्च का होगा। यहां बैठक राहु छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

राहु की यह स्थिति जातक को अधिक यात्राएं करायेगी। ज्यादा यात्रा सार्थक न होगी। राहु जातक से बड़े-बड़े खर्चे भी कराएगा। यदि खर्च पर नियंत्रण न रहा तो जातक कर्जदार भी हो सकता है।

विशेष–राहु की सही स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए राहुगत राशि स्वामी की स्थिति को देखना अनिवार्य है। 'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 27 के अनुसार–'प्रच्छन्ना अघरतो बहुव्यय करो' ऐसा जातक प्रच्छन्न पाप करने वाला, आय से अधिक खर्च करने वाला जलोदर रोग से ग्रसित होता है। मेरे निजी अनुसंधान के अनुसार ऐसे जातक को मानसिक तनाव सदैव बना रहता है। जातक यात्राएं बहुत करता है। धन की भारी चिन्ता रहती है। उधार दिया हुआ पैसा डूब जाता है परन्तु खुद के कर्जे उतारने का परिस्थिति में परेशान रहता है।

दशा–राहु दशा मिश्रित फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**धनहीन योग**' बनाएगा। ऐसा जातक आर्थिक विषमताओं के मध्य में गुजरेगा एवं आध्यात्मिक व्यक्ति होगा। जातक त्यागी व परोपकारी होगा।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा होने से जातक मानसिक तनाव में रहेगा एवं उसे परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**विद्याभंग योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनाएगा। ऐसे जातक का पुरुषार्थ ज्यादा सफल नहीं होता है। पुत्र भी उसके कहने में नहीं रहते।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ स्वगृही बुध होने से '**विपरीत राजयोग**' बनता है। ऐसा जातक धनी एवं ऐश्वर्यशाली होगा। यात्रा-व्यवसाय एवं बुद्धिबल से खूब धन कमाएगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु '**भाग्यभंग योग**', '**चाण्डाल योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' तीनों योगों के बराबर सृष्टि करेगा। ऐसा जातक ऐश्वर्य सम्पन्न तथा कूटनीतिज्ञ होगा एवं समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**सुखहीन**', '**लाभभंग योग**' एवं '**लम्पट योग**' तीनों योगों के बराबर सृष्टि करेगा। ऐसा जातक परस्त्री में बहुत दिलचस्पी लेगा तथा विदेश में जाकर खूब धन कमाएगा।

7. **राहु+शनि**—राहु के साथ यहां शनि '**धूर्त योग**', '**विलम्ब विवाह योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' तीनों योगों की बराबर सृष्टि करेगा। ऐसा जातक ऐश्वर्यवान होगा पर दगा करना उसकी फितरत होगी। उसका गृहस्थ सुख बिगड़ा हुआ होगा।

8. **ग्रहण योग**—यहां चन्द्र ग्रहण हो तो जातक की वृद्धावस्था कष्टमय रहती है। सूर्य ग्रहण हो तो वृद्धावस्था में धन की तकलीफ रहती है।

द्वादश भाव के अशुभ राहु का उपचार—

1. आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए अपनी आय का कुछ हिस्सा पुत्री, बहन, बुआ, भानजी पर खर्च करें।
2. लाल कपड़े की थैली में सौंफ डालकर सिलाई कर लें। यह थैली सिरहाने रखें तो बुरे स्वप्न समाप्त होंगे। राहु का भार मिटेगा।
3. रसोई में बैठकर खाना खाने से राहु का अशुभ प्रभाव नष्ट हो जाता है।
4. राहु कवच का पाठ करें।
5. राहु का तांत्रिक हवन करें।

❑❑❑

केतु का वैदिक व पौराणिक स्वरूप

नवग्रहों में अन्तिम इस छाया ग्रह की गणना दुष्ट ग्रहों में होती है।[1] यह राहु का धड़ माना गया है। ज्योतिषशास्त्र में इसके दुष्ट फल का वर्णन इस प्रकार पाया जाता है–"आर्द्रा, आश्लेषा अथवा केतु जिस पक्ष में हो, इन नक्षत्रों में जन्म लेने वाले व्यक्ति को प्राणों का संकट होता है।[2] वराहमिहिर ने 'केतुचाराध्याय' में इसकी गति और क्रूर फल का विस्तृत से वर्णन किया है।[3]

ऋग्वेद में सूर्य और उसकी रश्मियों के लिए 'केतु' शब्द का प्रयोग हुआ है।[4]

बेबर के अनुसार अद्‌भुत ब्राह्मण में उल्का या धूमकेतु अर्थ से यह शब्द आया है।[5]

तैत्तरीय आरण्यक ब्राह्मण में बहुवचन के साथ इसका प्रयोग मिलता है।[6] ऋग्वेद में अनेक जगह सूर्य और उसकी रश्मियों के लिए 'केतु' शब्द का प्रयोग हुआ है।[7]

वेदों में धूमकेतु का स्वरूप

अथर्ववेद में धूमकेतु शब्द **'शं नो मृत्युर्धूमकेतुः'** मृत्यु का विशेषण है। त्सिमर के अनुसार यह पुच्छल तारा के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।[8] इसका अर्थ है धुएं की पताका वाला, जिमर इसका

---

1. "ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुःशशी भूमिसुतो बुधश्च, गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।

–ब्रह्मनित्यकर्म समुच्चय, प्रातः स्मरणम् ।/श्लोक-11

2. केतुर्यस्मिन्नभ्युदितस्तस्मिन् प्रसूयते जन्तुः। रौद्रे सर्पमुहूर्ते वा प्राणैः संत्यजत्याशु।। –ज्योतिषतत्व 1/14
3. बृहत्संहिता अध्याय 11, पृष्ठ 96
4. प्र केतुना बृहता यात्यग्नि रा रोदसी बृषभो रोराधीति। दिवश्चिदन्तां उपमं उदानलपामुपस्थे महिषे ववर्ध ।।ऋग्वेद 10/8/1
5. वैदिक कोश--पृष्ट 108
6. तैत्तरीय आरण्यक 1/23/2, 1/24/4, 1/3/1/6
7. ऋग्वेद मण्डल, 10/ सूक्त 8/मंत्र।
8. अथर्ववेद-19/9/10

अर्थ उल्का लगाते हैं। लानमान इससे दाह संस्कार के समय चिता में से निकले धुएं का अर्थ करते हैं। ज्योतिष ग्रन्थों के अनुसार यह पुच्छल तारे का नाम है।[1] अथर्वसंहिता में उल्का-पात का वर्णन विस्तार से मिलता है।[2] इसी सूक्त में सप्तऋषियों का वर्णन भी मिलता है।

वेदों में शकधूम का स्वरूप

शकधूम्र नक्षत्रणि यद्राजानमकुर्वत! अथर्ववेद 6/128/1

अर्थववेद में शकधूम को नक्षत्रों का राजा बताया गया है।[3] शकधूम शब्द का अर्थ है 'गोमयाग्नि से उत्पन्न धूम' बेबर का विचार है कि इसे मौसम की विशेषता समझा जाता है।[4]

ब्लूमफील्ड का मत है कि इस शब्द का अर्थ मौसम का भविष्य वक्ता है जो अग्नि के धूम के आधार पर भविष्यवाणी करता है।[5] राथ ने अपनी डिक्शनरी में लिखा है कि यह कोई नक्षत्र वर्ग का आकाश गंगा हो सकती है।[6] वस्तुत: यह नक्षत्रों का राजा, धुएं की पूछ वाला धूमकेतु का ही वर्णन है।

केतु

1. **प्रिय रत्न**–वैडूर्य
2. **प्रिय वस्तु**–तिल
3. **प्रिय वस्त्र**–कंबल
4. **प्रिय वस्तु**–कस्तूरी
5. **प्रिय शस्त्र**–तलवार
6. **प्रिय वस्त्र**–कृष्णवस्त्र
7. **दान वस्तु**–तैल
8. **प्रिय पुष्प**–कृष्णपुष्प
9. **प्रिय पशु**–छाग
10. **प्रिय दिशा**–वायव्य
11. **प्रिय मण्डल**–ध्वजाकार
12. **नाप**–6 अंगुल
13. **प्रिय देश**–अवन्ति देश
14. **गोत्र**–जैमिनि गोत्र
15. **वर्ण**–धूम्रवर्ण
16. **जप संख्या**–17000

---

1. वैदिक कोश, पृष्ठ 220
2. हिन्दूधर्मकोष डॉ. राजबली पाण्डेय उत्तरप्रदेश, हिन्दी संस्थान लखनऊ, पृष्ठ 343
3. नक्षत्रमुल्काभिहत शमस्तु न:। शं नोऽभिचारा: शमु सन्तु कृत्या:–अथर्ववेद 19/9/9
4. तस्मै तै नक्षत्रराज शकधूम सदा नम:।। अथर्ववेद 6/12/4
5. वैदिक कोश, पृष्ठ 501
6. वैदिक कोश, पृष्ठ 502

केतु का पौराणिक स्वरूप

चक्र से कटने पर सिर राहु कहलाया और धड़ केतु। केतु राहु का ही कबन्ध है। केतु बहुत से हैं (मत्स्य पु. 94/8)। इसमें धूमकेतु प्रधान है (वायु पुराण 153/10)

वर्ण–केतु का वर्ण धूम्र, आयुध गदा तथा वाहन गीध है।

केतु के ध्यान का स्वरूप निम्नलिखित है--

धूम्रा द्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः।
गृध्रासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः॥

(मत्स्यपु. 94/8)

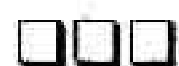
'सभी केतु द्विबाहु हैं। उसके शरीर आदि धूमवर्ण के हैं। उनके मुख विकृत हैं। वे दोनों हाथों में गदा एवं वरमुद्रा धारण किए हैं और नित्य गीध पर समासीन हैं।'

केतु के अधिदेवता 'चित्रगुप्त' एवं प्रत्याधिदेवता 'ब्रह्मा' हैं।

केतु का खगोलीय स्वरूप–राहु की तरह केतु का भी आकाश में कोई पिण्ड नहीं है। राहु यदि सिंहिका राक्षसी के पुत्र का सिर है तो केतु उसी राक्षस का धड़ है। यह धूम्र वर्णीय है। कुण्डली में हमेशा केतु राहु से सातवें स्थान पर रहता है। इसलिए इसकी ग्रह चाल राहु के समान ही चलता है अतः इसका अलग से विश्लेषण प्राप्त नहीं होता।

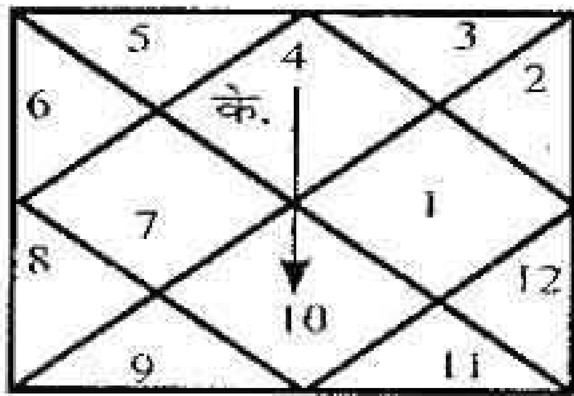
वैसे तो राहु की उच्च राशि से सातवीं राशि केतु भी उच्च होनी चाहिए। पाराशर ऋषि ने "धनु" इसकी उच्च राशि मानी है। परन्तु कुछ विद्वानों ने केतु की उच्च राशि वृश्चिक, मूल त्रिकोणीय राशि कुम्भ, अनुकूल व प्रिय राशि कर्क मानी है। कुछ विद्वानों ने तो इसका फल राहु के अनुसार ही माना है। विंशोतरी महादशा में केतु की दशा 9 वर्ष की लगायी गयी जब कि अष्टोत्तरी दशापद्धति में केतु को अलग से ग्रह नहीं मानकर उसके दशा की व्यवस्था नहीं की गयी।

केतु का ज्योतिषीय स्वरूप–केतु का प्रतीक ध्वजा है। यह ध्वजा विजय, यश, कीर्ति व प्रतिष्ठा का प्रतीक है। फलतः कई आचार्यों ने केतु का प्रभाव राहु से अलग जाना है। यह जैमिनी गोत्र का अवन्ति देश का निवासी एवं ध्वजाकार मण्डल में रहने वाला है। राहु का रत्न "गोमेद" तो केतु का "वैदूर्य" (लहसुनिया) है। राहु नैर्ऋत्य दिशा का स्वामी है तो केतु वायव्य दिशा का स्वामी है। राहु का घर सर्पाकार तथा केतु का स्थान कोना। रंगी-बिरंगी गुदड़ी राहु का वस्त्र है तो केतु का वस्त्र कटा हुआ होता है। दोनों का धातु शीशा है। केतु यदि अशुभ ग्रहों के साथ हो तो अशुभ फल अधिक तीव्रता से देता है। कुण्डली में शुभ ग्रह के दोष दूर हो जाते हैं। केतु दाद, चर्मरोग, शूल, भूख, हृदय रोग, बुद्धि भ्रम, विद्या-बाधा, विष-बाधा, पैर के रोग, पिशाच-बाधा, पत्नी व पुत्र का दुःख, ब्राह्मण और क्षेत्र का विरोध, शत्रु से भय, प्रेत बाधा तथा शरीर की मलिनता से उत्पन्न रोग, गूढ़ विद्या ब्रह्म ज्ञान, शूद्र लोगों और नीच आत्माओं से कष्ट आदि वस्तुओं का कारक ग्रह है।



कर्क लग्न में केतु की स्थिति

कर्क लग्न में केतु प्रथम भाव में



चन्द्रमा के घर में केतु शत्रुक्षेत्री होगा कर्क लग्न में जातक तेजस्वी होता है। पर प्राय: अंग-भंग का खतरा बना रहता है। स्त्री के सुख में कोई न कोई कमी बनी रहती है। जातक मानसिक रूप से शंकालु होता है उसके विचारों में स्थिरता नहीं रहती।

निशानी–जातक के हाथ में पसीना बहुत आता है। जन्म से दूसरा महीना जातक के लिए कष्टप्रद रहेगा। प्राय: मित्र बहुत होते हैं पर वफादार नहीं होते। जातक के चेहरे के आस-पास शहद के रंग का तिल होता है।

जातक के मुंह पर कोई स्थाई दाग-चोट का निशान होगा।

दशा–केतु की दशा तकलीफदायक साबित होगी।

विशेष–राहु राक्षस का सिर है तथा केतु सम्पूर्ण धड़। राहु सर्प का मुख है, केतु सर्प की पूंछ। राहु जहां उग्र अनिष्ट करता है वहां केतु उस अनिष्ट को आधा कर देता है। मेरे निजी अनुसंधान के अनुसार राक्षस का सिर राहु जिस भाव (स्थान) में होगा उस भाव की महत्वाकांक्षा जातक को ज्यादा होगी। जहां केतु उस भाव की तृप्ति होगी, पूर्णता होगी। परन्तु उस भाव की वस्तु प्राप्त करने के लिए ज्यादा लालायित रहेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध–

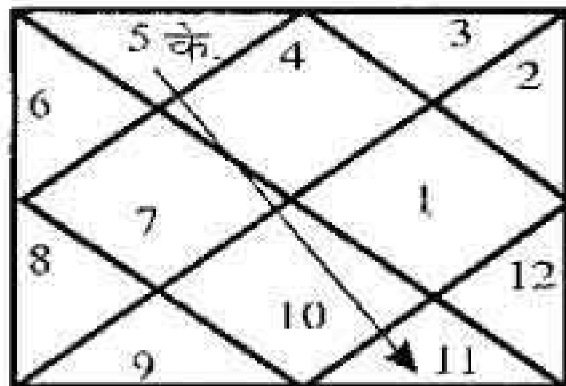
1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य होने से व्यक्ति धर्मध्वज होगा। धनी होगा।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा होने से व्यक्ति सुन्दर आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होगा एवं जीवन में सफल व्यक्ति होगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ नीच का मंगल व्यक्ति को युद्धप्रिय, साहसिक एवं शत्रुओं का मानमर्दन करने में सक्षम बनाता है।

4. **केतु+बुध**–केतु के साथ तृतीयेश बुध लग्न में होने से व्यक्ति पराक्रमी होगा। स्वयं के बुद्धिबल से आगे बढ़ेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु लग्न में उच्च का होने से **'हंस योग'** की सृष्टि होगी। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं साहसी होता है। जातक लालबत्ती की गाड़ी एवं झंडी का अधिकारी होता है।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र लग्न में, व्यक्ति को कुल का नाम रोशन करने वाला कुलदीपक बनाता है। जातक की पत्नी सुन्दर पर कलहप्रिय होगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि लग्न में, व्यक्ति को मिथ्या दम्भी, हठी एवं कूटनीतिज्ञ बनाता है।
8. यदि चन्द्रमा दुःस्थान या नीच का हो, तो जातक सदैव मानसिक तनाव में रहेगा।
9. चन्द्रमा यदि सातवें स्थान में राहु के साथ पीड़ित है तो जीवनसाथी से वैचारिक मतभेद बने रहेंगे तथा जातक मानसिक तनाव में रहेगा।

प्रथम भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. केतु के तांत्रिक मंत्र के एक लाख सत्रह हजार जाप कर, दशांश हवन, कुशा, तिल, कस्तूरी व कपूर से करें।
2. शनिवार के दिन काले कपड़े का दान करें।

कर्क लग्न में केतु द्वितीय भाव में



कर्क लग्न में द्वितीय भाव में स्थित केतु सिंह राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। केतु की दृष्टि अष्टम भाव पर होगी।

ऐसा जातक क्रोधी होगा। धन आएगा एवं चला जाएगा। कुटुम्ब सुख में न्यूनता रहेगी। जातक अपने विचार या पक्ष को स्पष्ट रूप से प्रतिपादित कर पाने में असमर्थ रहेगा।

विशेष–'फलदीपिका' अ 8/श्लोक 28 के अनुसार लग्नस्थ केतु वाला व्यक्ति चुगलखोर एवं कृतघ्न होता है। जातक असज्जनों के साथ रहने वाला(Malefic association) विवर्ण होता है। जातक प्रायः धंधे बदलते रहता है, यह मेरा निजी अनुसंधान है।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

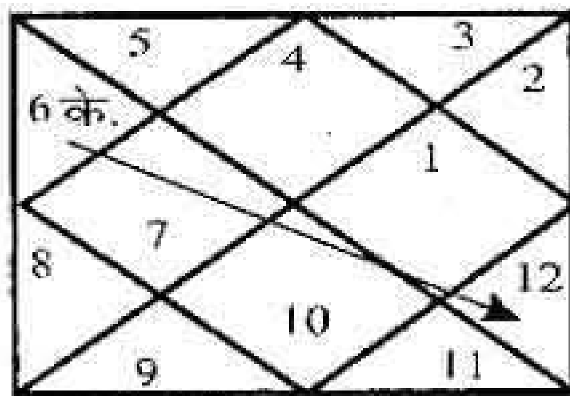
1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य यहां स्वगृही होगा। ऐसा जातक धनवान एवं सत्यवक्ता होगा पर उसकी वाणी लड़ाकू होगी।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ लगनेश चन्द्रमा धन स्थान में व्यक्ति को स्वपुरुषार्थ से आगे बढ़ाएगा। व्यक्ति मध्य आयु के बाद धनी होगा।

3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को तकनीकी विद्या में दक्षता देगा पर वाणी पर नियंत्रण न होने की वजह से जातक का परिजनों में विरोध होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ व्ययेश+तृतीयेश बुध वाणी में हकलाहट देगा। जातक को धन संग्रह करने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु भी वाणी में स्खलन देगा। जातक नीतिज्ञ होगा एवं सारगर्भित भाषण देने में दक्ष होगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक को सुखी-सम्पन्न जीवन देगा। जातक व्यापार से धन कमाएगा। जातक की वाणी विलासप्रिय एवं विरोधाभासी होगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि की युति जातक का आर्थिक विषमताओं से सामना कराएगी। ऐसा जातक मलिन विचारों वाला होगा।

द्वितीय भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. नवरत्न जड़ित श्रीयंत्र स्वर्ण में धारण करें।
2. सुबह-शाम श्रीसूक्त के नित्य पाठ करें।
3. केतु शांति का प्रयोग करें।

कर्क लग्न में केतु तृतीय भाव में



कर्क लग्न में तृतीय भाव में स्थित कन्या राशि का केतु उच्च का होगा। केतु यहां बैठकर भाग्य भवन पर पूर्ण दृष्टि डालेगा।

केतु ध्वज का प्रतीक है। पराक्रम में केतु की स्थिति जातक की कीर्ति पताका कुटुम्ब, समाज एवं कार्यक्षेत्र में अद्वितीय रूप से पहचान में सार्थक साबित होगी। जातक को अपने भाइयों, मित्रों, रिश्तेदारों से अपेक्षित सहयोग उतना ही मिल पाएगा, जितना मिलना चाहिए।

दशा–केतु की दशा राजयोग का फल देगी।

विशेष–'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 29 के अनुसार-आयुर्बलं धनयशः प्रमदान्न सौख्यम्' तृतीयस्थ केतु व्यक्ति को धनवान, यशस्वी, बलवान एवं दीर्घायु वाला बनाता है। स्त्री, अन्न और सुन्दर भोजन का सुख भी देता है परन्तु भाई (विशेषकर बड़े भाई) का सुख, सहयोग नहीं मिलता। ऐसा मेरा निजी अनुसंधान है।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

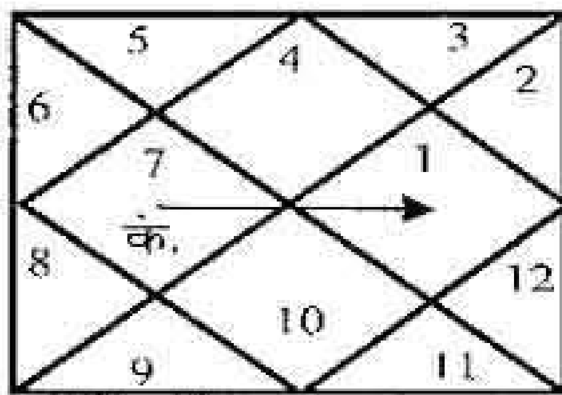
1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य होने से जातक के मित्र पराक्रमी एवं धनी होंगे। जातक शहर का प्रसिद्ध व्यक्ति होगा।

2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा होने से जातक को स्व पुरुषार्थ से अर्जित कीर्ति मिलेगी परन्तु भाई-बहनों में विवाद व मनोमालिन्यता रहेगी।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को परम पराक्रमी बनाएगा। तीन भाइयों का योग देगा पर भाइयों से संबंध सामान्य ही रहेंगे।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ उच्च का बुध जातक को परम यशस्वी बनाएगा। जातक को लेखन प्रकाशन से कीर्ति मिलेगी।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ भाग्येश गुरु होने से जातक परम सौभाग्यशाली होगा। भाइयों एवं मित्रों से लाभ होने की स्थिति बनेगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ नीच का शुक्र जातक को प्रसिद्ध व्यक्ति बनाएगा पर स्त्री-मित्र को लेकर बदनामी भी होगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि तृतीय स्थान मे परिजनों व मित्रों से धोखा दिलाएगा। जातक स्वयं भी लोगों के साथ कपटपूर्ण व्यवहार करेगा।

तृतीय भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. भाई-बहनों के साथ विनम्र एवं सद्-व्यवहार बनाए रखें।
2. अजनबी लोगों व मित्रों पर अत्यधिक भरोसा न करें।
3. अश्वगंधा की जड़ अभिमंत्रित कर ताबीज में धारण करने से यश की प्राप्ति होगी।
4. केसर-चंदन का तिलक नाभि व मस्तिष्क पर लगाएं तो किस्मत खुलेगी।

कर्क लग्न में केतु चतुर्थ भाव में



कर्क लग्न में चतुर्थ भाव में स्थित केतु तुला राशि में मित्रक्षेत्री होगा तथा यहां बैठकर वह दशम भाव को पूर्ण दृष्टि में देखेगा।

केतु की यह स्थिति माता के लिए कष्टकारक है, माता बीमार रहे अथवा जातक को अपेक्षित प्रेम न दे पाएगी। जातक मानसिक रूप से उद्विग्न रहेगी। जीवन में कष्ट व तकलीफों का सामना करना पड़ेगा।

निशानी–जातक का भाग्योदय जन्मस्थान से दूर होगा। जातक को अपनी माता का सुख कम मिलता है।

विशेष–नौकरी-धंधे में स्थान परिवर्तन बार-बार होता रहेगा। 'फलदीपिका' अ. 8/ श्लोक 29 के अनुसार जातक दूसरे के घर में रहता है। उसकी अपनी भूमि, माता, सुख, वित्त नष्ट हो जाते हैं तथा उसे प्रायः जन्मभूमि छोड़नी पड़ती है।

मेरे निजी अनुसंधान में यदि यहां शुक्र की स्थिति खराब हो तो जातक के घर में नौकर चोरी करता है, धोखा देता है तथा उसको वाहन से दुर्घटना का भय रहता है।

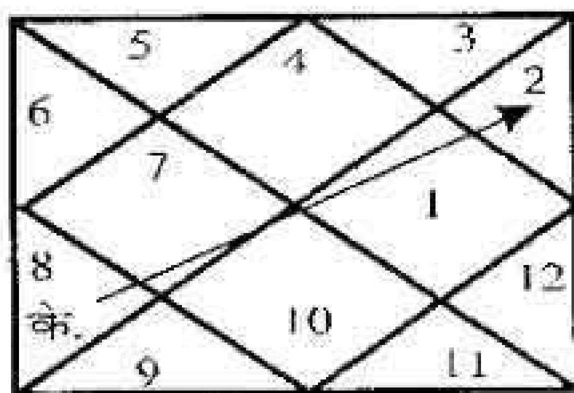
केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ नीच का सूर्य एक हजार राजयोग नष्ट करता है। जातक को सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा जातक को भौतिक सुख सुविधाओं से सम्पन्न करेगा पर वाहन या मकान को लेकर विवाद रहेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ स्वगृहाभिलाषी मंगल जातक को महत्वाकांक्षी बनाएगा। जातक कुटुम्ब का भला चाहने वाला पुरुषार्थी व्यक्ति होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को उत्तम वाहन का सुख देगा। जातक पराक्रमी होगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ भाग्येश गुरु व्यक्ति को सौभाग्य देगा। जातक अपने कुल–परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ स्वगृही शुक्र **'मालव्य योग'** बनाएगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ उच्च का शनि **'शशयोग'** बनाएगा। ऐसा जातक चार पाहियों की गाड़ी, लालबत्ती एवं झंडी का हकदार होगा। जातक पराक्रमी होगा।

प्रथम भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. केतु अष्टोत्तर शत नामावली का हवनात्मक प्रयोग करें।
2. दुर्घटना से बचने के लिए वाहन पर मारुति यंत्र लगाएं।
3. शनिवार के दिन चितकबरे कुत्तों को मीठी रोटी खिलाएं। गुरुवार के दिन कुलपुरोहित को पीले वस्त्र व पीला भोजन भेंट करें।

कर्क लग्न में केतु पंचम भाव में



कर्क लग्न में पंचम भाव में स्थित वृश्चिक का केतु शत्रुक्षेत्री होगा। यह केतु लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

केतु की यह स्थिति संतान सुख के लिए ठीक नहीं विद्या में बाधा आएगी। जातक का चरित्र संदेहास्पद होगा तथा उसकी कथनी व करनी में अन्तर होता है।

निशानी–प्रथम गर्भपात या कन्या सन्तति होगी। एकाध सन्तान की अपरिपक्व मृत्यु का संकेत पंचमस्थ केतु देता है।

दशा–केतु की दशा नेष्ट फल देगी।

विशेष–'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 30 के अनुसार 'पुत्रक्षयं जठर रोग' पिशाचपीड़नम्' ऐसे जातक के पुत्र क्षय होता है। उदर पीड़ा होती है तथा घर-परिवार में पिशाच बाधा होती है। ऐसे जातक को जादू-टोनों से दूर रखना चाहिए।

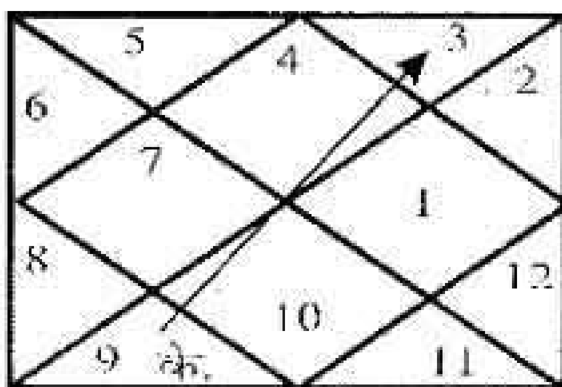
केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य पंचम भाव में जातक को आध्यात्म विद्या का पथिक बनाएगा। ऐसा जातक अल्प संतति वाला होगा।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा पंचम भाव में नीच का होगा। ऐसा जातक अल्पायु पुत्र वाला होगा। जातक को विद्या में बाधा या विषभोजन का भय रहेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ यहां मंगल स्वगृही होने से तीन पुत्रों का योग बनता है। जातक राज दरबार में प्रभाव रखने वाला व्यक्ति होगा। जातक तकनीकी विद्या का जानकार होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ यहां बुध जातक को बुद्धिशाली बनाएगा। एकाध गर्भपात एवं दो कन्या का संयोग बनाएगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ भाग्येश गुरु जातक को पुत्र व कन्या संतति दोनों देगा। ऐसा जातक उपदेशक एवं धर्मध्वज होगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र कन्या संतति की बाहुल्यता देगा। जातक संगीत-साहित्य कला एवं अभिनय प्रिय व्यक्ति होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को विदेशी भाषा में दक्ष बनाएगा। जातक की एकाध संतान की अल्प मृत्यु होगी।

पंचम भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. पितृदोष या कालसर्प योग की शांति करवाएं।
2. केतु शांति प्रयोग करें।
3. केतु के वैदिक मंत्रों का हवनात्मक प्रयोग करें एवं केतु संबंधी वस्तुओं का दान करें।

कर्क लग्न में केतु षष्टम् भाव में



कर्क लग्न में छठे भाव में स्थित धनु का केतु उच्च का होगा। यह केतु व्यय स्थान को पूर्ण दृष्टि में देख रहा है।

केतु की यह स्थिति शत्रुओं पर विजय दिलाने वाली है। जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। जिस कार्य में परिश्रम अधिक हो, जो कार्य साहस से भरा व चुनौतीपूर्ण हो, ऐसे कार्य में हाथ डालने पर जातक को अवश्य सफलता मिलेगी।

दशा–केतु की दशा ऋण, रोग एवं कर्ज यश हेतु शुभ फल देगी।

विशेष–'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 30–'षष्ठे प्रभुत्वं अरिमर्दनं इष्टसिद्धिम्' षष्ट में केतु हो तो जातक उत्तम गुण वाला, दृढ़प्रतिज्ञ, श्रेष्ठ पद प्राप्त करने वाला अरिमर्दक (शत्रुओं को पराजित करने वाला) एवं इष्ट कार्य में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

मेरे अनुसंधान के अनुसार ऐसे जातक के जीवन में रोग और शत्रुओं को लेकर रुपये खर्च होते रहते हैं।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य '**धनहीन योग**' की सृष्टि करेगा। ऐसा जातक संघर्षमय जीवन व्यतीत करेगा। उसे नेत्र पीड़ा भी होगी।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' बनाएगा। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल '**विद्याभंग योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनाता है। ऐसे जातक को जीवन में काफी संघर्ष करना पड़ता है। भूमि को लेकर विवाद रहता है।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' एवं '**पराक्रम भंगयोग**' बनाता है। ऐसा जातक धनवान एवं ऐश्वर्य सम्पन्न होता है पर उसका मानभंग होने का भय बना रहता है।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु **विपरीत राजयोग** एवं '**भाग्यभंग योग**' बनाता है। ऐसा जातक धनवान एवं ऐश्वर्य सम्पन्न होता है। जातक संघर्ष के साथ आगे बढ़ता है।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र लाभभंग योग एवं सुखहीन योग बनाता है। ऐसे जातक को गुप्त शत्रुओं से नुकसान पहुंचता है एवं व्यापार में भी हानि पहुंचती है।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि होने से '**विलम्ब विवाह योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' दोनों बनते हैं। ऐसे जातक का विवाह देरी से होता है परन्तु जातक धन-वैभव से परिपूर्ण जीवन जीता है।

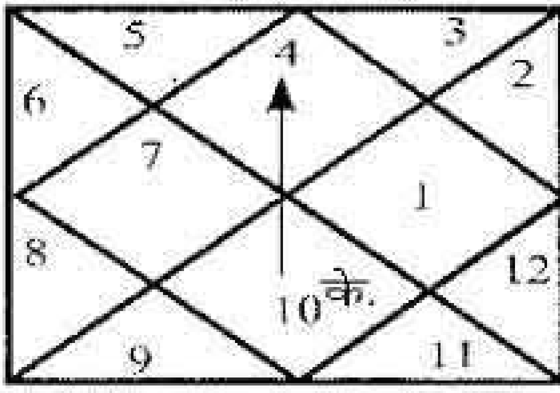
षष्टम भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. केतु कवच का नित्य पाठ करें।
2. काला कुत्ता पाले या शनिवार के दिन काले कुत्ते को दूध रोटी खिलाएं।
3. लहसुन या प्याज शनिवार से शुक्रवार छः दिन तक जल में प्रवाहित करें।
4. अपने बहन, बुआ, पुत्री, मौसी, दोहितें, भाणजे को खुश रखें।

कर्क लग्न में केतु सप्तम भाव में

कर्क लग्न में केतु सातवें भाव में मकर राशि का मित्रक्षेत्री होगा। यह केतु लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

केतु की यह स्थिति जातक का दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण बनाती है। जातक कामी एवं व्याभिचारी होता है। उसका अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध रहता है। जातक, परिश्रमी होता है।



निशानी–ऐसा जातक अपने निर्णय एवं नौकरी-धंधे के स्थान को बार-बार बदलता रहता है।

दशा–केतु की दशा अनिष्टकारक होगी।

विशेष–'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 31 के अनुसार–द्यूने अवमानं असती रतिम्' ऐसे जातक का शेयर मार्केट में अपमान होता है। जातक व्यभिचारिणी स्त्रियों में रत रहता है। जातक को आन्त्र रोग (अलसर) होता है।

मेरे अनुसंधान से जातक का जीवनसाथी रोगी होता है।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

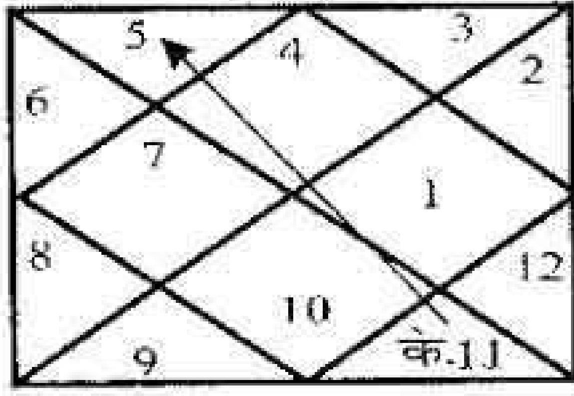
1. **केतु+सूर्य**–यहां केतु के साथ सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा। जातक अस्थिर चित्तवृत्ति वाला एवं विवाह सुख में न्यूनता पाने वाला होता है।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा जातक को चिन्ताग्रस्त रखेगा परन्तु हाथ में लिए गए कार्यों में उसे बराबर सफलता मिलेगी।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ सप्तम भाव में मंगल उच्च का होगा फलत: **'रुचक योग'** बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली तथा बड़ी भूमि का स्वामी होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को पराक्रमी बनाएगा। ऐसा जातक अपने जीवन साथी पर खूब रुपया खर्च करेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ नीच का गुरु जातक को सौभाग्यशाली बनाएगा। विवाह के बाद जातक की किस्मत खुलेगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र व्यक्ति को कामी व स्त्री लोलुप बनाएगा। जातक सुखी-सम्पन्न जीवन जीता हुआ कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ यहां पर शनि स्वगृही होगा। फलत: **'शशयोग'** बनेगा। ऐसा जातक राजातुल्य पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन जीएगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

सप्तम भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. केतु विंशति नाम का पाठ करें।
2. पूर्ण वैवाहिक सुख की प्राप्ति हेतु केतु अष्टोतरशत नामावली का हवनात्मक प्रयोग करें।

कर्क लग्न में केतु अष्टम भाव में

कर्क लग्न में अष्टम भाव में कुम्भ राशि का केतु मित्रक्षेत्री होगा। इस केतु की दृष्टि धन स्थान पर पूर्ण रूप में पड़ेगी।



"केतु की यह स्थिति स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। जातक को अनेक प्रकार के रोग होंगे। जातक अनीति से धन कमाने का प्रयत्न करेगा पर उसमें भी सफलता बराबर नहीं मिलेगी। धन खर्च में जातक परेशान रहेगा।

निशानी–मित्र विश्वासघाती साबित होंगे।

विशेष–प्रयत्न करने पर भी शत्रुओं पर विजय नहीं मिलेगी। '**फलदीपिका**' अ. 8/श्लोक 32 के अनुसार अष्टम केतु हो तो प्रियजनों से विरह, कलह हो। मेरे निजी अनुसंधान के अनुसार जातक को दुर्घटना या अन्य कारण से शस्त्र-चोट जरूर लगती है।

दशा–केतु की दशा अशुभ है।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

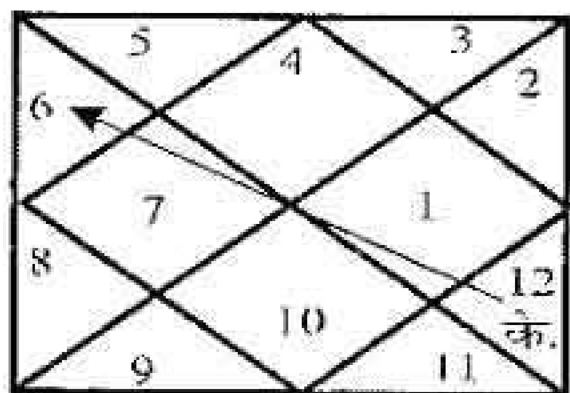
1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य '**धनहीन योग**' बनाएगा। ऐसा जातक जीवन में धन एकत्रित करने के विषय में बड़ा कष्ट उठाएगा। जातक की नेत्र को लेकर शल्य चिकित्सा होगी।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' योग बनाएगा। ऐसा जातक की माता बीमारी रहेगी। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल यहां '**विद्याभंग योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनाता है। ऐसे जातक को विवाह संबंधी समस्या का सामना करना पड़ेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध यहां '**विपरीत राजयोग**' एवं '**पराक्रम भंग योग**' बनाएगा। ऐसा जातक धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न होगा परन्तु मानभंग होने का भय रहेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु यहां '**विपरीत राजयोग**' एवं '**भाग्यभंग योग**' बनाता है। ऐसा जातक धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न होता है परन्तु सफलता प्रारंभिक संघर्ष के बाद मिलेगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनाता है। ऐसे जातक को गुप्त रोग होने का भय बना रहता है। जातक की वाणी ही जातक का शत्रु होती है।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि '**विलम्ब विवाह योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' दोनों बनाता है। ऐसे जातक का विवाह देरी से होता है अथवा गृहस्थ सुख में कुछ न कुछ न्यूनता बनी रहती है फिर भी ऐसा जातक ऐश्वर्य सम्पन्न वैभवशाली जीवन जीता है।

अष्टम भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. केतु कवच का नित्य पाठ करें।
2. कान छिदवा कर सोने का आभूषण पहनें।
3. काला कुत्ते पालें या उसकी सेवा करें।

4. दहेज में प्राप्त चारपाई पर शयन करने का नियम बन पाएं तो केतु अनुकूल होगा।
5. दोरंगा कम्बल धर्म स्थान से भेंट करें तो शुभ रहेगा।

कर्क लग्न में केतु नवम भाव में



कर्क लग्न में नवम भाव स्थित केतु मीन राशि का शत्रुक्षेत्री होगा। इस केतु की दृष्टि तृतीय स्थान पर भी पूर्ण रूप से होगी।

जातक की कुण्डली में केतु की यह स्थिति भाग्योदय में बाधक है। आयु के 45 वर्ष तक संघर्ष की यह स्थिति रहेगी। कमाने के लिए पुरुषार्थ बहुत करना पड़ेगा। व्यक्ति धार्मिक होने का दिखावा करेगा पर अन्तःस्थल में धार्मिक नहीं होगा।

दशा–केतु की दशा संघर्षकारी साबित होगी।

विशेष–'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 32 के अनुसार जातक सज्जनों की निन्दा करने वाला, आलोचक, भाग्यहीन होता है। धनप्राप्ति हेतु संघर्ष करता रहता है। मेरे निजी अनुसंधान में ऐसे जातक का भाग्योदय सद्गुरु की कृपा से होता है।

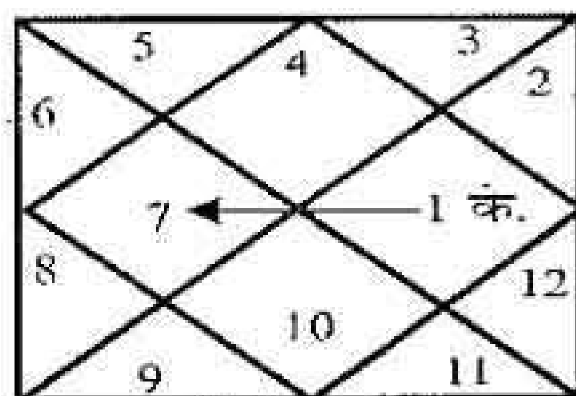
केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को तेजस्वी बनाता है। ऐसा जातक पराक्रमी होता है। राज-सरकार में उसका दबदबा रहता है।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा जातक को सुख-सौभाग्य युक्त जीवन देगा। जातक यशस्वी होगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ यहां मंगल जातक को महत्वाकांक्षी बनाएगा। जातक को पैतृक सम्पत्ति का कुछ हिस्सा मिलेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध नीच का होगा पर जातक के पराक्रम में वृद्धि करेगा। जातक बुद्धिबल से आगे बढ़ेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु स्वगृही होगा। जातक परम भाग्यशाली होगा तथा उच्च पद-प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ उच्च का शुक्र व्यक्ति को राजा के तुल्य प्रभावशाली व्यक्तित्व देता है। ऐसा जातक व्यापार प्रिय होता है।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को संघर्षमय जीवन देगा। भाग्योदय प्रायः विवाह के बाद होगा।

नवम भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. रंग-बिरंगे कपड़े न पहने।
2. तिल, तैल, काले-नीले पुष्प, कस्तूरी व काले वस्रों का दान शनिवार के दिन करे।
3. केतु शान्ति का प्रयोग करे।

कर्क लग्न में केतु दशम भाव में



कर्क लग्न में दशम भाव में स्थित मेष राशि का केतु शत्रुक्षेत्री होगा। केतु की दृष्टि चतुर्थ भाव को प्रभावित करेगी।

केतु की यह स्थिति धन्धे-व्यापार-व्यवसाय हेतु नुकसानदायक है। जातक को सरकारी तन्त्र से परेशानी हो सकती है। घर में माता या मातृतुल्य वृद्ध औरत से भी परेशानी होगी।

निशानी–ऐसे जातक को मित्रों में अपयश मिलेगा। जातक की पीठ पीछे बुराई होगी।

दशा–केतु की आर्थिक दशा कष्टदायक रहेगी।

विशेष–'फलदीपिका' अ. 8/ श्लोक 32 के अनुसार–'तेजस्विनं नयमसि शौर्यं अतिप्रसिद्धम्' ऐसा जातक अत्यन्त तेजस्वी, शूरवीरता के लिए प्रसिद्ध, शत्रुओं का मान-मर्दन करने वाला, सत्कर्म में विघ्न उपस्थित करने वाला तथा संघर्ष के अन्त में सफलता प्राप्त करने वाला व्यक्ति होता है। मेरे निजी अनुसंधान से इस केतु के साथ यदि मंगल हो तो जातक युद्ध में शत्रु को मार देता है।

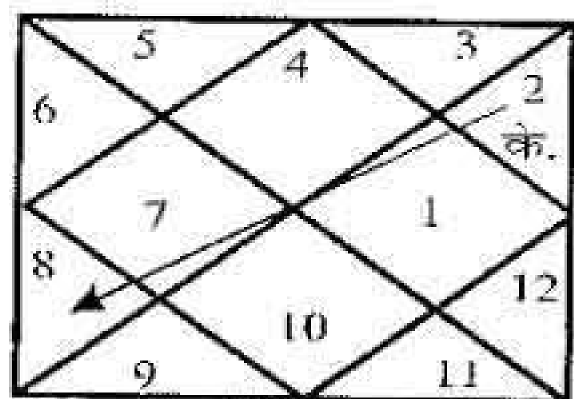
केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–यहां सूर्य उच्च को होने से **'रविकृत राजयोग'** बनेगा जातक सरकारी क्षेत्र में उच्च पद-प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा व्यक्ति को महत्त्वाकांक्षी बनाएगा। ऐसा जातक धनवान होगा एवं स्वपराक्रम से आगे बढ़ेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल स्वगृही होने से **'रुचक योग'** बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं बड़ी भूमि का स्वामी होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध होने से जातक बुद्धिशाली होगा। उसका पराक्रम तेज होगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु होने से जातक सौभाग्यशाली होगा। उपदेशक एवं धर्मध्वज होगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से जातक उत्तम भवन एवं वाहन का स्वामी होगा तथा अपने कुल का नाम रोशन करेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि नीच का होने से जातक कुटिल स्वभाव का होगा।

दशम भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. चित्तकबरे कुत्ते को सता दिन तक दूध-रोटी खिलावे।
2. चितकबरी गाय को चारा खिलावे। इससे अचानक आई विपत्ति दूर होगी।
3. राजयोग की प्राप्ति अभीष्ट हो तो शनिवार के दिन अभिमंत्रित जल से औषध स्नान करें।

कर्क लग्न में केतु एकादश भाव में



कर्क लग्न में एकादश भाव स्थित वृषराशि का केतु मित्रक्षेत्री होगा। यह पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

ऐसे जातक को कठोर परिश्रम करना पड़ता है, तभी भाग्योदय होता है। जातक अनैतिक कार्यों में कमाने में विश्वास रखता है। केतु की यह स्थिति सन्तान एवं विद्या दोनों में बाधक है। बहुत कोशिश करने पर भी व्यापार ठीक से नहीं चलेगा।

दशा–केतु की दशा मिश्रित फलदायक है।

विशेष–केतु राशि के स्वामी शुक्र की स्थिति ही सही फलादेश बताने में सहायक होगी। 'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 33 के अनुसार–**'लाभे अर्थसंचय अनेकगुणं सुभोगम्'**

लाभ स्थान में केतु हो जातक उत्तम द्रव्य वाला, धन संग्रह करने वाला, अनेक गुणो से युक्त, उत्तम भोग, ऐश्वर्य को भोगने वाला होता है। मेरे अनुसंधान में यदि यहां केतु के साथ शुक्र हो तो जातक के पास सुन्दर स्त्री, बढ़िया कार, उत्तम दो मंजिला मकान एवं चार से अधिक नौकर होते हैं। परन्तु ऐसे में लग्न या चन्द्र दोनों में से एक का बलवान होना जरूरी है।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

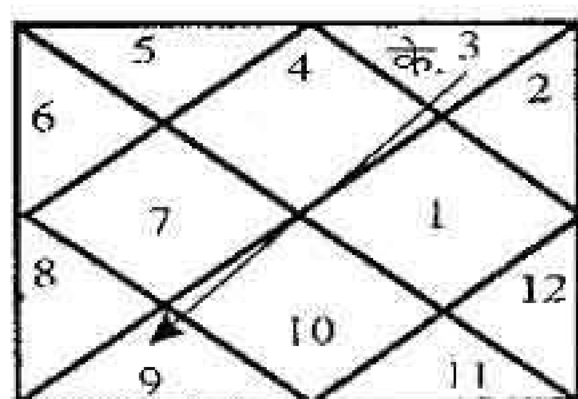
1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य होने से जातक गूढ़ एवं आध्यात्म विद्या का जानकार होगा।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ यहां चन्द्रमा उच्च का होगा। ऐसा जातक उद्योगपति होगा। व्यापार व कम्प्यूटर लाईन में खूब धन कमायेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को भूमि लाभ, पुत्र लाभ एवं तकनीकि विद्या का लाभ दिलायेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध होने से जातक बुद्धिबल, वकालत या अन्य व्यवसाय से यथेष्ट धन कमायेगा। जातक पराक्रमी होगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु होने से जातक भाग्यशाली होगा। उसे पुत्र संतति की प्राप्ति होगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ स्वगृही शुक्र होने से जातक परम भाग्यशाली होगा। उसे सभी प्रकार के भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी।

7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक का भाग्योदय विवाह के बाद कराता है। जातक व्यापार प्रिय होगा।

एकादश भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. घर में छिपकली न घूमने दे।
2. लकड़ी से बनी चारपाई या पलंग दान करें।
3. अश्वगंधा की जड़ को अभिमंत्रित कर लॉकेट में धारण करें।
4. मृत संतान यदि पैदा होती हो तो सफेद मूल स्त्री के सिरहाने रखकर, शनिवार के सवेरे धर्म स्थान में दान देने से नर संतान खुशहाल रहेगी।

कर्क लग्न में केतु द्वादश भाव में



कर्क लग्न में द्वादश भाव में स्थित मिथुन राशि गत केतु नीच का होगा। यहां बैठकर केतु छठे भाव को पूर्ण दृष्टि में देखेगा।

केतु की यह स्थिति जातक को खर्चीले स्वभाव का व्यक्ति बनाएगी। यात्रा अधिक होगी। समाज में, मित्र व कुटुम्बीजनों में वांछित सहयोग मिलता नहीं। जातक को कमाने के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ेगा। बुध की स्थिति अच्छी न हो तो जातक सदैव कर्जदार रहेगा।

दशा–केतु की दशा अशुभ फल देगी।

विशेष–बारहवें केतु सभी जातक को जनन समय में कष्ट देता है। प्रायः 'सिजेरियन' सन्तति उत्पन्न होती है। 'फलदीपिका' अ. 8/श्लो 33 के अनुसार ऐसे जातक गुप्त रूप से, दो नम्बर के कार्यों से, यात्राओं से धन कमाते हैं तथा सज्जनोंचित कार्य के विरुद्ध चलते हैं। मेरे अनुसंधान में केतु के साथ यदि बुध हो तो जातक की हवाई दुर्घटना में मृत्यु होती है।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य **'धनहीन योग'** की सृष्टि करेगा। ऐसे जातक को धन संग्रह के मामले में दिक्कतें आएगी। जातक को नेत्रपीड़ा होगी।
2. **केतु+चन्द्र**–यहां केतु के साथ चन्द्रमा **'लग्नभंग योग'** बनाएगा। जातक के पुरुषार्थ का लाभ नहीं मिलेगा। वामनेत्र में पीड़ा होगी।
3. **केतु+मंगल**–यहां केतु के साथ मंगल **'विद्याहीन योग'**, **'राजभंग योग'** एवं कुण्डली में डबल मांगलिक बनाएगा। ऐसे जातक के विवाह में विलम्ब, विद्या प्राप्ति में विलम्ब, रोजी-रोजगार में विलम्ब होने का संकेत मिलता है।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ स्वगृही बुध होने से **'विपरीत राजयोग'** एवं 'पराक्रम भंग योग' दोनों बनेंगे। ऐसा जातक वैभवशाली एवं ऐश्वर्यसम्पन्न जीवन जीयेगा परन्तु मानभंग होने का भय बना रहेगा।

5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु '**विपरीत राजयोग**' एवं '**भाग्यभंग योग**' बनाएगा। ऐसा जातक धनवान व ऐश्वर्यसम्पन्न होगा परनतु संघर्ष के बाद ही किस्मत चमकेगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ यहां शुक्र '**लाभभंग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' बनाता है। ऐसा जातक सुख-ऐश्वर्य प्राप्त करने हेतु निरन्तर संघर्षशील रहता है।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ यहां शनि **विलम्ब विवाह योग** बनाता है। **विपरीत राजयोग** के कारण जातक धनी होगा एवं साधन-सम्पन्न होगा।

द्वादश भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. केतु कवच का नित्य पाठ करें।
2. 12 दिन तक निरन्तर गुरुवार को शुरू करके 12 केले प्रतिदिन धर्मस्थान में भेंट करने पर केतु का अशुभत्व नष्ट होता है।
3. 12 दिन तक निरन्तर 12 बार प्रतिदिन दूध व शहद में अंगूठा भिगोकर चूसने से केतु अनुकूल होता है ऐसा लाल किताब वाले कहते हैं।
4. केतु के तांत्रिक मंत्रों का जाप करें।

❑❑❑

अरिष्ट निवारण के उपाय

चंद्र यदि निर्बल या पापकर्त्तरी योग से पीड़ित हो निम्न उपचार करें–

1. बालारिष्ट योगों में--मोती युक्त चंद्रमा बनवाकर बच्चे के गले में 8 वर्ष की आयु तक पहनाएं।
2. मोती या चंद्रकान्त मणि पुष्य नक्षत्र में पुजवा कर पेण्डल बनवा कर गले में धारण करें। अंगूठी कभी भी न पहनें क्योंकि उस पर केमिकल लगने से सब नाश हो जाता है। सफेद वस्तुओं का दान करें तथा सोमवार का व्रत करें।
3. लघुरुद्र प्रयोग करें या नित्य शिव पूजन करें।
4. रात को सोते समय पानी का बर्तन सिर के पास रखें तथा वह सुबह पानी पीएं।
5. नित्य दूध शिव पर चढ़ाएं। सफेद फूल भी चढ़ाएं।
6. गृहस्थ दु:ख से पीड़ित औरतें पार्वती का पूजन करें उसे मोगरे या सफेद फूलों की माला पहनाएं। सफेद वस्तु का भोग रखें।
7. शिव मानस पूजन का पाठ करें या चंद्रशेखर अष्टक का पाठ करें।
8. सोमवार को सुन्दर काण्ड का पाठ करें।
9. अनिष्ट चद्रंमा की शांति के लिए पूर्णिमा व्रत सहित चंद्र मंत्र का विधिवत् अनुष्ठान करना चाहिए।
10. कर्क या वृष के निर्बल चंद्र के लिए भगवती गौरी अथवा परांबा ललिता का पूजन करें।
11. मेष या वृश्चिक राशि के चंद्र में दुर्गाजी, मध्य बली चंद्रमा के लिए मां काली, दूषित क्षीण चंद्र में चामुंडा देवी की आराधना करें।
12. भीषण प्रारब्ध कर्मों के नाश के लिए दक्षिणामूर्ति शिव का मंत्र और स्त्रोत पाठ करना चाहिए।
13. स्वास्थ्य एवं त्रिविध तापों के शमनार्थ महामृत्युंजय जप, होम एवं कवच पाठ अमोघ है।
14. चंद्र निर्बलता में कैलशियम की विशेष कमी हो जाती है, अत: उसका सेवन (विशेषकर बच्चों को) बहुत हितकर होता है।
15. भगवती का पूजन करके अंबाशत नाम के द्वारा मां पर सौ श्वेत सुगंधित पुष्प चढ़ाना और ललिता सहस्त्र नाम का पाठ भी इष्टप्रद होता है।

16. केतु के साथ चंद्र होने पर गणपति उपासना करनी चाहिए।
17. दुर्गा सप्तशती का पाठ चंद्र सहित सभी ग्रहों की अनुकूलतादायक एवं सर्वसिद्धिप्रद होता है।
18. बालारिष्ट से बचने हेतु बच्चे के गले में चांदी का चंद्रमा, अभिमंत्रित करके पहनाएं।
19. चंद्रमा को मजबूत करना हो तथा धन प्राप्ति की इच्छा हो तो मोती युक्त ''चंद्र यंत्र'' गले में धारण करें।
20. सोमवार का व्रत 5 से 11 या 43 बार रखें।
21. शिव जी का पूजन करें, अमरनाथ जी की यात्रा या पूजा करें।
22. द्वादश ज्योतिर्लिंगों की यात्रा कर, पूजा करें।
23. चावल, चांदी, दूध आदि का दान करें।
24. सच्चा मोती (दूधिया रंग) धारण करें, मोती के अभाव में चांदी धारण करें।
25. दूध का बर्तन रात को सिरहाने रख कर सुबह पीकर या यज्ञीय वृक्ष में डालना चाहिए।
26. माता (सास/मासी/मामी एवं घर में बुजुर्ग औरतों) का आशीर्वाद लें।
27. चारपाई के पायों में चांदी की कील गाड़नी चाहिए।
28. आसमानी बर्फ (ओले) शीशी में रखें या गंगा जल का प्रयोग करें।
29. श्मशान भूमि में स्थित कुएं (ट्यूबवैल) पर कभी-कभी स्नान करना अथवा चावल या चांदी श्मशान की चारदीवारी के अंदर गिराएं।
30. चलते पानी में (गंगा) स्नान करना।
31. छत पर पानी की टंकी गोल न बनाएं (चौरस का वहम नहीं)।
32. पानी टंकी को 3-6 महीने में सफाई करवाते रहें। घर में कहीं भी पानी के सड़ने से चंद्रमा रुष्ट रहता है। जिनका चंद्रमा दूषित हो उनको अपने घर के आगे कीचड़ या गंदे पानी का जमाव नहीं होने देना चाहिए।
33. सीढ़ियों के ऊपर/सामने हैंडपम्प न रखें (सीढ़ियों के सामने पानी का साधंन न बनाएं।)
34. घर की छत के नीचे कुआं या हैंडपंप न लगाएं।
35. चंद्रमा उच्च हो तो चंद्र की चीजों का दान न दें।
36. चंद्र नीच हो तो चंद्र की चीजों का दान न लें।
37. उपरोक्त उपाय 5 या 11 या 43 दिन या सप्ताह या मास लगातार करने चाहिए।
38. मकर लग्न हो, सप्तमेश चंद्रमा छठे, आठवें या बारहवें हो अथवा पाप-पीड़ित या क्षीण बली हो तो ऐसी स्थिति में वैवाहिक जीवन पूर्णत: कष्टमय होने की संभावना रहती है। भावी वैवाहिक जीवन सुखमय हो इसके लिए विवाह समय में दो बराबर वजन के दूधिया मोती या चांदी के टुकड़े अथवा चावल की ढेरी लें। फिर सुखी गृहस्थ जीवन हेतु संकल्प लेकर, एक टुकड़ा बहते पानी में बहा दें तथा दूसरा टुकड़ा स्त्री अपने पास रखें। जब

तक वह मोती, चांदी का टुकड़ा स्त्री के पास रहेगा, उसका चंद्रमा के अशुभ प्रभाव से बचाव होता रहेगा तथा उसका गृहस्थ जीवन सुखमय बना रहेगा।

39. चंद्र पीड़ा की विशेष शाति हेतु चांदी, मोती, शंख, सांप, कमल और पंचगव्य मिला कर सात सोमवार तक स्नान करें।
40. शिवचालीसा का नियमित पाठ करें।
41. एक अथवा पंचमुखी रुद्राक्ष को पूजा स्थान पर स्थापित कर उसकी नियमित पूजा करें।
42. दक्षिणावर्ती शंख की पूजा करें।
43. ॐ नमः शिवाय की नित्य एक माला का जप करें।
44. तीन सफेद पुष्प प्रति सोमवार एवं पूर्णिमा को कुएं में अथवा बहती-नदी में प्रवाहित करें।
45. रजत पात्र में जल पिएं।
46. न तो सूर्यास्त के बाद दूध पिएं न पिलाएं।
47. हर सोमवार को बबूल के झाड़ पर दूध चढ़ाएं।
48. यदि संतान प्रतिबंधक ग्रह चंद्रमा है तो माता, मौसी, सास, गुरु पत्नी या किसी अन्य सधवा स्त्री के चित्त का दुःख पहुंचाने के कारण जातक को संतान सुख नहीं होगा। अतः चंद्रमा के वेदोक्त मंत्रों के ग्यारह हजार जप करने चाहिए। चंद्रमा संबंधी वस्तुओं का दान करते हुए सोमवार का नियमित व्रत रखना चाहिए।
49. हरिवंश पुराण के अनुसार ऐसे जातक को शिव की उपासना करनी चाहिए।
50. घर में सप्तधातु का श्रीयंत्र स्थापित करें एवं उसके सामने श्रीसूक्त के 15 मंत्रों का नियमित पाठ करें।
51. नवरत्न जड़ित स्पेशल पावरफुल श्रीयंत्र गले में धारण करें।

चंद्राष्टाविंशतिनाम स्तोत्रम्

(चंद्रमा के 28 नामों वाला स्तोत्र)

ध्यान—भगवान शंकर के मस्तिष्क पर मुकुट आभूषण के समान मस्तिष्क पर विराजमान, शीतलता प्रदान करने वाले, धवलित कान्ति वाले, मयूर का मुकुट धारण करने वाले, चार भुजाओं वाले, मृग पर सवार पूज्य चन्द्र देव को नमस्कार करता हूं आचमन में जल लेकर विनियोग करें।

विनियोग—

अस्य श्री चंद्राष्टाविंशति नामस्तोत्रस्य गौतम ऋषिः
सोमो देवता, विराट् छन्दः चंद्र प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।
चंद्रस्य शृणु नामानि शुभदानि महीपते।

यानि श्रुत्वा नरो दुःखान् मुच्यते नोत्र संशय।।1।।
सुधाकरश्च सोमश्च ग्लौरजः कुमुदप्रियः।
लोक प्रिय शुभ्रभानुश्चन्द्रमा रोहिणीपतिः।।2।।
शशी हिमकरो राजा द्विजराजो निशाकारः।
आत्रेय इन्दुः शीतांशुरौषधीशः कलानिधिः।।3।।
जैवात्रको रमाभ्राता क्षीरोदार्णवसम्भवः।
नक्षत्रनायकः शम्भुशिरश्चूडामणिर्विभुः।।4।।
तापहर्ता नभोदीपो नामान्येतानि यः पठेत्।
प्रत्यहं क्रियासंयुक्तस्तस्यपीडा विनश्यति।।5।।

फलश्रुति–

तुहिने च पठेद्यस्तु लभेत् सर्व समीहितम्।
ग्रहादीनां च सर्वेषां भवेच्चंद्रबलं सदा।।6।।

इस स्तोत्र में चंद्रमा के उपनामों का उल्लेख है, जिस पर भी चंद्रदेव की टेढ़ी दृष्टि हो उसको श्रद्धापूर्वक इसका पाठ करना चाहिए। इससे वह सर्वदा सुख व चंद्रदेव का कृपा पात्र बना रहेगा।

चंद्र कवच

ध्यान–दोनों हाथ जोड़ कर चंद्रमा का ध्यान करें।

समं चतुर्भुजः वन्दे केयूरमुकुटोज्ज्वलम्।
वासुदेवस्य नयनं, शंकरस्य च भूषणम्।।

आचमनी जल लेकर विनियोग करें।

विनियोग–

अस्य श्रीचंद्रकवचस्तोत्रमंत्रस्य गौतम ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः,
श्रीचंद्रोदेवता, चंद्र प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।
एवं ध्यात्वा जपेन्नित्यं शशिनः कवचं शुभम्।
शशी पातु शिरोदेशं भालं पातु कलानिधिः।।1।।

चक्षुषी चंद्रमा पातु श्रुती पातु निशापतिः।
प्राणं क्षपाकरः पातु मुखं कुमुदबान्धवः॥2॥
पातु कण्ठं च मे सोमः स्कंधौ जैवातृकस्तथा।
करौ सुधाकरः पातुः वक्षः पातु निशाकरः॥3॥
हृदयं पातु मे चंद्रो नाभिं शंकरभूषणः।
मध्यं पातु सुरश्रेष्ठः कटिं पातु सुधाकरः॥4॥
उरु तारापतिः पातु मृगाङ्को जानुनी सदा।
अब्धिजः पातु मे जंघे पातु पादौ विधुः सदा॥5॥
सर्वाण्यन्यानि चाङ्गानि पातु चंद्रोऽखिलं वपु॥6॥

फलश्रुति–

एतद्धि कवचं दिव्यं भुक्ति-मुक्ति प्रदायकम्॥
यः पठेच्छृणुयाद्वापि सर्वत्र विजयी भवेत्॥7॥

श्रद्धापूर्वक पाठ करने वाले के लिए यह कवच अत्यंत लाभकारी है जो भी मानव इस कवच का पाठ करता है या अन्य किसी के द्वारा इसका श्रवण करता है, वह कठिन से कठिन कार्य में भी सफलता प्राप्त करता है। इसमें संदेह नहीं है।

आह्वान–

चंद्रः-

द्विजराज सुरश्रेष्ठ तारापत्यत्रि-नन्दनः।
औषधीनां सुगमनं सोममावहयाम्यहम्॥1॥

अहोचन्द्रः जगत्प्राण यमुनाविषयोद्भवः।
स श्वेतात्रिगोत्रेय गदापाणी वरप्रदः॥2॥

दशाश्ववाहनायाहि उमारूपीसमाविशः।
हुताशनदलेनेवं मंत्रेणा अश्वग्निनार्चितः॥3॥

ॐ अश्वग्नेसमीधीष्ट वसोषधीरनुध्यसे।
गर्भेसंजायसे पुनः॥4॥

अग्नि कोणे सोमं स्थापयामि–
पिंगल नामाग्नि समिधा-पलाश, फल-इक्षु

वेदोक्त चंद्र मंत्र

वेदोक्त चंद्र मंत्र का विनियोग इस प्रकार है:

इमन्देवेति मंत्रस्य गौतम ऋषिः, द्विपदाविराट्
छन्दः सोमोदेवता, सोम प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ इमं देवोअसपत्नठे, सुवद्ध्वम्महते क्षत्राय महते ज्येष्ठायग्राजमहेत, जानराज्जायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशेषएष वोअमी राजा सोमो स्माकं ब्राह्मणानाठं राजा।।

वैदिक-काल के पश्चात् पौराणिक और तांत्रिक-युग में भी विभिन्न प्रकार के मंत्रों की रचना हुई थी। उन दिनों मुद्रण-कला का विकास नहीं हुआ था, तब समस्त शिक्षा-उपदेश मौखिक रूप से गुरु द्वारा शिष्यों को प्रदान किए जाते थे। पीढ़ियों तक यही परम्परा चलती रही। बाद में इन्हें लिपिबद्ध किया जाने लगा।

पुराणोक्त चंद्र मंत्र—

दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव सव्यहम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।

दैनिक-पूजा में स्तुति की भांति इस लयबद्ध श्लोक का पाठ करना निश्चित रूप से लाभकारी होता है। समर्थजन इसका पाठा अधिक संख्या में (1, 2, 5, 7 माला नित्य) जप सकते हैं।

चंद्र गायत्री मंत्र

ॐ अमृताङ्गाय विद्महे कलारुपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।

अमृत वैदिक अथवा पौराणिक ॐसों सोमाय नमः या अन्य किसी भी मंत्र का जप करके साधक स्वयं को चंद्रदेव का कृपा-पात्र बना सकता है।

वैदिक और पौराणिक-मंत्रों की भांति तांत्रिक-साधना के मंत्र भी अद्भुत शक्तिशाली होते हैं। यह तो साधक की आस्था और रुचि पर निर्भर है कि वह किस मंत्र द्वारा साधना करके स्वयं को चंद्रदेव का अनुग्रही बनाता है। तांत्रिक चंद्र-मंत्र इस प्रकार है:

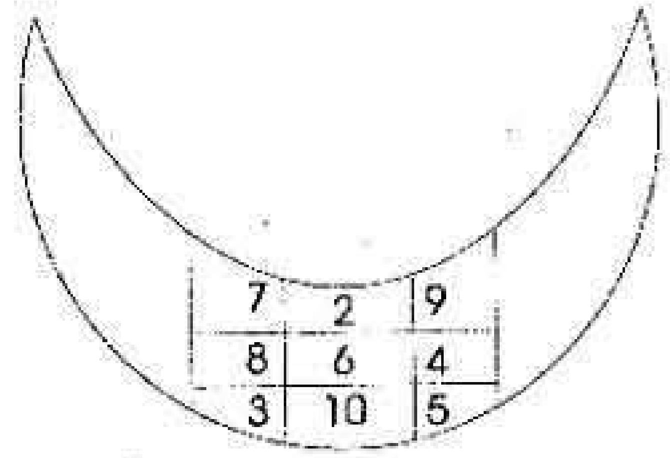
तंत्रोक्त चंद्र मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं सोमाय नमः अथवा ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्राय नमः।

ऊपर दिए गए मंत्रों में से किसी भी एक का मंत्र जप ग्रहपीड़ित जनों को अवश्य ही करना चाहिए। जप की संख्या ग्यारह हजार है और इसका दशांश हवन भी करना चाहिए।

चंद्र यंत्र–

नमस्कार–दधिशंखतुषाराभं,
क्षीरोदार्णवसन्निभम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्,
निर्जितारं च शत्रुणां यजमानाधिदेवताः॥



चंद्र यंत्र

7	2	9
8	6	4
3	10	5

चंद्र यंत्र साक्षात चंद्रदेव की सजीव प्रतिमा होता है प्रायः सभी मंत्रों के विषय में यही धारणा प्रचलित है कि वह संबद्ध देव-शक्ति का रेखांकित स्वरूप होता है। यदि किसी देव शक्ति का मंत्र विधिवत बनाकर पूजा-पाठ और जप, हवन द्वारा सिद्ध कर लिया जाए तो वह आज के भौतिक विज्ञान की मशीनरी से भी अधिक शक्तिशाली और त्वरित प्रभावी सिद्ध होता है, किंतु यह भी एक अति कठोर सत्य है कि आज के युग में यंत्र निर्माण और साधना शत-प्रतिशत शुद्ध रूप में संभव नहीं रह गई, न वे उपादान हैं, न वातावरण, न आस्था है और न धैर्य, न सहिष्णुता। फिर भी जो कुछ उपलब्ध है उसके आधार पर की गई यंत्र साधना चमत्कारी होती है। चंद्र यंत्र की रचना करके पूजन द्वारा उसका लाभ प्राप्त आज भी संभव है।

जप संख्या–11000 कलौ चतुर्गुणित 44000

रत्न–मोती, **उपरत्न**–चन्द्रमणि, स्फटिक

समिधा–पलाश, औषधि

दान–वंशपात्र, चावल, कपूर, मोती, श्वेत वस्त्र, वृषभ, चांदी, धृत कुम्भ, शंख, कौड़ी, दूध, पाउडर, नमक शक्कर, गन्ना (इक्षुरस) श्वेत पुष्प।

❑❑❑

सोमवार व्रत कथा

चंद्र शांति एवं शीतलता के देवता हैं। चन्द्र देव का वार सोमवार है। चन्द्र देव को भगवान भोलेनाथ अपनी जटाओं में धारण करते हैं। इसलिए चन्द्र देव को भगवान शिव की विशेष कृपाएं प्राप्त हैं। चन्द्रदेव की उपासना एवं साधना से चन्द्र देव प्रसन्न होते हैं तथा इच्छित फल प्रदान करते हैं। सच्ची श्रद्धा से चन्द्रदेव का पूजन करने से समस्त कष्टों से मुक्ति मिलती है। चन्द्रग्रह की शांति तथा उनकी विशेष कृपा प्राप्त करने के लिए सोमवार का उपवास रखना चाहिए।

विधि विधान–सोमवार के दिन नित्यकर्मों से निवृत्त होकर घर को स्वच्छ करें। पूजन के स्थान को गोबर अथवा मिट्टी से लीपें। तत्पश्चात् चन्द्र देव व शिव की प्रतिमा स्थापित करें। धूप-दीप जलाएं तथा चन्द के तांत्रिक मंत्र द्वारा इक्कीस अथवा इक्यावन बार जाप करें। तत्पश्चात् अर्घ्य दें। दिन में एक समय गाय को भोजन का भोग दें, एक समय भोजन करें।

तांत्रिक मंत्र–

ॐ सों सोमाय नमः। ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः॥

व्रत कथा–किसी नगर में एक धनवान साहूकार रहता था। उसके घर में धन-धान्य की कोई कमी नहीं थी। हर प्रकार से सम्पन्न होते हुए भी एक ही कष्ट था, वह नि:संतान था। इसी कारण वह दिन-रात दु:खी रहता। पुत्र-प्राप्ति के लिए वह प्रत्येक सोमवार श्रद्धापूर्वक शिवजी का व्रत और पूजन किया करता था तथा शाम को मन्दिर में जाकर शिवजी के सामने दीपक जलाता था। साहूकार की इतनी श्रद्धा व भक्ति को देखकर एक बार माता पार्वती शिव भगवान से बोलीं–''हे नाथ! यह साहूकार आपका बड़ा भक्त है, सदैव आपके व्रत का श्रद्धापूर्वक करता है। आपको इसकी मनोकामना अवश्य ही पूर्ण करनी चाहिए।'' शिवजी महाराज ने पार्वती जी से कहा–''हे गौरी! यह संसार कर्मस्थली है। यहां जो जैसा कर्म करता है वैसा ही फल प्राप्त करता है। इस साहूकार के जीवन में पुत्र का सुख नहीं है।'' तब माता ने आग्रहपूर्वक कहा–''हे प्रभु! यह साहूकार आपका अनन्य भक्त है और इसके कष्ट को यदि आप दूर नहीं करेंगे तो इसका विश्वास आपके ऊपर से उठ जाएगा। हे नाथ! आप तो अपने भक्तों पर दयालु होते हैं और उनके दु:खों को दूर करते हैं।'' माता पार्वती का इतना आग्रह

देखकर भोलेनाथ ने कहा–"हे पार्वती! इसके जीवन में पुत्र योग न होने पर भी मैं इसे पुत्र प्राप्ति का वर देता हूं परन्तु वह केवल बारह वर्ष तक ही जीवित रहेगा। इसके पश्चात् वह मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त मैं इसके लिए कुछ नहीं कर सकता।" शिव एवं पार्वती की यह सब बातें साहूकार सुन रहा था। इससे उसे न कोई प्रसन्नता हुई ना कोई दुःख हुआ वह पहले की ही भांति शिवजी की भक्ति में लगा रहा। कुछ समय पश्चात् साहूकार की स्त्री गर्भवती हुई और निश्चित समय पर उसने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। साहूकार के घर में अत्यंत खुशियां मनाई गईं परन्तु साहूकार ने उसकी बारह वर्ष की आयु जानकर कोई प्रसन्नता प्रकट नहीं की और किसी को यह भेद नहीं बताया। धीरे-धीरे बालक ग्यारह वर्ष का हो गया तो उसकी माता ने साहूकार से उसका विवाह करने के लिए कहा किन्तु साहूकार ने यह कहकर मना कर दिया कि अभी मैं इसका विवाह नहीं करूंगा तथा इसे पढ़ने के लिए काशी भेजूंगा। साहूकार ने लड़के के मामा को बुलाकर कहा कि तुम इसे काशी पढ़ने के लिए ले जाओ और रास्ते में जिस स्थान पर ठहरो वहां यज्ञ व ब्राह्मणों को भोजन कराते जाना व निर्धनों का दान देना। उसने लड़के के मामा को बहुत-सा धन देकर पुत्र सहित विदा किया। दोनों मामा-भांजे रास्ते में यज्ञ कराते, ब्राह्मणों को भोजन कराते व दान करते चले जा रहे थे। रास्ते में एक नगर पड़ा। उस शहर के राजा की पुत्री का विवाह था तथा जो राजकुमार उससे शादी करने आ रहा था वह काना था और यह बात राजा को पता न थी। लड़के के माता-पिता इस बात से बड़े चिन्तित थे। जब काने राजकुमार के पिता ने सेठ के अत्यंत सुन्दर पुत्र को देखा तो उसने सोचा कि क्यों न समस्त विवाह संस्कार इस लड़के के द्वारा पूर्ण करा दिया जाए, इससे हमारी समस्या भी हल हो जाएगी। ऐसा विचार कर उसने अपने मंत्री से विचार-विमर्श कर लड़के के मामा से बात की। मामा-भांजा समस्त कार्य करने के लिए राजी हो गए। तब राजा साहूकार के लड़के को सुन्दर कपड़े पहनाकर तथा घोड़ी पर चढ़ाकर बारात को लेकर चल दिया। तत्पश्चात् वे राजा के द्वार पर पहुंचे। समस्त कार्य प्रसन्नता पूर्वक सम्पन्न हो गए। राजकुमार के पिता ने सोचा कि क्यों न फेरों आदि का कार्य भी इसी लड़के से पूर्ण करा लिया जाए। राजा ने लड़के के मामा से कहा तो उन्होंने स्वीकृति दे दी। फेरों आदि का कार्य भी पूर्ण हो गया। फिर राजकुमारी व राजकुमार मन्दिर में पूजा के लिए गए तो राजकुमारी की चुनरी के पल्ले पर लड़के ने लिख दिया कि तेरा विवाह तो मेरे साथ हुआ है परन्तु जिस राजकुमार के साथ तुम्हें भेजा जाएगा वह एक आंख से काना है और मैं काशी जी पढ़ने जा रहा हूं। राजकुमारी ने जब चुनरी पर ऐसा लिख पाया तो उसने राजकुमार के साथ जाने से मना कर दिया। उसने अपने पिता से कहा कि यह मेरा पति नहीं हैं मेरा पति तो काशी जी पढ़ने गया है। राजकुमारी के पिता ने उसे विदा नहीं किया और बारात वापस चली गई। सेठ का लड़का और उसका मामा काशी पहुंचे। वहां जाकर उस लड़के ने पढ़ना तथा उसके मामा ने यज्ञ करना आरंभ कर दिया। जिस दिन लड़के की आयु बारह वर्ष हुई उस दिन दोनों यज्ञ कर रहे थे। लड़के

ने अपने मामा से कहा 'मामा मेरी तबियत ठीक नहीं है।' मामा ने कहा 'अन्दर जाकर सो जाओ' लड़का अन्दर जाकर सो गया। थोड़ी ही देर में उसके प्राण पखेरू उड़ गए। कुछ देर पश्चात् लड़के के मामा ने अन्दर जाकर देखा कि उसका भांजा मरा हुआ पड़ा है तो वह बहुत दुःखी हुआ। किन्तु उसने सोचा, यदि मैंने अभी रोना-पीटना प्रारंभ कर दिया तो यज्ञ कार्य अधूरा रह जाएगा अतः उसने शीघ्रता से यज्ञ कार्य पूर्ण कर ब्राह्मणों को दान देकर रोना आरंभ किया। संयोग से शिव शंकर पार्वती सहित उधर से जा रहे थे। जब उन्होंने विलाप की आवाज सुनी तो पार्वती ने कहा–"प्रभु, कोई रो रहा है। जाने उसे क्या कष्ट है। आप उसका दुःख दूर करो।" जब भगवान शंकर पार्वती सहित वहां गए तो देखा कि एक लड़का मरा पड़ा है। उसे देख पार्वती जी ने कहा–"नाथ! यह तो वही लड़का है जो आपके वरदान से पैदा हुआ था।" तब शिवजी ने पार्वती से कहा–"देवी! इस लड़के की आयु इतनी ही थी जो पूर्ण हो गई।" पार्वती जी ने विनयपूर्वक कहा–"प्रभु, आप कृपा करके इसे जीवित करें अन्यथा माता-पिता इसके वियोग में अपने प्राण दे देंगे।"

पार्वती के हठ करने पर शिवजी ने लड़के को जीवित कर दिया और फिर शिव-पार्वती अपने धाम को चले गए। शिक्षा समाप्त होने पर लड़का और मामा उसी प्रकार यज्ञ करते हुए ब्राह्मणों को भोजन कराते तथा दान देते जा रहे थे। मार्ग में वह शहर पड़ा जहां लड़के की शादी हुई थी। वहां आकर दोनों ने यज्ञ आरंभ कर दिया। लड़के के ससुर ने उसे पहचान लिया तथा अपने महल में ले जाकर उनकी खातिर की तथा कुछ समय पश्चात् उसने लड़के को बहुत से धन, दास-दासियों व अपनी पुत्री सहित विदा कर दिया।

जब वे अपने शहर के निकट पहुंचे तो लड़के के मामा ने कहा कि मैं घर जाकर तुम्हारे माता-पिता को तुम्हारे आने की सूचना देकर आता हूं। जब वह घर पहुंचा तो लड़के के माता-पिता छत पर बैठे थे तथा उन्होंने प्रण कर रखा था कि यदि हमारा पुत्र सही सलामत आ गया तो हम नीचे उतर आएंगे अन्यथा छत से कूदकर अपने प्राण दे देंगे। लड़के के मामा ने उन्हें यह सूचना दी कि तुम्हारा पुत्र बहुत-सा धन, दास-दासियों तथा अपनी पत्नी के साथ आ गया है तो वे दोनों बहुत प्रसन्न हुए और खुशी-खुशी नीचे आ गए। उन्हें अपने पुत्र को सामने पाकर बहुत प्रसन्नता हुई ओर दोनों ने पुत्र व पुत्रवधू का स्वागत किया और प्रसन्नतापूर्वक रहने लगे। इस प्रकार जो कोई भी सोमवार के व्रत को धारण करेगा अथवा इस कथा को पढ़ता अथवा सुनता है, उसके सब दुःख दूर होते हैं तथा उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं तथा वह सूखपर्वक जीवन व्यतीत कर अन्त में शिवलोक को प्राप्त होता है।

❑❑❑

चंद्र देव सोमेश्वर की आरती

हे सोमदेव अविनाशी, प्रभु राखो लाज हमारी।
मैं दुखिया शरण तुम्हारी, हे चन्द्रदेव बलधारी॥
हे देव! जगत निर्मोही मुझको बड़ा सताए।
कदम-कदम पर मुश्किल, अब तो सहा न जाए।
क्या मैं करूं कुछ समझ न आए ऐसी है लाचारी।
हे सोमदेव अविनाशी मैं दुनिया शरण तिहारी॥
मुश्किल है इन भीषण दुःखों में जीना।
फटा जाए दुःखों से हाए मेरा सीना
बुद्धि रही चकराए, है सुधबुध सभी बिसारी।
हे महादेव अविनाशी मैं दुखिया शरण तिहारी॥
काम क्रोध मद लोभ ने भरमाया।
दिनों में फेर ने मुझको बड़ा सताया।
टूट चुका हूं हे मेरे प्रभु जीवन बाजी हारी।
हे सोमदेव अविनाशी मैं दुखिया शरण तुम्हारी॥
हे प्रभु-सोमेश्वर अपना दरश दिखा दो
कृपा करो हे ईश्वर सारे कष्ट मिटा दो॥
आया हूं प्रभु तेरी शरण में राखो लाज हमारी।
हे सोमदेव अविनाशी मैं दुःखिया शरण तुम्हारी॥
चंद्रदेव सोमेश्वरजी की जय!

❑❑❑

सोलह सोमवार व्रत कथा

एक समय महाकाल शिवशंकर पृथ्वी पर भ्रमण की इच्छा से मां पार्वती के साथ भू-लोक पर आए। दोनों विदर्भ देश की अमरावती नामक एक सुन्दर नगरी में आए। वह भव्य एवं सर्व प्रकार के सुखों से पूर्ण थी। अमरावती में वहां के राजा के द्वारा बनवाया गया एक विशाल मन्दिर था। भगवान रुद्र, माता पार्वती के साथ उसी मन्दिर में निवास करने लगे। एक बार माता-पार्वती ने शिवजी से कहा-''हे नाथ! आज हम चौसर खेलेंगे।'' शिवजी ने पार्वती की बात सहर्ष मान ली और चौसर खेलने लगे। उसी समय मन्दिर का पुजारी पूजा करने के लिए मन्दिर में आया। पार्वती जी ने पुजारी से पूछा-''पुजारी जी, हम दोनों में से कौन जीतेगा?'' ब्राह्मण ने शीघ्रता से कह दिया कि भगवान भोलेनाथ की ही जीत होगी। कुछ देर बाद खेल समाप्त हुआ किन्तु पार्वती जी की जीत हुई। पार्वती जी को ब्राह्मण के झूठ बोलने पर बड़ा क्रोध आया और उन्होंने पुजारी को कोढ़ी होने का श्राप दे दिया। भोलेनाथ ने पार्वती से ब्राह्मण को क्षमा कर देने को कहा किन्तु पार्वती जी ने उनकी बात नहीं सुनी पुजारी श्राप के कारण कोढ़ से ग्रस्त हो गया। वह अनेक प्रकार के कष्टों को सहता हुआ मन्दिर में रहने लगा। कुछ समय पश्चात शिवपूजा हेतु स्वर्ग की अप्सरा मन्दिर में आई। अप्सरा ने पुजारी को इतने कष्ट में देखकर उसके कोढ़ी हो जाने का कारण पूछा। पुजारी ने दीनतापूर्वक सारी बात अप्सरा को बता दी। अप्सरा ने पुजारी से कहा-''हे पुजारी! तुम्हारे कष्ट के दिन समझो समाप्त हो गए। तुम सब प्रकार के व्रतों में श्रेष्ठ 'सोलह सोमवार' के व्रत को नियमपूर्वक रखो। भोलेनाथ की कृपा से तुम्हारे दुःख दूर होंगे।'' पुजारी ने अप्सरा से कहा-''देवी! कृपा करके मुझे सोलह सोमवार के व्रत की विधि बताओ।'' अप्सरा ने बताया-''सोमवार के दिन नित्यकर्मों से निवृत्त हो स्वच्छ वस्त्र धारण करें संध्या अर्चना के पश्चात आधा सेर गेहूं का आटा लेकर उसके तीन भाग बनाएं तथा घी, गुड़, दीप, नैवेद्य, पुंगीफल, बेलपत्र, जनेऊ जोड़ा, चंदन, अक्षत, पुष्पादि के द्वारा प्रदोषकाल में भगवान शंकर का विधि-विधानपूर्वक पूजन करें। पूजन के पश्चात तीन भागों में से एक शिवजी को श्रद्धापूर्वक अर्पण करें तथा अन्य दो को प्रसाद के रूप में कथा सुनने वाले व्यक्तियों में बांट दें तथा स्वयं भी ग्रहण करें। इस प्रकार सोलह-सोमवार का व्रत करें। सत्रहवें सोमवार को पाव-सेर गेहूं के आटे की बाटी बना लें, उसमें घी व गुड़ मिलाकर चूरमा बना लें। शिवजी को भोग लगा प्रसाद को बांट दें, तत्पश्चात स्वयं प्रेम से प्रसाद ग्रहण

करें। ऐसा करने से सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं।'' ऐसा कह अप्सरा स्वर्ग को लौट गई। ब्राह्मण ने विधि-विधान पूर्वक शिवशंकर का व्रत किया तथा भोलेनाथ की कृपा से रोगमुक्त होकर वह पूर्व की भांति रहने लगा। कुछ समय पश्चात शिव-पार्वती फिर मन्दिर में आए। ब्राह्मण को निरोग देखकर पार्वती जी ने उससे इसका कारण पूछा तो ब्राह्मण ने उन्हें सोलह सोमवार के व्रत का महत्त्व कह सुनाया। पार्वती जी अति प्रसन्न हो गईं और उन्होंने ब्राह्मण से व्रत की विधि पूछी तथा स्वयं इस व्रत को किया व्रत के फलस्वरूप उनके पुत्र कार्तिकेय जो उनसे रुष्ट थे, उन्होंने माता से क्षमा मांगी और उनके आज्ञाकारी हो गए। एक दिन कार्तिकेय को अपने हृदय परिवर्तन का रहस्य जानने की इच्छा हुई, तो उन्होंने माता से कहा-''हे माता! आपने ऐसा कौन-सा उपाय किया जिससे मेरे हृदय में आपका सम्मान व प्रेम पुनः जाग्रत हुआ?'' पार्वती जी ने उन्हें सोलह सोमवार के व्रत की महिमा व विधि बताई। कार्तिकेय जी ने माता से कहा-''मेरा परम मित्र बहुत दुःखी हो दूसरे देश को चला गया है और मुझे उससे मिलने की इच्छा है, मैं भी इस व्रत को करूंगा ताकि मेरा मित्र वापस आ जाए। कार्तिकेय जी ने उस व्रत का पालन किया और उनका परममित्र स्वयं उनके पास चला आया। उनके मित्र ने कार्तिकेय जी से अपने इस प्रकार लौट आने का रहस्य पूछा तो उन्होंने कहा-''मित्र! तुम्हारे लिए हमने सोलह सोमवार का व्रत किया था।'' ब्राह्मण मित्र ने कार्तिकेय जी से व्रत की विधि पूछी तथा सुन्दर कन्या से विवाह की अपनी मनोकामना पूर्ति हेतु सोलह सोमवार का व्रत किया। कुछ समय पश्चात जब वह किसी कार्य से विदेश गया तो उस जगह के राजा की कन्या का स्वयंवर था। राजा ने घोषणा की थी कि मेरी पुत्री का विवाह उस व्यक्ति से होगा जिसके गले में रत्न-अलंकारों से सज्जित हथिनी माला डाल देगी। शिव कृपा से ब्राह्मण भी स्वयंवर देखने की इच्छा से वह वहां आया। हथिनी माला लिए आई और उसने अन्य सभी को छोड़ ब्राह्मण के गले में माला डाल दी। राजा ने ब्राह्मण का विवाह अपनी रूपवती कन्या से कर दिया। राजा ने बहुत-सा धन देकर अपनी पुत्री को विदा किया। राजकुमारी को पत्नी रूप में पाकर ब्राह्मण प्रसन्नतापूर्वक जीवन यापन करने लगा। एक दिन राजकुमारी ने अपने पति से पूछा-''हे नाथ! आखिर आपने ऐसा कौन-सा पुण्य किया था कि हथिनी ने राजकुल के व्यक्तियों को छोड़कर आपको माला पहनाई?'' ब्राह्मण ने पत्नी से कहा-''प्रिये! मैंने सब व्रतों में श्रेष्ठ सोलह सोमवारों के व्रत को निष्ठापूर्वक धारण किया और तुम्हें प्राप्त किया। सोमवार व्रतों की महिमा सुनकर वह भी पुत्र प्राप्ति की कामना हेतु षोडष सोमवार व्रत करने लगी। शिवकृपा से उसे अति सुन्दर पुत्र की प्राप्ति हुई। वह बहुत सुन्दर व गुणवान था। जब वह बड़ा हुआ तो उसने अपनी माता से पूछा-''हे माता! आपको किस कर्म के फलस्वरूप आपको मेरे जैसे पुत्र की प्राप्ति हुई?'' माता ने पुत्र को सोलह सोमवार व्रत कथा कह सुनाई। राज्य प्राप्ति की इच्छा हेतु उसने भी सोलह सोमवार व्रत धारण किया। व्रत पूर्ण हो जाने पर एक सम्पन्न देश के राजा ने अपनी राजकुमारी का विवाह ब्राह्मण पुत्र से कर दिया। उस राजा की मृत्यु के पश्चात ब्राह्मण

को राजा बनाया गया और इस प्रकार उसकी मनोकामना पूर्ण हुई राज्य प्राप्त करने पर भी वह पूर्व की भांति सोलह सोमवार का व्रत करता रहा। जब सत्रहवां सोमवार आया तो उसने अपनी पत्नी से पूजा की सामग्री लेकर अपने साथ मन्दिर चलने को कहा। किन्तु उसकी पत्नी ने उसकी बात न मानी। उसने पूजन-सामग्री दासियों के द्वारा शिवालय पहुंचा दी परन्तु वह स्वयं नहीं गई। राजा अकेला ही मन्दिर में गया और जब उसने शिव-पूजन समाप्त किया तो आकाशवाणी हुई-''हे राजा! अपनी धर्मविरोधी रानी को घर से तत्काल निकाल दे अन्यथा तेरा सर्वनाश हो जाएगा।'' राजा को आकाशवाणी सुनकर आश्चर्य हुआ। महल में आकर राजा ने अपनी रानी को राज्य छोड़कर चले जाने को कहा। रानी दु:खी होकर विलाप करती हुई वहां से चली गई। नंगे पांव भूख से व्याकुल व दु:ख से व्यग्र होकर रानी एक गांव में पहुंची। उस गांव में एक बुढ़िया जो सूत बेचने जा रही थी, रानी की ऐसी दशा देखकर बोली-'तू मेरा सूत बाजार में बिकवा दे। मेरी वृद्धावस्था को देखकर कोई मुझे उचित दाम नहीं देता।'' वृद्धा के ऐसे वचन सुन रानी उसकी सूत की पोटली अपने सिर पर रखकर चल दी। कुछ दूर चलने पर बहुत जोर की आंधी आई और वृद्धा की सूत की पोटली उड़ गई। वृद्धा ने रानी को मनहूस समझा और उसे बुरे वचन कहकर वहां से चले जाने को कहा। चलती हुई वह एक तेली के घर पहुंची। शिवशंकर के क्रोध के कारण तेली के मटके उसी क्षण फूट गए। गुस्से में भरकर तेली ने रानी को घर से निकाल दिया। दु:खी हृदय से तथा थके हुए कदमों से रानी एक नदी के किनारे पहुंची तो नदी का समस्त जल सूख गया। कुछ दूर चलने पर रानी एक तालाब पर पहुंची। उसने पानी पीने के लिए जैसे ही जल का स्पर्श किया वैसे ही सरोवर का निर्मल व स्वच्छ जल अनगिनत कीड़ों से भर गया और दूषित हो गया। रानी ने इसे अपने भाग्य का दोष मानते हुए उसी जल को पी कर अपनी प्यास शांत की। फिर वह विश्राम करने की इच्छा से पेड़ के पीछे पहुंची तो हरे पेड़ के पत्ते झड़ गए। वन, सरोवर, जल की यह दशा देखकर वहां गाय चराते हुए ग्वालों ने जंगल में स्थित मंदिर के पुजारी गुसाई जी से सारा वृतांत कह सुनाया। गुसाई जी ने ग्वालों से रानी को अपने पास ले आने को कहा। कुछ ही देर में ग्वाले रानी को गुसाई जी के पास ले आए। रानी के सुन्दर मुख व कोमल शरीर को देख वे समझ गए कि यह अवश्य ही कोई विपत्ति की मारी उच्च कुल की स्त्री है। उन्होंने रानी से कहा-''तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा'' रानी आश्रम में रहने लगी। शिव कोप के कारण रानी जल भरकर लाती तो उसमें कीड़े पड़ जाते, भोजन बनाती तो उसमें भी कीड़े पड़ जाते। रानी की ऐसी दुर्दशा देखकर गुसाई जी को भी बड़ा कष्ट पहुंचा। उन्होंने रानी से कहा-''पुत्री आखिर तुमने ऐसा कौन सा पाप किया है जिसके कारण तुम्हारी यह दशा हुई है?'' रानी ने शिव-पूजन को त्यागने की बात गुसाई जी को बताई। तब गुसाई जी ने सर्व प्रकार के कष्टों से मुक्ति देने वाले सोलह सोमवार के व्रत को करने के लिए कहा। उन्होंने रानी को व्रत की विधि बताई। गुसाई जी की बात सुनकर रानी ने विधि-विधान पूर्वक सोलह सोमवार का व्रत किया, सत्रहवें सोमवार को उसने

विधि-विधान से शिव पूजन किया। व्रत के प्रभाव से रानी के ऊपर जो शिवजी का कोप था वह समाप्त हो गया और तभी राजा के मन में विचार आया कि रानी को गए हुए बहुत समय बीत गया। मुझे उसकी खबर लेनी चाहिए। वह दु:ख की मारी जाने कहां होगी। राजा ने अपने दूतों को चारों ओर भेज दिया जिससे रानी का पता चल जाए रानी को ढूंढते हुए सेवक गुसाई जी के आश्रम में पहुंचे। वहां रानी को देखकर उन्होंने रानी को अपने साथ ले जाने के लिए गुसाई जी से कहा–''परन्तु उन्होंने मना कर दिया। दूतों ने आकर राजा को आकर रानी का पता बताया। राजा स्वयं आश्रम में आया और उसने पुजारी जी से अनुग्रह किया। ''हे महाराज! जो स्त्री आपके आश्रम में रह रही है वह मेरी पत्नी है। मैंने शिव कोप के कारण इसे त्याग दिया था। किन्तु अब शिवशंकर का कोप समाप्त हो गया अत: इसे मेरे साथ भेजने की कृपा करें।'' तब पुजारी जी ने रानी को राजा के साथ जाने की अनुमति दे दी। गुसाई जी की आज्ञा से रानी राजा के साथ प्रसन्नता पूर्वक महल में आ गई। राज्य में चारों ओर खुशियां मनाई गईं। हर ओर हर्ष का वातावरण था। राजा ने यज्ञादि किए और एक बड़ा भोज किया और गरीबों को दान दिया।

इस प्रकार अनेक प्रकार के सुखों का भोग करते हुए सोलह सोमवार का व्रत करते हुए राजा-रानी शिव पूजन करते हुए भू-लोक में नाना प्रकार के सुखों का भोगते हुए शिवलोक को पहुंचे।

इस प्रकार जो भी मनुष्य पूर्ण निष्ठा व भक्ति से सोलह सोमवार का व्रत व पूजन विधि-विधान पूर्वक करता है, वह पृथ्वी पर समस्त सुख-सुविधा को भोगकर अन्त में शिवलोक को प्राप्त करता है।

भगवान शिव की आरती

जयति जयति जग-निवास शंकर सुखकारी।
अजर अमर अज अरूप सत चित आनन्द रूप॥
व्यापक ब्रह्मस्वरूप प्रभु! भय-हारी॥ जयति.....॥
शोभित विधुबॉल भाल, सुरसरिमय जटाजाल।
तीन नयन अति विशाल, मदन दहन-कारी॥ जयति...॥
भक्त हेतु धरत शूल, करत कठिन शूल फूल।
हिय की हरन हूल, अचल शान्तकारी॥ जयति...॥
अमल अरुण चरणकमल, सफल करत काम सकल।
भक्ति मुक्ति देव विमल, माया-भ्रम-टारी॥ जयति...॥
कार्तिकेय युत गणेश, हिमतनया सह महेश।
राजत कैलाश-देश अकल कलाधारी॥ जयति...॥
भूषण तन भूति व्याल, मुण्डमाल कर कपाल।
सिंह चर्म हस्ति-खाल, डमरू कर धारी॥ जयति....॥
अशरण जन नित्य शरण, आशुतोष आर्तिहरण।
सब विधि कल्याण-करण, जय त्रिपुरारी॥ जयति....॥
जयति जयति जग-निवास शंकर सुखकारी॥

भगवान भोलेनाथ की जय!

❑❑❑

कर्क लग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन

1. **माणिक्य**–कर्क लग्न के लिए सूर्य धन भाव का स्वामी होगा। इस कुण्डली में सूर्य लग्नेश चन्द्र का मित्र है। अत: इस कुण्डली के जातक को धनाभाव के समय या आंखों के कष्ट समय माणिक्य धारण करना चाहिए। धनाभाव मारक भाव भी होता है। अत: माणिक्य यदि मोती साथ धारण किया जाए तो अति लाभदायक फल देता है।
2. **मोती**–कर्क लग्न में चन्द्र 'लग्नेश' है। अत: इस लग्न के जातकों को आजीवन मोती धारण करना चाहिए। मोती उनके स्वास्थ्य की रक्षा करेगा तथा आयु में वृद्धि करेगा। यह आर्थिक संकट में भी रक्षा कवच बना रहेगा। मोती पवित्रता, शुद्धता और विनम्रता का सूचक है। आपका 'जीवन रत्न' मोती है।
3. **मूंगा**–कर्क लग्न के लिए मंगल पंचम और दशम भाव का स्वामी होने के कारण एक योगकारक ग्रह है। इसको यदि सदा धारण किया जाए तो संतान सुख, बुद्धि-बल, भाग्योन्नति, यश, मान प्रतिष्ठा, राज्य-कृपा से सफलता प्राप्त होती है। यदि लग्नेश के रत्न मोती के साथ मूंगा धारण किया जाए तो बहुत शुभ फलदायक होता है। विशेषकर स्त्रियों के लिए मंगल की महादशा में इसको धारण करना अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होता है।
4. **पन्ना**–कर्क लग्न में लग्न बुध दो अशुभ भावों-तृतीय और द्वादश का स्वामी होता है तथा लग्नेश शत्रु है अत: इस लग्न के जातकों को पन्ना नहीं पहनना चाहिए।
5. **पुखराज**–कर्क लग्न के लिए गुरु षष्ठम और नवम घर का स्वामी होता है त्रिकोण का स्वामी गुरु इस लग्न के लिए शुभ ग्रह माना गया है। अत: इस लग्न के जातक को पुखराज धारण करने से संतान–सुख, ज्ञान में वृद्धि, भाग्योन्नति, पितृ-सुख, ईश्वर-भक्ति की भावना तथा धन की प्राप्ति होती है। जातक की मान व प्रतिष्ठा बढ़ती है। यदि पीला पुखराज इस लग्न का जातक मोती या मूंगे के साथ साथ धारण करे तो अत्यन्त लाभप्रद होगा।
6. **हीरा**–कर्क लग्न के लिए शुक्र चतुर्थ एकादश का स्वामी है। शुक्र इस लग्न के लिए अशुभ होता है। इसके अलावा लग्नेश चन्द्रमा और शुक्र परस्पर मित्र नहीं हैं। तब भी चतुर्थ और एकादश में हीरा धारण किया जाए तो शुभ एवं फलकारी होता है।

7. **नीलम**--कर्क लग्न के लिए शनि सप्तम (मारक स्थान) और अष्टम (दु:स्थान) भावों का स्वामी होने के कारण अशुभ ग्रह कहा गया है। शनि लग्नेश का शत्रु भी है। अत: इस लग्न के जातक को नीलम कभी नहीं धारण करना चाहिए।

विशिष्ट उद्देश्यपूरक संयुक्त रत्न

1. **संतान हेतु**–मूंगा सवा पांच रत्ती मोती सवा पांच रत्ती, का ग्रह लॉकेट पहनने से सन्तति होती है पर यह लॉकेट महालक्ष्मी योग का भी काम करेगा फलत: धन भी देगा।
2. **भाग्योदय हेतु**–मूंगा सवा चार रत्ती, पुखराज सवा पांच रत्ती 'बीसायंत्र' के साथ जड़वा कर गले में पहनने से शीघ्र भाग्योदय होगा।
3. **आरोग्य हेतु**–मोती सवा पांच रत्ती, मूंगा सवा पांच रत्ती पहनने से स्वास्थ्य ठीक रहेगा। यह लॉकेट महालक्ष्मी योग एवं सन्तति योग देता हुआ 'त्रिबल' रूप से काम करेगा।
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**–माणिक्य सवा पांच रत्ती, मोती सवा पांच रत्ती, मूंगा सवा पांच रत्ती तीनों रत्नों को मिलाकर लॉकेट में पहनें।

❑❑❑

लालकिताब के प्रचलित व अनुभूत टोटके

जब आम उपाय काम न दें तो घंटों में असर देने वाले यह उपाय काम देंगे।

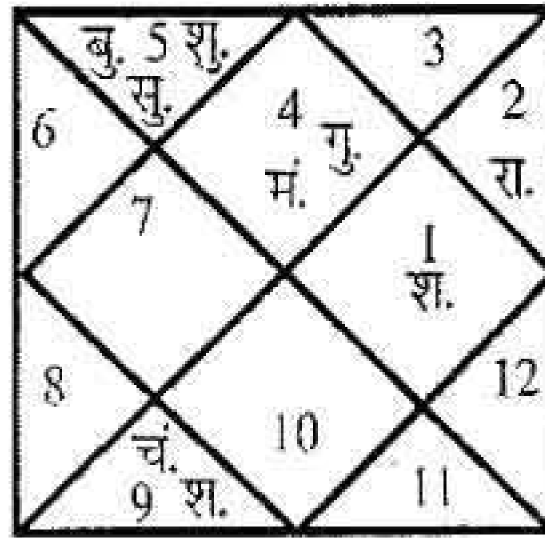
नाम ग्रह	उपाय
गुरु	केसर नाभि या जुबान पर लगाएं या खाएं।
सूर्य	पानी में गुड़ बहाएं।
चन्द्र	रात्रि को दूध या पानी का बर्तन सिरहाने रखकर सुबह उठते ही कीकर को डालें।
शनि	तेल का छाया पात्र करें। शनि खराब हो तो धन की मन्दी हाल में कौवे को रोटी डालें। औलाद की खराब हालत में काले कुत्ते को रोटी डालें।
शुक्र	गोदान या चरी ज्वार दान करें अथवा गाय को अपने भोजन का भाग दें।
मंगल नेक	मिठाई, मीठा भोजन दान करें या बताशे दरिया में डाले।
मंगल बद	रेवड़ियां पानी में बहाएं–मृगछाला मदद करेगी। मंगल के लिए तन्दूर में मीठी रोटी पका कर लाल कुत्तों को खिलाएं।
बुध	तांबे के टुकड़े में सुराख करके चलते पानी में बहा दें।
राहु	मूली दान करें या कोयले दरिया में डालें। रोटी पकाने की जगह में ही बैठकर रोटी खाना राहु के मन्दे प्रभाव से बचाता रहेगा।
केतु	कुत्ते को रोटियां डालें।

हर उपाय की अवधि 40 या अधिक से अधिक 43 दिन है। कुल की बेहतरी के लिए उपाय की अवधि 40-43 हफ्तेवार करना है, यानि हर आठवें दिन, जो कि हफ्ता है, करना होगा। उपाय बीच में हटना नहीं चाहिए, यानी किसी कारण तोड़ना पड़ जाए तो चावल दूध में धोकर पास रख लें। ऐसा करने से पहले किए का फल निष्फल नहीं होगा। (उपाय के समय चाहे आखिर दिन 39 वें या 40 वें दिन ही भूल जाएं या बंद कर बैठे तो सब किया कराया निष्फल हो जायेगा। नये सिरे से पूरी मियाद तक पूरी करें)।

दृष्टांत कुण्डलियां

अवतारी पुरुष, संत-महात्मा, विद्वान

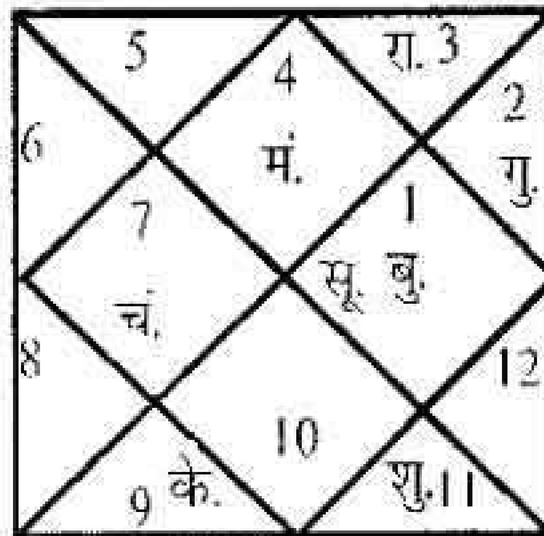
महर्षि अरविन्दो घोष





18.5.1872, प्रात: 4.50, कलकत्ता। क्रांतिकारी कवि, लेखक तत्वज्ञ एवं योगी महर्षि अरविन्द अनेक भाषाओं के जानकार एवं धर्म प्राण व्यक्तित्व के धनी थे।

गौतम बुद्ध





14.4.566, दिन 11.25, कपिलवस्तु। बौद्ध धर्म के संस्थापक, राजकुमार गौतम ने युवास्था में ही संसार की भौतिकता को त्याग कर संन्यास ग्रहण कर लिया।

आद्य शंकराचार्य

भाव	ग्रह
1	शु. बु. सू.
2	रा.
3	
4	च.
5	
6	
7	
8	के.
9	श.
10	
11	गु.
12	मं.



31 मार्च 670, दोपहर 12.00, कालपी। यतिचक्र चूडामणि आद्य शंकराचार्य का जन्म शाके 592 वैशाख शुक्ल पंचमी रविवार का है। असाधारण, बुद्धि, अलौकिक व्यक्तित्व, तेजस्वीता के कारण इन्हें भगवान शंकर का अवतार माना जाता है। इन्होने 16 वर्ष की आयु में चारों वेद एवं 108 उपनिषदों पर भाष्य लिख दिये।

प. मदनमोहन मालवीय

भाव	ग्रह
1	बु. सू. श. च. रा.
2	
3	
4	
5	
6	
7	के. गु.
8	
9	
10	
11	
12	



25.12.1861, समय 19.00, स्थान इलाहाबाद। काशी के मूर्धन्य विद्वान एवं कांग्रेस के उग्रवादी नेता पं. मदन मोहन मालवीय वेद-पुराण व धर्मशास्त्र के मर्मज्ञ ज्ञाता व स्वतंत्रता सेनानी थे।

रामानुजाचार्य

भाव	ग्रह
1	शु. सू. बु.
2	रा.
3	गु. चं.
4	मं.
5	
6	
7	
8	के.
9	श.
10	
11	
12	



जन्म 4 अप्रैल 1017, समय-12.30 बजे। समाज सुधारक, महान दार्शनिक, विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के संस्थापक संस्कृतज्ञ महान् विद्वान्, रामानुजाचार्य हिन्दू सनातन धर्म के विशिष्ट सन्तों में अग्रगण्य थे।

श्री वी.वी.एस. लक्ष्मण

भाव	ग्रह
1	चं.
2	
3	
4	
5	
6	
7	बु. सू. शु. मं.
8	श.
9	
10	
11	गु.
12	



जन्म 23 जुलाई 1936, समय-6.25 बजे।

डा. भोजराज द्विवेदी

भाव	ग्रह
1	
2	
3	
4	मं.
5	श. सू.
6	शु. बु. के.
7	
8	
9	
10	च. गु.
11	
12	रा.



जन्म 4 सितम्बर 1949, समय-4.04 बजे, स्थान-जोधपुर (राजस्थान)। चार सौ से अधिक आध्यात्मिक पुस्तकों के लेखक, सम्पादक एवं क्रांतिकारी लेखनी के धनी, प्रखर वक्ता डॉ. भोजराज द्विवेदी का कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं।

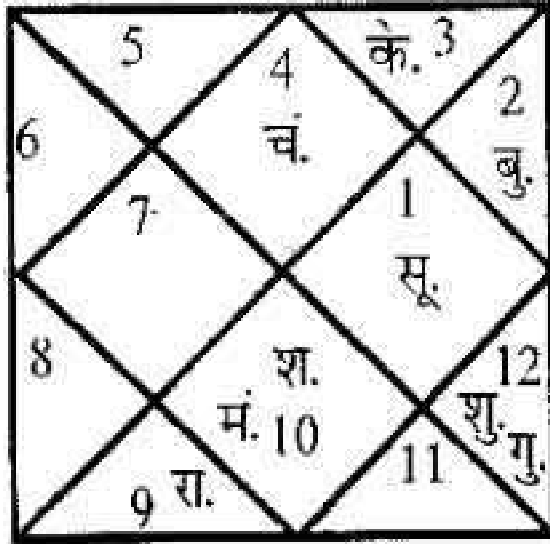
सम्राट विक्रमादित्य

भाव	ग्रह
1	शु.
2	बु. सू. च.
3	रा.
4	गु.
5	
6	
7	श.
8	
9	के.
10	मं.
11	
12	



काल्पनिक कुण्डली। विशाल भारत के चक्रवर्ती सम्राट परम प्रतापी विक्रमादित्य की राजधानी उज्जैन थी। विक्रम सम्वत् 2062 के संस्थापक विक्रमादित्य अलौलिक शक्ति के धनी थे।

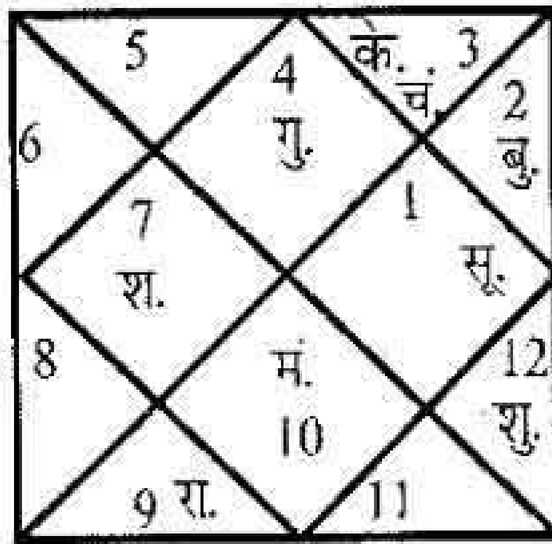
महाराजा युधिष्ठिर





काल्पनिक कुण्डली। महाभारत युद्ध के पश्चात् भारत के चक्रवर्ती सम्राट युधिष्ठर, धर्म न्याय व सत्य के पर्याय थे।

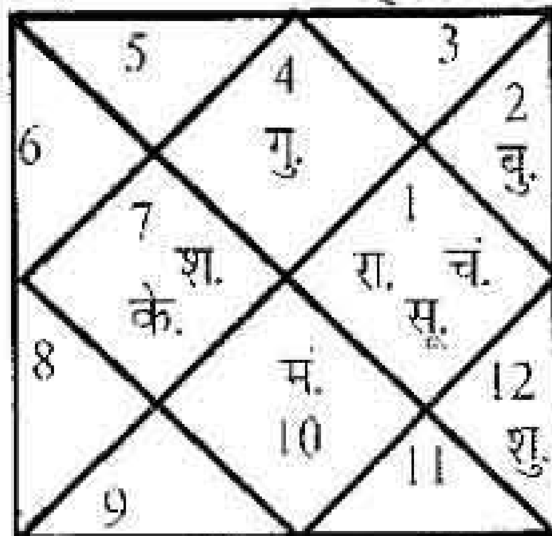
वीरवर अर्जुन





काल्पनिक कुण्डली। महाभारत काल के सबसे तेजस्वी परम पराक्रमी पाण्डुपुत्र वीरवर अर्जुन, भगवान श्रीकृष्ण के परमप्रिय सखा एवं रिश्ते में भाई थे।

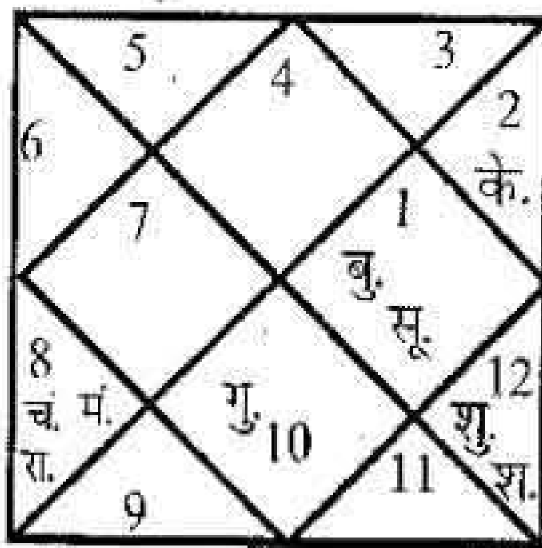
महाराजा हरिश्चंद्र





काल्पनिक कुण्डली। भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय चक्रवर्ती सम्राट सत्यवादी हरिश्चन्द्र सत्य के अवतार थे।

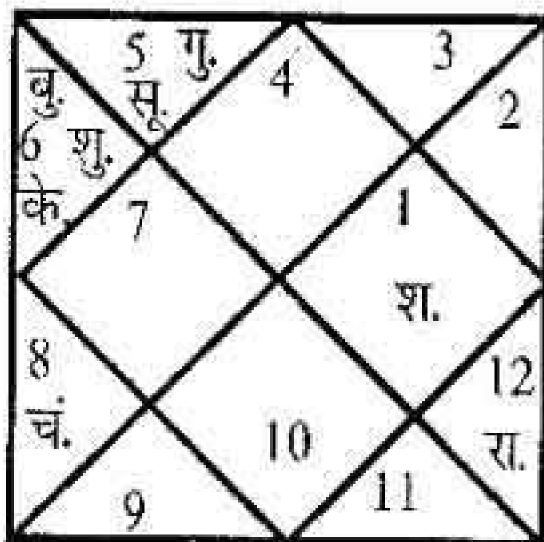
सद्दाम हुसैन





जन्म-28 जुलाई, 1937, समय 12.00 बजे, स्थान-बगदाद। ईराक के तानाशाह राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन की कभी तुती बजती थी, इन दिनों ईराक में ही कैदी बनकर, मौत का इन्तजार कर रहे हैं।

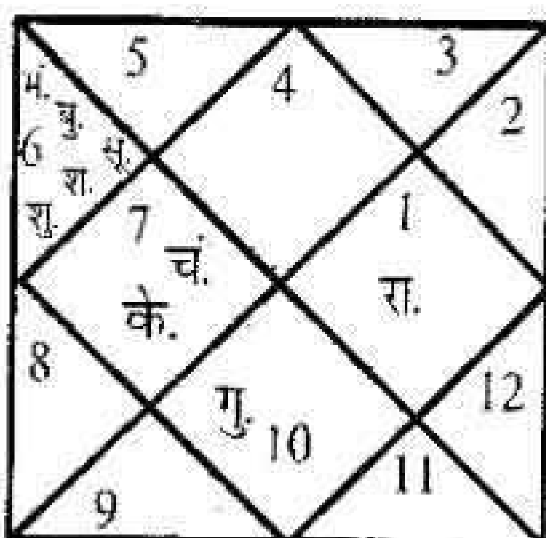
श्री जवागल श्रीनाथ





जन्म-19 अगस्त, 1946, समय-5.00, जन्म स्थल-अर्कान्सस (यू.एस.ए.)।

चंगेज खान

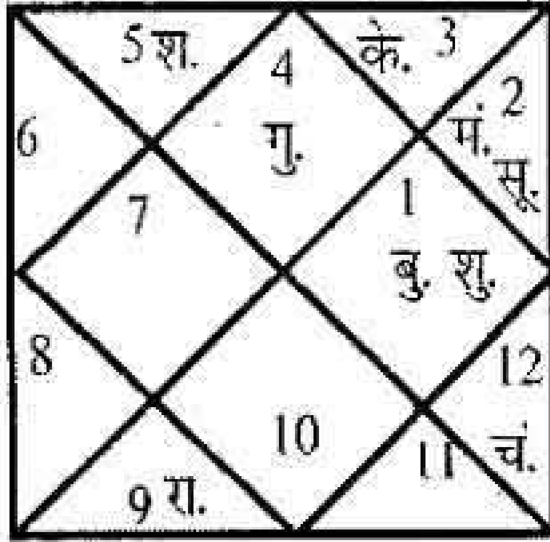




16.9.1186, समय-22.00, स्थान-चीन, दुर्दान्त आतंकवादी व लुटेरा चंगेज खां ने छापामार युद्ध के जरिए भारत में लूटमार एवं तबाही मचाई थी।

राजपुरुष, राजनेता

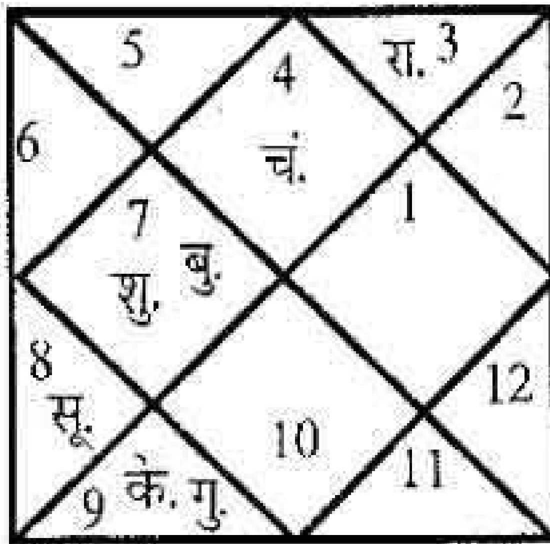
श्री मोतीलाल नेहरू





6 मई, 1861, समय-11.00, स्थान-आगरा। पेशेवर हाईकोर्ट वकील एवं पं. जवाहर लाल नेहरु के पिता एवं स्व. मोतीलाल नेहरु अपने जमाने के सबसे तेज वकील, राजनीतिज्ञ एवं धनी व प्रतिष्ठित व्यक्तियों में अग्रगण्य थे।

श्री जवाहरलाल नेहरू





जन्म 14 नवम्बर 1917, समय-11.14 बजे, जन्म स्थल-इलाहाबाद। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु कांग्रेस के पुरोधा रहे। प्रखर वक्ता, कुशल राजनीतिज्ञ एवं पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित पं. नेहरु भारतीय राजनीति में अमिट हस्ताक्षर रहे।

श्री एम. करुणानिधि

5 रा. | 4 | शु. 3 | 2 सू. चं.
6 | 7 श. | 1 बु. | 12
8 गु. | मं. 10 | 9 | 11 के.



3.6.1924, समय 9.30 बजे, स्थान-त्रिकुलवाई। द्रविड मुन्नेत्र कडगम के अध्यक्ष, पूर्व केन्दीय मंत्री तमिलनाडू राज्य के प्रमुख राजनीतिज्ञ हैं।

सरदार वल्लभ भाई पटेल

5 | 4 | 3 | 2 चं.
6 के. | 7 सू. बु. शु. गु. | 1 | 12 रा.
8 | श. मं. 10 | 9 | 11



ज़न्म 30 अक्टूर 1875, समय-12.00 बजे, स्थान-नडियाद (गुज.)। लौहपुरुष के नाम से विख्यात सरदार पटेल स्वतंत्र भारत के प्रथम गृहमंत्री थे। उपप्रधानमंत्री एवं ख्यातिप्राप्त बैरिस्टर थे।

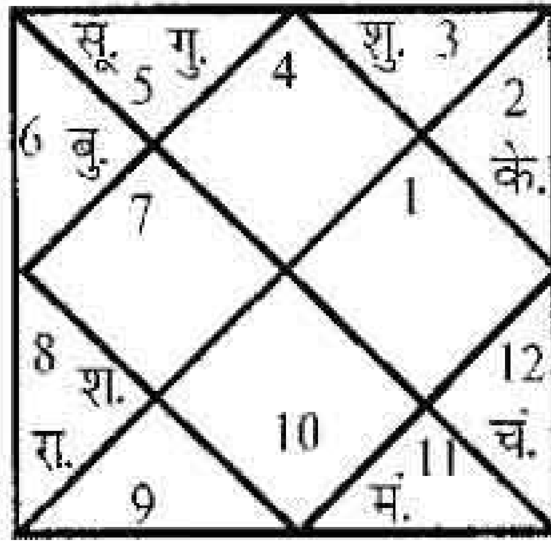
एच. डी. देवगौड़ा

मं. 5 बु. के. | 4 | 3 | 2 शु. सू.
6 | 7 | 1 गु. | 12
8 | श. 10 | 9 | 11 चं. रा.



जन्म 18.5.1933, समय-11.00 बजे, जन्म स्थल-हसन। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री।

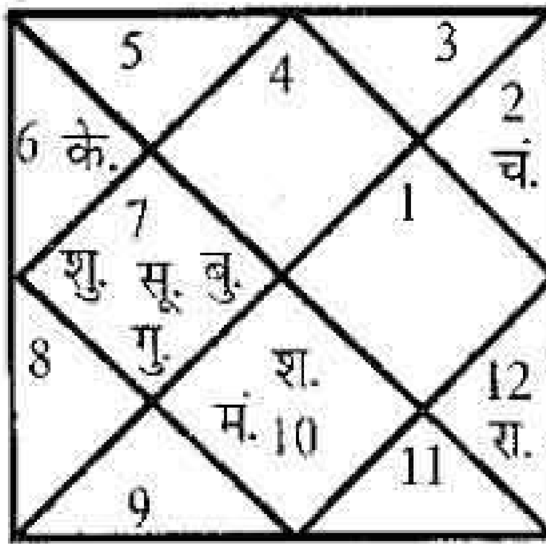
श्रीमति मेनका गांधी





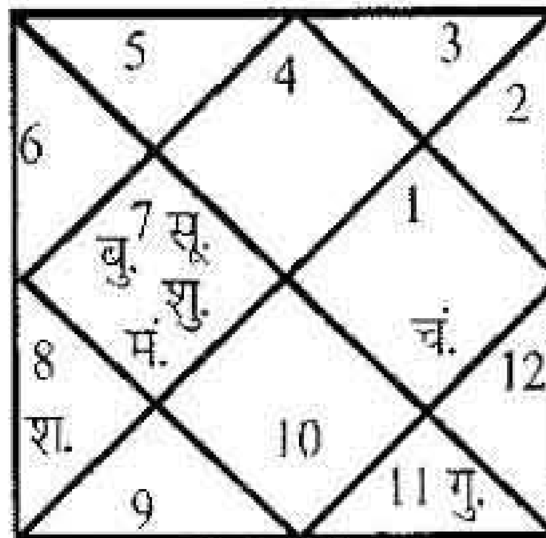
जन्म 26 अगस्त 1956, समय-5.00 बजे, जन्म स्थल-दिल्ली। स्व. संजयगांधी की धर्मपत्नी नेहरु घराने की बहू मैनका गांधी कुशल राजनीतिज्ञ समाज सुधारक, पर्यावरण प्रेमी एवं कई बार केन्द्रीय मंत्री रह चुकी हैं।

महाराजा रणजीत सिंह





श्री प्रिन्स चार्ल्स





जन्म-14 नवम्बर, 1948, समय-21.15, जन्म स्थल-लन्दन।

जयप्रकाश नारायण

5 मं. 4 3 2
6 सू.
शु. 7
रा.
बु.
1
के.
8
चं.
गु. 10
12
11
9 श.



जन्म-12.10.1902, समय-0.40 स्थान-सीतामढ़ी (बिहार) भारत में युवा क्रान्ति के अग्रदूत नेता श्री जयप्रकाश नारायण के आवाहन से केन्द्रीय सत्ता 1977 में बदल गई। इनकी मृत्यु 8 अक्टूबर 1979 में हुई। इनके नेतृत्व में जनता पार्टी बनी।

राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम

5 4 3 2
बु.
6 के.
सू.
गु.
1
7 शु.
मं.
8
चं.
10
12
रा.
11
9 श.



भारत के राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम एक प्रखर वैज्ञानिक, शक्ति पुरुष के नाम से विख्यात, विज्ञान के प्रोफेसर रह चुके हैं व कंवारे हैं।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह

5 मं. 4 बु. 3
सू. 2
6 के.
गु.
1
शु.
7
चं.
8
12
10
रा.
11
9 श.



जन्म-25.6.1931, समय-7.31, स्थान-इलाहाबाद, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री, मण्डल-कमण्डल की राजनीति के कारण चर्चित रहे।

श्री इंद्रकुमार गुजराल

5 श. 4 3
6 मं. गु. 2 के.
7 शु. 1 चं.
8 सू. रा. बु. 10 12
9 11



जन्म 4 दिसम्बर 1919, समय-22.00, स्थान-झेलम। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री।

कमलापति त्रिपाठी

सू. 5 बु. रा. 4 3
6 शु. 2 गु.
7 1
चं. 8 मं. 12
9 10 11 के. श.

जन्म-4.9.1905, समय-3.00, स्थान-औरंगाबाद। कांग्रेस (आई) के वरिष्ठ नेता, मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश। श्री कमलापति त्रिपाठी का व्यक्तित्व गजब का था। वे चुम्बकीय व्यक्तित्व के धनी थे।

जार्ज डब्ल्यू बुश

5 मं. 4 सू. 3
6 गु. चं. बु. शु. श. 2 रा.
7 1
8 के. 12
9 10 11



जन्म-6.7.1946, समय-7.26, स्थान-न्यू हैवेन। जार्ज डब्ल्यू बुश अमेरिका के राष्ट्रपति होने के साथ विश्व के सर्वाधिक धनी व शक्तिशाली व्यक्तियों में एक हैं। पर कालसर्पयोग के कारण सदैव चिन्ताग्रस्त एवं उनकी संतति इतनी योग्य नहीं होगी।

वसुधरा राजे सिंधिया

5 4 3 2
6 के. 1
7 शु. गु.
श.
8 रा. 12
10 बु.
9 चं. सू. 11 मं.



जन्म-8.5.1953, समय-13.00, स्थान-मुम्बई। राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमति वसुन्धराजे की कुण्डली में चारों केन्द्र भरे हुए **'आसमुद्रात् नामक'** राजयोग बना रहे हैं। **'शशयोग'** ने उन्हें मुख्यमंत्री बनाया। सप्तम भाव के राहु ने पति सुख छीना।

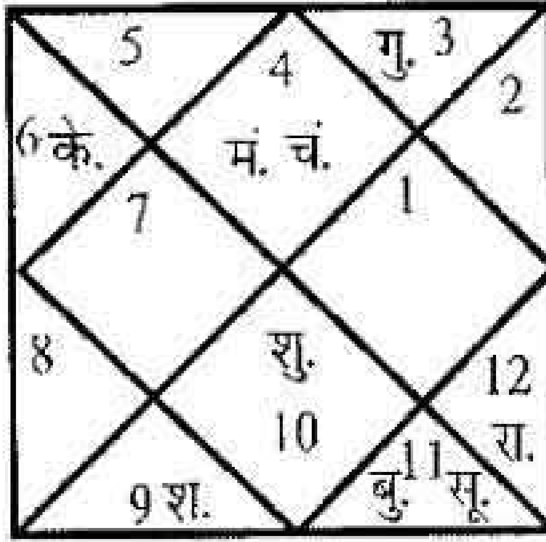
नेलसन मंडेला

5 4 गु. 3 2
6 मं. श. सू. बु. शु.
7 1 के.
चं.
8 12
रा. 10
9 11



जन्म-18.7.1918, समय-9.00, स्थान-दक्षिण अफ्रीका। नेलसन मण्डेला विश्व राजनीति में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। शान्ति के अग्रदूत मण्डेला की कीर्ति अक्षुण्ण है परन्तु पंचम भाव स्थित राहु व कालसर्पयोग के कारण उनकी संतति योग्य नहीं होगी।

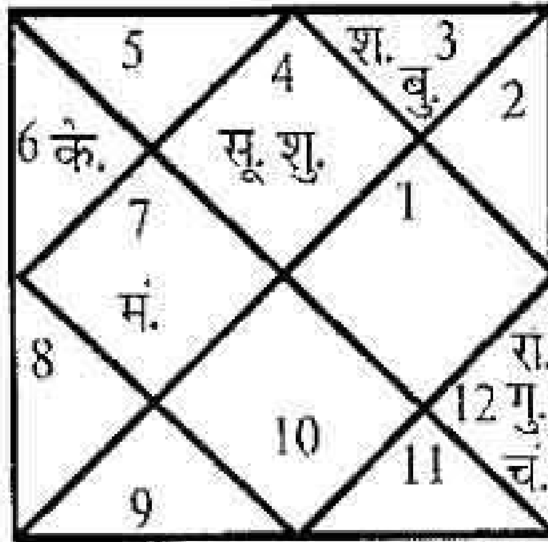
मिखाइल गोर्बाचोव





जन्म-2.3.1931, समय-13.45, स्थान-स्तावरोपोल। रुस के पूर्व राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाचोव विनम्र एवं सरल हृदय के व्यक्ति थे। इन्होंने भारत के साथ कूटनीतिज्ञ एवं मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किये।

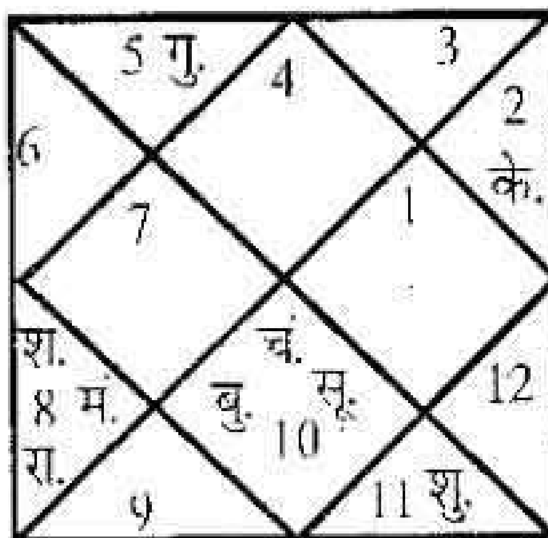
लोकमान्य तिलक





जन्म-23.07.1856, समय-6.25, स्थान-चिखली। वरिष्ठ कांग्रेसी नेता। लोकमान्य तिलक ज्योतिष एवं धर्मशास्त्र के प्रखर ज्ञाता थे। भारत की आजादी में उन्होंने उग्रवादी कांग्रेस दल का समर्थन देकर महत्वपूर्ण भूमिका अर्जित की थी।

मायावती





जन्म-15.10.1956, समय-19.50, स्थान-दौलतपुर। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती के संतान भाव एवं सप्तम भाव दोनों ही बिगडे हुए हैं।

मोहन छंगाणी

1	मं.
2	
3	रा.
4	
5	
6	
7	सू. शु. चं.
8	श. बु.
9	के.
10	गु.
11	
12	

पूर्व मंत्री-राजस्थान, जन्म 4 नवम्बर 1926, समय-23.00 बजे। पूर्व शिक्षामंत्री राजस्थान जोधपुर जिले के फलौदी गांव में प्रमुख कांग्रेसी नेता।

जनरल अयूब खां (पाकिस्तान)



1	गु.
2	
3	चं. के.
4	श.
5	
6	
7	
8	
9	बु. रा.
10	सू. शु. मं.
11	
12	

जन्म 25 जून 1931, समय-7.31 बजे सायं, जन्म स्थल-इलाहाबाद। पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल अयूब खां तानाशाह नेताओं में अग्रगण्य माने जाते थे।

नजमा हेपतुल्ला



1	श. सू.
2	मं. शु.
3	चं.
4	
5	
6	रा.
7	
8	
9	
10	
11	
12	के. बु. गु.

जन्म 13.4.1940, समय-12.30 बजे, जन्म स्थल-मुम्बई।

श्री अनिल राधाकृष्णाजी कुम्बले

5 के. 4 3 2
सू. 6 मं. बु.
7 गु.
1 चं. श.
8 शु.
12
9 10 11 रा.



श्री बिल क्लिटंन

5 सू. 4 3 2
शु. 6 मं.
बु. श.
रा.
7 गु.
1 चं.
8 के.
12
10
9 11



जन्म-19.8.1946, समय-5.00, जन्म स्थान-अर्कनसास। अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिटंन विश्व के शक्तिशाली व धनाढ्य पुरुषों में अग्रगण्य है।

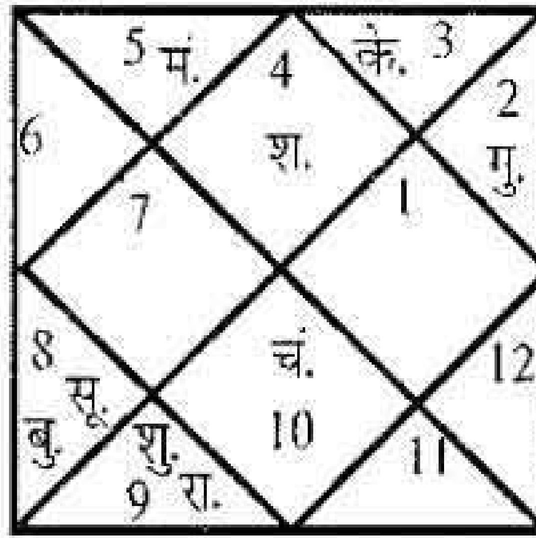
अभिनेता राजकपूर

5 4 3 2
6
रा. चं.
7 1
शु. श.
8 सू.
के. 10
12 मं.
बु. 9 गु.
11



फिल्मस्टार, जन्म-14 दिसम्बर, 1924, समय-22.00।

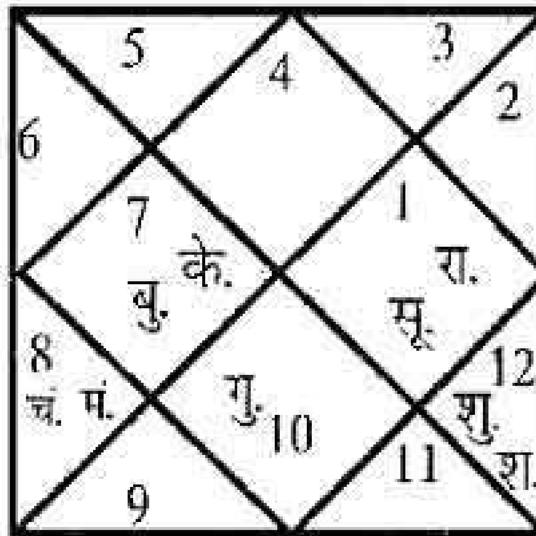
श्रीमति इंदिरा गांधी





जन्म-19.11.1917, समय-11.14 बजे रात्रि, स्थान-इलाहाबाद। भारत की सर्वाधिक लोकप्रिय प्रथम महिला प्रधानमंत्री, श्रीमति इंदिरा गांधी का राजनैतिक जीवन बहुत लम्बा रहा। इनका पुत्र भी प्रधानमंत्री रहा। इनके पति की मृत्यु 1960 में हुई। इनके खुद की मृत्यु 31 अक्टूबर 1984 में हुई।

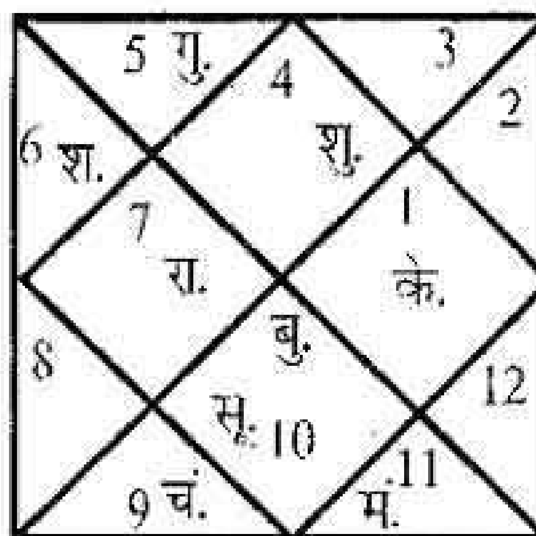
हेमामालिनी





जन्म-16 अक्टूबर, 1948, समय-12.30 रात्रि, जन्म स्थान-तिरुचिल्लापल्ली। अपने जमाने की डीम गर्ल, हेमामालिनी सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री रही तथा सुप्रसिद्ध अभिनेता श्री धर्मेन्द्र से विवाह किया। इनका पुत्र सन्नीदेवल की गिनती भी सुपर स्टार में होती है।

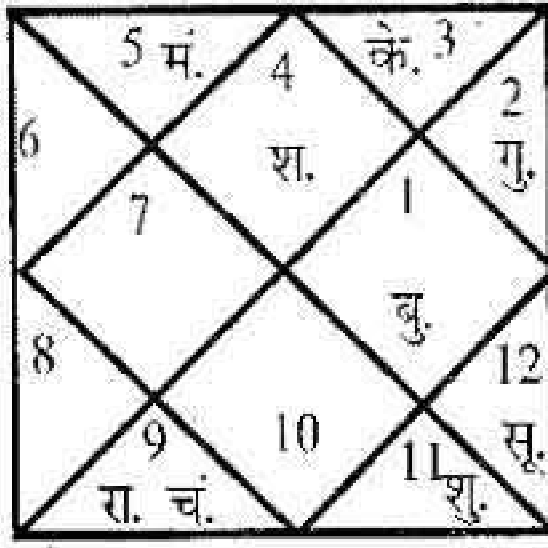
पूर्व राष्ट्रपति के. नारायणन्



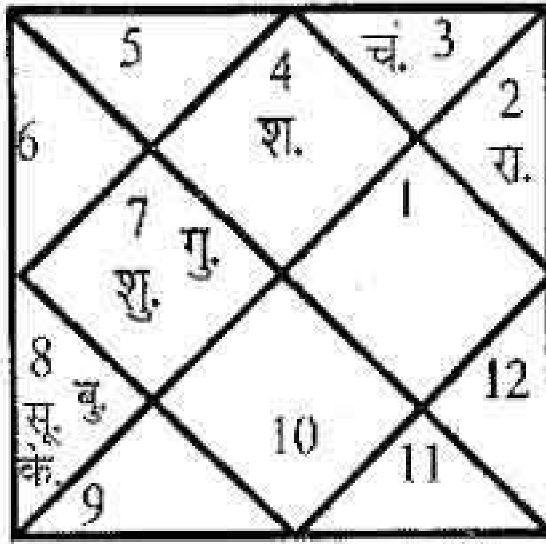


जन्म-4.12.1921, समय-13.00, स्थान-कोचीन।

अरविंद मुफ्तलाल



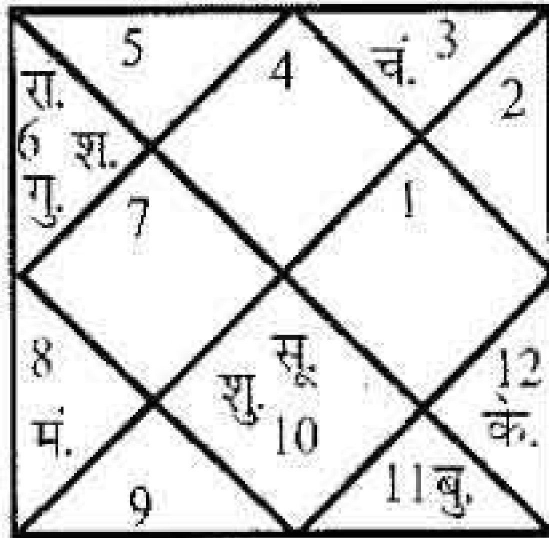
श्रीमति सोनिया गांधी





जन्म-9.12.1946, समय-21.30 बजे, स्थान-तुरीन। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी की धर्मपत्नी श्रीमति सोनियां गांधी कांग्रेस (आई) के अध्यक्ष पद पर आरुढ होकर सत्ता की सर्वोच्च कमान को हाथ में संभाले हुए, भारत को कुशल नेतृत्व दे रही हैं।

सी.पी. कृष्णनेयर



होटल उद्योगपति, जन्म 9 फरवरी 1922, समय 17.02

श्री वीरेन्द्र सहवाग

5 श.
4 गु.
3
6 रा.
2 चं.
1
7 बु. सू. शु. मं.
8
12 के.
10
9
11



श्री कुमार मंगल बिड़ला

5 चं.
4 गु. शु.
3 बु.
6 मं.
2 सू.
7 के.
1 रा.
8
12 श.
10
9
11



शीर्षस्थ उद्योगपति, जन्म-14 जून 1967, समय 8.45